इन्द्रधनुषी व्यक्तित्त्व
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

स्मारिका
[प्रथम पुण्य तिथि]

प्रकाशक
श्री अलिन्द कुमार
दयालु फार्मेसी, बीकानेर

इन्द्रधनुषी व्यक्तित्त्व
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

सम्पादन
ओम केवलिया, रामनरेश सोनी
योगेश सारस्वत

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

प्रकाश (पाशी) को

जिसकी अब याद ही रह गई

अनुक्रमणिका

अन्तर्वेदना		
तुम्हीं सो गयीं दास्तां कहते कहते	अलिन्द कुमार	1
ममता की मूर्ति मेरी अम्मी	संदीप कुमार अलिन्द	3
इन्द्रधनुषी व्यक्तित्त्व		5-62
मेरी छोटी बहन 'पाशी''	सत्यावती नैय्यर	5
कर्तव्यनिष्ठ व सतत जागरूक शिक्षिका	अक्षयचन्द्र शर्मा	8
एक आदर्श शिक्षिका एवं प्रशासिका	मूलचन्द पारीक	12
सुगृहिणी एवं समर्पित शिक्षिका	सत्यनारायण पारीक	15
बाल शिक्षण में पारंगत	रामनरेश सोनी	16
यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है	ओम केवलिया	20
यादों की परछाइयाँ	शिव कुमार शर्मा	23
माननीया भाभी.....	सोहनलाल वसन्त	24
उदात्त आदर्श की धनी	वैद्य रामप्रकाश स्वामी	27
एक सौम्य निश्छल व्यक्तित्त्व	वैद्य ठाकुर प्रसाद शर्मा	29
दीदी के नाम मंझली बहन की वेदना	विद्यावती कंधारी	31
स्वर्गीया पाशी को स्नेहादर श्रद्धांजलि	गजानन वर्मा	32
शब्दों में तो अब भी हो साकार	हरीश भादाणी	35
स्मृति शेष	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	38
बालमन की ज्ञाता	प्रो. अमीनुद्दीन	39
अक्षय प्रेरणा की स्रोत	डा. कालीचरण माथुर	42
कुछ अविस्मरणीय क्षण	वैद्य रामानन्द स्वामी	43
मेरी भाभी-माँ और गुरु	मलूचन्द सोनी	44
मेरी मुँह-बोली दीदी	सरोज मिश्रा	48
आदरणीय मैडम	उर्मिला तिवारी	49
मेरी मार्गदर्शिका	सोमलता गुप्ता	50
एक महान् आत्मा 'अम्मी जी'	योगेश सारस्वत	52
मेरी प्रिय प्रकाश मौसी (माँ-सी)	डॉ. मनीष तनेजा	55
वे ममता की प्रकाशपुंज थीं	यशपाल आचार्य	56
दिव्य विभूति	सम्पतलाल बोथरा	58

हमारी आदर्श शिक्षिका	डा. राकेश-मधु माथुर	59
मौसी-सास की मधुर स्मृति में	तृप्ता (पप्पी) .	60
मेरी मौसी-सास	रक्षा मिश्रा	61
ममत्व की देवी मेरी सासु माँ	श्रीमती स्वाति अलिन्द	62

काव्यांजलि		63-70
दीदी पाशी के नाम पाती	रमेश गुप्ता	63
श्रद्धांजलि-काव्यांजलि	गजानन वर्मा	64
श्रद्धांजलि-गीतांजलि	गजानन वर्मा	66
स्मृतियों के वातायन	हरीश भादाणी	68
मेरी दीदी पाशी	आशा तनेजा	70

बाल मनोभावों का समर्पण 71-74

विद्यालयी बालकों के स्नेहसिक्त विदाई कार्डो की प्रतिलिपियों के कुछ नमूने

संवदेना के स्वर 75-88

वैद्य रामगोपाल शास्त्री फाजिल्का (पंजाब), श्री जीवानन्दजी महाराज जयपुर, कविराज श्री ज्ञानकचन्द शर्मा नई दिल्ली, श्री चन्द्रदान चारण बीकानेर, श्री सुन्दरलाल तनेजा दिल्ली, आयुर्वेद चेतना मासिक बीकानेर, श्री गिरधरदास मूंधड़ा बाल भारती आदि-आदि

अन्तःयात्रा (गद्य)		89-104
बच्चों में पढाई लिखाई के प्रति	श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द	89
बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों का शिक्षण	श्रीमती प्रकाशवती अलिंद	90
बच्चों से बातचीत का विज्ञान	श्रीमती प्रकाशवती अलिंद	97
बच्चों को कहालिनयाँ किस आयु में	श्रीमती प्रकाशवती अलिंद	102

अन्तःयात्रा (पद्य)		105-112
कुछ अपने कुछ पराये	श्रीमती प्रकाशवती अलिंद	105

•••

विनम्र आभार

मेरी पत्नी के आकस्मिक देहावसान की अंतरपीड़ा को सहन करने में जिन विशिष्ट व्यक्तियों ने दूर प्रदेशों से स्वयं आकर या पत्रों द्वारा मुझे जो सांत्वना व सम्बल प्रदान किया, उनकी सहानुभूति के प्रति मैं शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करने में अपने आपको असमर्थ पाता हूँ, फिर भी शब्दों का ही आश्रय है, अतः हार्दिक आभार।

उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए अनेक हितैषियों, विद्वान साहित्यकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का विशेष आग्रह था। इस संबंध में स्मारिका प्रकाशित करने हेतु मूर्धन्य विद्वान श्री अक्षयचन्द्र शर्मा एवं कवि-गीतकार श्री गजानन वर्मा ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

स्मारिका हेतु प्राप्त सामग्री को संजोने तथा संपादकीय कौशल से अंतिम रुप देने में विद्वान साहित्यकार सर्वश्री ओमजी केवलिया, रामनरेशजी सोनी तथा योगेशजी सारस्वत की जो रचनात्मक भूमिका रही है, उसके लिए आभार।

इन सुहृदजनों के प्रति मैं विनम्र कृतज्ञता प्रकट करता हूं। साथ ही उन महानुभावों के प्रति भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने "पाशी" के प्रति अपने हृद्योद्गार लिपिबद्ध कर के भेजे।

अलिन्द कुमार

सम्पादकीय

इस विशाल मानव-मंदाकिनी में कुछ तारक दल न जाने कहाँ से कहाँ निकल जाते हैं और अपनी प्रखर चमक से सम्पूर्ण यात्रा पथ को आलोकित करते हुए लोकांतरों तक अपनी बहुरंगी किरणें विकीर्ण करते हैं। ऐसा ही एक जाज्वल्यमान सितारा थीं आदरणीया प्रकाशवती अलिन्द जो बलोचिस्तान की सुरम्य घाटी से चलकर बीकानेर अंचल की रेतीली माटी में अपने जीवन व्यक्तित्त्व की अर्थवत्ता तलाशने आई। लगभग पचास वर्षो के दाम्पत्य-जीवन में यहाँ रहते हुए उन्होंने अपने दिव्य मानवीय गुणों की महक से अग-जग को सुवासित किया और आरती के दीप की पावन लौ की भाँति सदा-सदा के लिए अनन्त में विलीन हो गई। उनके प्रति अपनी विनीत श्रद्धांजलि प्रकट करने के लिए परिजनों, हितैषियों नगर के गणमान्य नागरिकों तथा इष्ट मित्रों की शुभांकाक्षां थी कि एक स्मारिका प्रकाशित की जाए।

प्रकाशवतीजी के व्यक्तित्त्व के अनेक चमकदार पहलू थे। हर पहलू इन्द्रधनुषी आभा से ओत प्रोत। कुशल गृहिणी, जीवन सहचरी तथा कार्येषु मंत्री के रुप में जहाँ उन्होंने अलिंद परिवार को गरिमामय बनाया, वहीं एक स्नेहमयी, अध्ययनशील और प्रशासन-दक्ष प्रधानाध्यापिका के रुप में कई-कई पीढ़ियों को संस्कारित करके सामाजिक-सेवा का दायित्व पूरा किया। वे साहित्य संगीत-कला प्रेमी थीं, मनोविज्ञान की ज्ञाता तथा प्रतिपल बालक बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित अध्यापिका थीं। विद्यालय में उनकी उपस्थिति न सिर्फ बालकों अपितु साथी अध्यापक-अध्यापिकाओं के लिए भी उत्साहवर्द्धक व शैक्षिक महत्त्व की थी। बच्चे तो उनके इर्द-गिर्द मंडराते ही रहते थे, माता-पिता भी उनके आत्मीय वाणी व्यवहार से गद्‌गद् थे।

लगभग तीस वर्षो तक प्रकाशवतीजी ने राजस्थान बाल भारती में संस्था-प्रधान के रुप में जो सेवायें दी, बच्चों को आनंददायी रीति से पढ़ाने की

जो रोचक विधियाँ प्रयुक्त कीं, वे तत्कालीन साथी अध्यापकों की स्मृति में तो हैं ही, उन बालक-बालिकाओं के दिल-दिमाग में भी तरोताजा हैं, जो आज पिता-माता बन कर अपनी संततियों के लालन-पालन में संलग्न है।

प्रकाशवतीजी शिक्षाकर्मी थीं-उन्होंने बालकों को पढ़ाने हेतु किन-किन विधियों और सिद्धातों को व्यवहार में लाया जाए, इन विषयों पर कई महत्त्वपूर्ण लेख लिखे थे। इस ग्रंथ में अंतःयात्रा खंड में कुछ रचनाऐं विशेष रुप से प्रकाशित की गई हैं, साथ ही कुछ कविताएँ भी हैं, जो उनकी जीवन-यात्रा में पाथेय स्वरुप रही हैं।

प्रकाशवतीजी के व्यक्तित्त्व से प्रभावित अनेक विद्वानों ने उनके देहावसान पर उनकी स्मृति में आलेख लिखकर भेजे थे, कुछ वरिष्ठ कवियों ने कविताएं लिखकर काव्यॉजलि प्रस्तुत की थी, संवेदना के अनेक पत्र आए थे-उनमें से लगभग सभी को भीतर के पृष्ठों में स्थान दिया गया है। स्मारिका के आयोजन की प्रेरणा श्रद्धेय पं. अक्षयचन्द्रजी शर्मा से मिली, जो अनेक विद्वानों की सहमति से क्रमशः पुष्ट होती गई और आज क्रियान्वित होकर यह आपके हाथों में आ रही हैं।

❑

अन्तर्वेदना

जब ऐसा साथी सदा के लिए आँखें बन्द कर लेता है, तब दूसरे के लिये यह संसार अंधकारमय हो जाता है..............

❑

मैं अपने ही हाथों अपनी स्नेहमयी माँ के पार्थिव शरीर को अग्नि की लपटों में समर्पित कर रहा था......यह कितना असह्य और क्रूरतापूर्ण कार्य था...........

मेरी संगिनी पाशी तुमहीं सो गयी दास्तां कहते-कहते

अलिन्द कुमार

हमारे देश के इतिहास में वैसाख पूर्णिमा पवित्र दिन माना जाता है। इसी दिन महात्मा बुद्ध में दिव्य ज्ञान के प्रकाश की ज्योति प्रस्फुटित हुई थी और विश्व में बुद्ध के ज्ञान का प्रकाश फैल गया था, किन्तु आज इस पवित्र दिन की उषा वेला में हमारे घर में प्रकाश की ज्योति अनन्त में समा गई और हमारे घर में घोर अंधकार छा गया। हम असहाय देखते रहे और वह हमसे बातें करते-करते अनन्त यात्रा को चल दी। हम कुछ भी नहीं कर सके। महज हताश, शून्यवत देखते रह गये। कभी कल्पना नहीं थी कि ऐसी अप्रत्याशित घटना घटेगी।

आज उनके चले जाने के बाद, विगत अर्द्धशताब्दी की घटनाएँ चल चित्र की भाँति उभर कर सामने आ रही हैं। उन घटनाओं में से मैं-

क्या भूलूं क्या याद करूँ
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
स्मृतियों के बन्धन से कैसे,
अपने को आजाद करुं मैं।

(बच्चन)

प्रकाश मेरी पत्नी थी, जीवन सहचरी थी, सहधर्मिणी थी, सहयोगिनी थी, अर्द्धांगिनी थी, लेकिन सही अर्थो में सर्वांगिणी थी।

विवाह से पहले मेरे मन में एक सुदर्शन नारी की कल्पना थी, जो प्यार देने वाली हो, जिसकी आँखों में मेरा इन्तजार हो, मेरे काम में सहायक हो, और मैं बड़ा भाग्यशाली रहा कि मेरी पत्नी में ये सब विशेषताएँ थीं। वे मेरे अपने ही तन-मन का एक हिस्सा लगती थीं।

इतने लम्बे अंतराल में कभी महसूस नहीं हुआ कि उन से शब्दों के माध्यम से प्रेम प्रकट करना चाहिये। मैंने कभी लम्बे-चौड़े प्रेम-पत्र भी नहीं लिखे। शब्द एक माध्यम अवश्य है, जिसका बड़ा महत्व है। कभी शब्द जरुरी होते हैं, पर मैंने उन्हें इस्तेमाल नहीं किया। कभी

लगता है उन मादक क्षणों में शब्दों का अहसास चाहा है तो शब्द कहे..........पर बहुत कम। मैं समझता हूँ बोलने की ताकत कम होती है, न बोलने की अधिक, वैसे शब्दों के प्रयोग में मैं संकोची रहा हूँ। मेरा चेहरा, मेरी आँखें, मेरा स्पर्श ही काफी रहा है। पत्नी का पास रहना ही जीवन में सुगंध और मधुरिमा है।

उन्होंने शस्यश्यामला भूमि से, इस बंजर भूमि में आकर हमारे घर को हरित भूमि में परिवर्तित कर दिया। घर में कई प्रकार के अभाव थे पर उनके बारे में उन्होंने कभी शिकवा-शिकायत नहीं की। जिस स्थिति में मैं आज अपने को पा रहा हूँ, उसका श्रेय उन्हीं को है। वे निश्छल, सुसंस्कृत, भावुक, उदार, सहृदय, कला तथा स्वच्छता और अनुशासन-प्रिय थीं। उन्हें पुष्पों और हरियाली से बेहद प्यार था।

उन्होंने कठिन से कठिन और विषम परिस्थितियों में भी साहस एवं विवेक से निष्ठापूर्वक मेरा साथ निभाया। जब ऐसा साथी सदा के लिए आँखें बन्द कर लेता है, तब दूसरे के लिये यह संसार अंधकार मय हो जाता है। उसे अपने मन की बात कहने के लिये उसकी तलाश में जो वेदना भोगनी पड़ती है, उसे वह स्वयं ही अनुभव कर सकता है। वह अपनी व्यथा को कह नहीं सकता केवल सहना ही पड़ता है बच्चनजी के अनुसार मेरे-

जीवन में शेष विषाद रहा
कुछ टूटे सपनों की बस्ती
मिटने वाली यह भी हस्ती............

पर मेरी जीवन-सहचरी को ऐसी विषादमय और हताशा की बातें जीवन में कभी नहीं रुची इसलियेअब बस इतना ही।

दयालु फार्मेसी
बीकानेर

❑

ममता की मूर्ति मेरी अम्मी

संदीप कुमार अलिन्द
B.SC,BA.M.S,ND

क्रूर नियति ने 22.5.97 के दिन अकस्मात् ममतामयी माँ को सदा-सदा के लिए मुझ से छीन लिया, इस आघात को सहन करना मेरे लिए असहनीय था। इससे भी अधिक आघात तब लग रहा था जब मैं अपने ही हाथों अपनी स्नेहमयी माँ के पार्थिव शरीर को अग्नि की लपटों में समर्पित कर रहा था। यह वही देह थी जिस की गोद में मैं पला-बड़ा हुआ, जिन हाथों ने दुलार दिया, लोरियाँ सुनाई। यह कितना असह्य और क्रूरतापूर्ण कार्य था। इस कर्त्तव्य से मेरा हृदय फटा जा रहा था।

आज मुझे सवेरा, सांझ और रातें सूनी-सूनी लगती हैं। माँ अनन्त यात्रा को चली गई। माँ ने तो फर्ज़ मेरे प्रति ही नहीं उन सब के प्रति भी निभाया जो उनके सम्पर्क में आये। मैं उनके उपकारों, सेवाओं और कर्तव्यनिष्ठा को नहीं भुला पाऊंगा। मेरी अम्मी ने जिस प्यार, दुलार और वात्सल्यभाव से मेरा पालन-पोषण किया वह मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। बाल्यावस्था से लेकर पढ़ाई-लिखाई तथा चिकित्सक के रुप में अपने पैरों पर खड़ा करने में उनका पूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने मेरे लिए कभी किसी बात का अभाव नहीं होने दिया। मेरे घर लौटने में देरी हो जाने पर वह बहुत चिंतित हो जाती थीं, बहुत परेशान होती थी, मेरे घर पहुँचने पर ही उन्हें सांत्त्वना मिलती थी। मेरे प्रति उनका यह स्नेहपूर्ण हितचिंतन ही तो था। परीक्षा के दिनों में वह मेरे साथ जागती रहती थी। उन्हीं के श्रम का फल है कि मैं पी.ए.टी. में प्रथम आया। इस परीक्षा को दिलाने सरदारशहर वह मेरे साथ गई थी। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में प्रवेश दिलाने हेतु भी वह मेरे साथ जयपुर

गई। वहाँ मेरे आवास के लिए सर्वोत्तम स्थान की सुव्यवस्था करके आई। जयपुर पढ़ाई के दौरान भी वे स्वयं समय-समय पर आती और दिशा-निर्देश दे जाती थी। मैं कहीं भटक न जाऊं इस बात का वे ध्यान रखती थी। उन्हीं के दिशा-निर्देश के फल स्वरुप मैंने बी.ए.एम.एस.प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

माँ अपने साथ सुयश के अतिरिक्त कुछ भी लेकर नहीं गई, सब कुछ अपने-परायों में मुक्तहस्त से बॉट गई। मेरे जीवन के उत्कर्ष में जो दायित्व मेरी माँ ने निभाया उसका प्रतिफल जितना देना चाहिए था मैं दे नहीं पाया। जितनी सेवा मुझे करनी चाहिए थी वह मैं नहीं कर सका, यह कमी मेरे पूरे जीवन में शूल की भाँति चुभती रहेगी। मैं अपनी ममतामयी माँ को कभी भी किसी भी अवस्था में भुला नहीं पाऊँगा।

माँ अन्तर वेदना के साथ तुम्हारे चरणों में प्रणाम।

दयालु फार्मेसी
(डी.पी. वर्क्स) बीकानेर

इन्द्र
धनुषी
व्यक्तित्त्व

प्रकाशवतीजी के व्यक्तित्त्व के अनेक चमकदार पहलू थे। हर पहलू इन्द्रधनुषी आभा से ओत-प्रोत कुशल गृहिणी, जीवन सहचरी तथा कार्येषु मंत्री के रूप में जहाँ उन्होंने अलिंद परिवार को गरिमामय बनाया, वहीं एक स्नेहमयी, अध्ययनशील और प्रशासनदक्ष प्रधानाध्यापिका के रूप में कई-कई पीढ़ियों को संस्कारित करके सामाजिक-सेवा का दायित्त्व पूरा किया.........
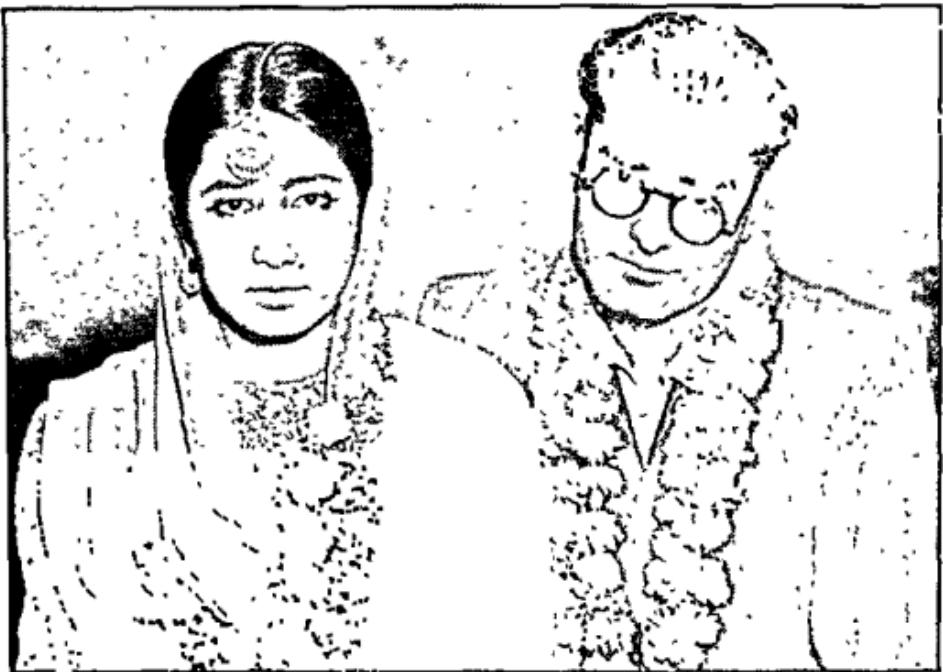
23 मार्च, 1948 को विवाहोपरान्त बीकानेर लौटने पर प्रख्यात छविकार स्व. कुजीलालजी गहलोत द्वारा खींचा गया श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द और अलिन्द कुमार जी का युगल चित्र

सन् 1950 मे आयुर्वेदाचार्य श्री अलिन्द कुमार जी के पास उनकी जीवन सगिनी श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द
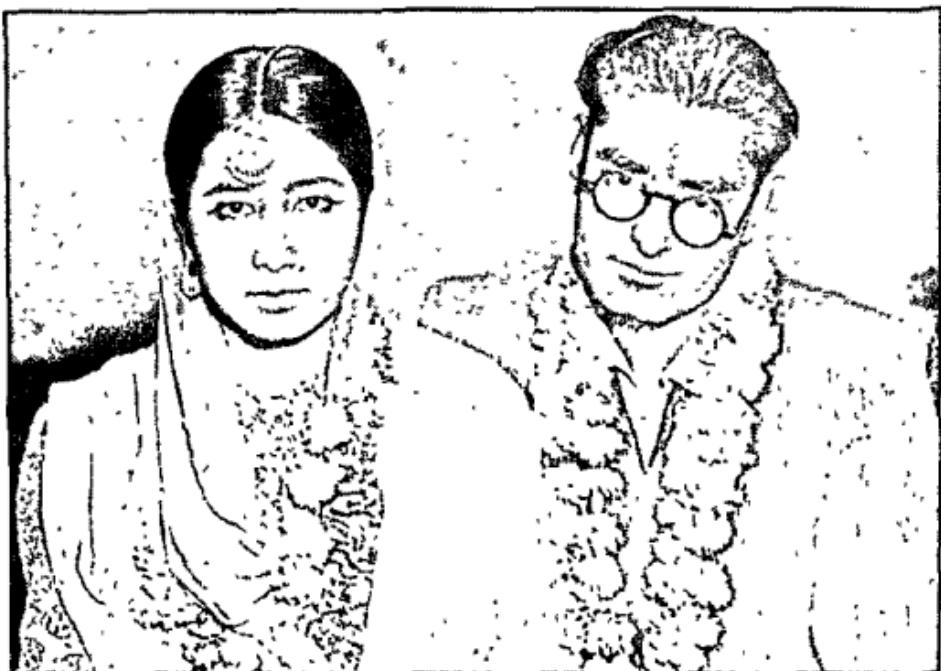
23 मार्च, 1948 को विवाहोपरान्त बीकानेर लौटने पर प्रख्यात छविकार स्व कुजीलालजी गहलोत द्वारा खीचा गया श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द और अलिन्द कुमार जी का युगल चित्र
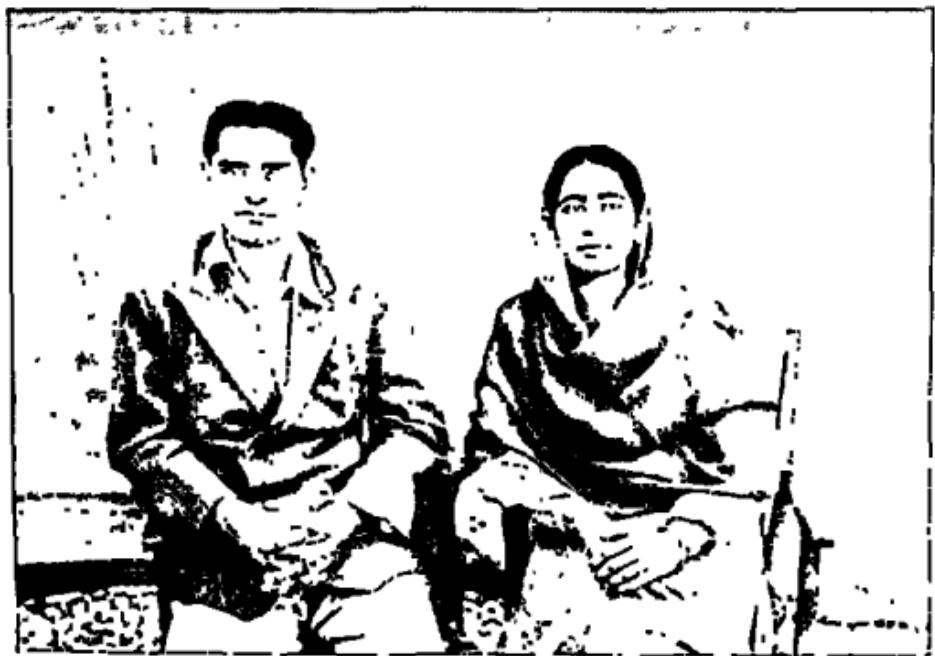
सन् 1950 में आयुर्वेदाचार्य श्री अलिन्द कुमार जी के पास उनकी जीवन सगिनी श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द
विविध मुद्राएं

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द का पीहर परिवार

पिताश्री डॉ. सालीगराम

माता श्रीमती सरस्वती देवी
(लाजवन्ती)

वड़ी वहन
श्रीमती सत्यवती नय्यर

छोटा भाई
श्री रमेश गुप्ता

मझली वहन
श्रीमती विद्या कन्धारी

छोटी वहन
श्रीमती आशारानी तनेजा

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द
विविध मुद्राएं

पिताश्री डॉ सालीगराम

माता श्रीमती सरस्वती देवी
(लाजवन्ती)

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द का पीहर परिवार

बड़ी बहन
श्रीमती सत्यवती नय्यर

छोटा भाई
श्री रमेश गुप्ता

मझली बहन
श्रीमती विद्या कन्धारी

छोटी बहन
श्रीमती आशारानी तनेजा

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द की
सायुजी श्रीमती ममता

पति श्री अलिन्द कुमार एव पुत्र
श्री संदीप के साथ श्रीमती
प्रकाशवती अलिन्द

अपने पुत्र संदीप के साथ
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द अपने पुत्र संदीप के विवाह के अवसर पर तिलक लगाते हुवे

पुत्र वधू स्वाति को विवाहोपरान्त मुंह मीठा कराने की रस्म अदा करते हुए
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द की
सासुजी श्रीमती ममता

पति श्री अलिन्द कुमार एव पुत्र
श्री संदीप के साथ श्रीमती
प्रकाशवती अलिन्द

अपने पुत्र संदीप के साथ
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

अपनी अन्तरग सहेली डोरथी के सग क्वेटा मे "पाशी"

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द अपने पुत्र संदीप के विवाह के अवसर पर तिलक लगाते हुवे

पुत्र वधू ख्याति को विवाहोपरान्त मुंह मीठा कराने की रस्म अदा करते हुए
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

पुत्र एवं पुत्र वधू के साथ श्री एवं श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

श्रीमती व श्री अलिन्द कुमार अपनी सुपौत्री जसलीन (गुड्डा) के साथ

मेरी छोटी बहन 'पाशी'

सत्यावती नैयर

मधुर स्मृति
वाल-शिक्षण के क्षेत्र में दैदीप्यमान सितारा, आगामी पीढ़ियों के लिए प्रकाशस्तम्भ :
प्रकाशवती (पाशी) अलिंद
पुण्य तिथि 22 मई, 1997

जहां था न जाना, वहां ले गया,
मुकद्दर कहां से कहां ले गया,
कभी आ न पाएगा वह लौट कर,
मुहब्बत का जो कारवां ले गया।
लो फिर याद आई
चाहती हूं भूल जाऊं, लेकिन भूलूं कैसे?
जो नक्श दिल पे जम गये, उनको मिटाऊं कैसे?

यह जानते हुए भी कि संसार नश्वर है, जो प्राणी संसार में आता है वह एक-न-एक दिन चला जाता है, फिर भी कुदरत ने मोहजाल का एक ऐसा उलझा हुआ ताना-वाना बुना है, जिसको सुलझा पाना, या मोहजाल को तोड़ पाना कठिन ही नहीं असम्भव भी है। पाशी, मेरी छोटी बहन थी। उनका लगाव मुझसे कुछ अधिक ही था। कारण, शेष बहिन-भाई हम से बहुत छोटे थे। हम दोनों बहनें यौवनावस्था तक इकट्ठी रहीं। इकट्ठे खाना, इकट्ठे सोना, इकट्ठे खेलना, इकट्ठे स्कूल जाना आदि। हमारा जन्म पंजाब प्रान्त के एक छोटे-से कस्बे में, जो अब घनी आबादी वाला जिला बन गया है, मुक्तसर में हुआ। पापा डॉक्टर थे, आस-पास के इलाके में काफी मान-सम्मान। आर्य समाजी विचारधारा के। मुक्तसर में म्यूनिसिपल बोर्ड का आठवीं कक्षा तक स्कूल था। मुझे उच्च शिक्षा हेतु जब बाहर होस्टल में रखा गया तो लोगों ने कहा बेटियों की कमाई खाएंगे। इस बात से वह विचलित नहीं हुए। लडकियों को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्ष में थे, हंस कर जवाब दिया, आप लोग बेटों की कमाई नहीं खा सकते। मैं कितना भाग्यशाली हूं कि मेरी वेटियाँ इतनी योग्य हैं।

सन् 1940 में पापा सपरिवार क्वेटा (बलोचिस्तान) में चले गये।

पाशी उन दिनों आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। वहां जाकर उनके प्रवेश हेतु काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा। कारण यह कि मुक्तसर के स्कूल में अंग्रेजी विषय नहीं था, जबकि क्वेटा के हाई स्कूल में अंग्रेजी अनिवार्य थी। पापा के वायदा करने पर कि यदि हम इंगलिश की तैयारी न करवा सके तो बोर्ड की परीक्षा में बैठने नहीं देंगे, पाशी को हाईस्कूल में प्रवेश मिला। प्रधानाचार्य भद्र महिला थी। समय-सारणी कुछ इस ढंग से बनाई कि पाशी छठी, सातवीं तथा आठवीं तीनों कक्षाओं में इंगलिश का पीरियड अटेण्ड कर सकती थी। एक दिन घबराकर के कहा, "पापा! शायद मैं तीनों कक्षाओं की इंगलिश की तैयारी न कर सकूं।" तो पापा ने कहा "देखो बेटी, हर इन्सान को अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करना पड़ता है। जो आदमी दृढ संकल्प करके अपने मार्ग पर अग्रसर होते हैं, दुनिया की कोई बाधा, कोई दीवार उनका मार्ग नहीं रोक सकती। इसलिये अपने ध्येय की सिद्धि के लिये डट जाओ। सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी। हमें साल खराब नहीं करना है।" बस फिर क्या था? मेहनत रंग लाई, वह आठवीं की परीक्षा में अपने स्कूल में प्रथम रही, सभी हैरान थे।

इस परीक्षा-परिणाम ने उनको इतना प्रोत्साहित किया कि दसवीं की परीक्षा में समूचे बलोचिस्तान में प्रथम रही। स्वर्णपदक से विभूषित किया गया। महकमे की ओर से उच्च शिक्षा हेतु वज़ीफ़ा मिला। शहर वालों ने दिल खोलकर बधाई पत्र लिखे। स्कूल वालों ने बड़े-बड़े बैनर लगाकर स्कूल के बच्चों सहित शहर में जुलूस निकाला। हमारे माता-पिता और हम सब उस दिन इतने प्रसन्न हुए कि वर्णन नहीं कर सकते। 17वें वर्ष में वह थियोसोफिकल सोसायटी की सक्रिय सदस्य बन गई। एफ.ए. की परीक्षा क्वेटा में ही पास की।

अभी पढ़ ही रही थी कि सरकारी सेंसर बोर्ड की तरफ से पत्र-सेंसर करने की सर्विस मिल गई। वह हिन्दी, इंगलिश के साथ-साथ पंजाबी, उर्दू भी बखूबी जानती थी। घर में पापा फ़ारसी पढ़ा करते थे तो वह फ़ारसी भी सीख गई।

वह केवल मात्र पढ़ने में ही कुशल नहीं थी, सभी कार्यो-जैसे खेल-कूद में भाग लेना, स्कूल में रंगारंग प्रोग्राम करने, घर में माँ के साथ गृहकार्य में हाथ बटाने के अतिरिक्त सिलाई, बुनाई तथा कढ़ाई आदि अनेक कार्य करती। अभी बी.ए. की पढ़ाई कर ही रही थी कि भारत-विभाजन हो जाने के कारण बी.ए. की डिग्री पंजाब से की। सन्

1948 में उनका विवाह दयालु फार्मेसी के प्रोपराइटर श्री अलिन्दकुमारजी से सम्पन्न हुआ। उनका वैवाहिक जीवन सुखमय था। अलिन्दजी की अनुमति से एक स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। उनकी प्रतिभा के चर्चे सुनकर राजस्थान बाल भारती के संचालन श्री अक्षयचन्द्रजी शर्मा उनके घर पधारे और उनके अनुरोध पर 'भारती' में प्रधानाध्यापिका का पदभार सम्भाला। लगभग तीस वर्ष इसी संस्था में कार्यरत रही। अध्यापन कार्य करते हुए मॉन्टेसरी परीक्षा में भी सर्वप्रथम रही थी। उनकी कर्मठता, समय की पाबन्दी, कठोर परिश्रम ने एक अनुकरणीय कीर्तिमान स्थापित किया।

बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने अनपढ़ नारियों को शिक्षित करने का भी बीड़ा उठाया। घर पर जो भी अनपढ़ महिलाएँ आती, उन्हें साक्षर करने का भरसक प्रयत्न करती। यहां तक कि उन्होंने हरिजन बालिकाओं को भी घर पर बुलाकर साक्षर किया। उन्हें कॉपियां, किताबों आदि की भी सुविधाएँ उपलब्ध करवाती थी।

अपने भाई-बहनों के परिवार पर समय-समय पर आई सभी विषम परिस्थितियों में उनके घर के द्वार हमेशा खुले रहे। वे करुणा एवं ममता की साक्षात मूर्ति थी।

फार्मेसी के सब कामों में वे अपने पति को पूरा-पूरा सहयोग देती थी। वैद्यक ग्रन्थों का अध्ययन करती थी, औषधि-निर्माण में भी वह निपुण थी, उन्होंने वैद्यरत्न की परीक्षा भी दी थी। ऐसी सर्वगुण सम्पन्नता कड़ी साधना के उपरान्त ही पैदा होती है।

वह प्रकाश किरण अपना प्रकाश फैलाकर 22 मई, 1997 को हम सब से विदा ले गई।

जिन्दगी है इक सफर, समझा रही हैं कश्तियां,
इस तरफ से उस तरफ को जा रही हैं कश्तियां
दिन होता है, रात होती है,
इसी तरह ज़िन्दगी तमाम होती है,
मौसम बदलते हैं, दिन बदलते हैं, त्यौंहार आते हैं,
आकर चले जाते हैं, अपनों की याद ताजा कर जाते हैं।

उस जाने वाली महान् विभूति को मैं सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

स्टेट बैंक कॉलोनी,
हिसार (हरियाणा)

कर्तव्यनिष्ठ शिक्षिका, सतत जागरूक श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

अक्षयचन्द्र शर्मा

समर्पित व्यक्तित्व

अमेरिका के राष्ट्रपति आइजन होवर ने एक बार एक कहानी सुनाते हुए चुनाव का भाषण दिया-

"एक बार पिताजी एक गांव में गाय खरीदने गये। उन्होंने बूढे गोपालक से पूछा "इस गाय का पुश्तैनी इतिहास क्या है?" किसान ने कहा-"श्रीमान्। यह तो मैं नहीं जानता।" पिताजी ने कहा, "कोई बात नहीं। यह तो बताओ कि इसके दूध में मक्खन कितना निकलता है?" किसान ने कहा-"यह भी मुझे मालूम नहीं, क्योंकि हम दूध बेच देते हैं। अन्त में इतना और पूछा "साल में यह औसतन कितना दूध देती है?" किसान इसका उत्तर देने में चकरा गया और रुककर इतना कहा-श्रीमान् मैं इतना ही जानता हूँ कि मेरी गाय ईमानदार है। यह पूरा-का-पूरा दूध देती है, एक बूँद भी बचाकर अपने पास नहीं रखती।"

"मैं भी उस गाय की तरह हूँ, जो पूरा का पूरा राष्ट्र को दे दूंगा। बस इतना ही मुझे कहना है।" ये शब्द थे आइजन होवर के।

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द को जब मैं याद करता हूँ तो यह कहानी सहसा मेरे स्मृतिपटल पर अंकित हो जाती है। प्रकाशवती जी ने अपने को समग्र भाव से अध्यापन के राष्ट्र निर्माणकारी कार्य में पूर्णतया समर्पित कर दिया था। शक्ति, प्रतिभा, निष्ठा, एकाग्रता, कार्यकुशलता और कहना चाहिये तन-मन समर्पित था-गीता के शब्दों में "स्वधर्म" में।

स्वधर्मोनिधनं श्रेयः

प्रकाशवती जी ने बाल शिक्षण के कार्य को आजीविका के रुप में केवल समय बिताने की दृष्टि से नहीं- "स्वधर्म" के रुप में स्वीकार किया था। बाल-शिक्षण उनके लिये पूजा था। यही जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। हजारों बाहरी आकर्षण होते हैं, उधर न झुककर अपने को स्वामी विवेकानन्द के शब्दों को अर्थ देते जीवन में उतारा-"वर्क इज़ वरशिप" अर्थात कार्य ही पूजा है।

स्वतन्त्रता के नये प्रभात में

स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही एक बार सारा राष्ट्र नये उत्साह से तरंगित हो उठा था चारों ओर नवनिर्माण की चेतना थी। वीकानेर में भी शिक्षा के क्षेत्र में नये प्रयोग करने की अन्तःस्फुरणा जाग रही थी। वाल-शिक्षण के अभिनव क्षितिज खुल रहे थे। उस समय भारतीय विद्या मंदिर प्रौढ़ शिक्षण क़ा एक शक्तिशाली केन्द्र था-वाहर से आये पुरुषार्थियों के लिए तो वह वरदान ही था। दिनभर काम करने वाले श्रमिकों, अध्यापकों, अध्यापिकाओं के भविष्य के विकास का वह एक शक्तिशाली आशा-केन्द्र था। भारतीय विद्या मंदिर ने "राजस्थान वाल भारती" के संचालन का गुरुतर दायित्व अपने पर ले लिया। सामने चुनौती भरा वतावरण था।

उस समय वीकानेर में सुयोग्य अध्यापिकाओं को तलाश लेना एक कठिन काम था। फिर ऐसी संस्था के लिए, जिसके पास अभी न उचित जगह है, न पढ़ाई का नवीनतम साज-सामान है, न उचित वेतन है, न भविष्य की सुरक्षा का भरोसा है, न फण्ड है-है केवल भावना, कुछ कर दिखलाने का संकल्प और जहॉं केवल सेवा ही सेवा है। मेवा नहीं। उस समय प्रकाशवतीजी का प्रधानाध्यापिका के रुप में मिलना एक स्वर्णिम सुयोग था।

उनके आते ही वाल भारती में नवप्राण का संचार हो गया। नई स्फूर्ति जगी। नई ऊर्जा प्रकटी। प्रकाशवतीजी ने एक ओर वच्चों में घरु वातावरण का प्यार संजो दिया, अध्यापिका वर्ग में स्नेहभरा सहयोगीभाव जगाकर उनमें पढ़ाने के प्रति नई ललक पैदा की, अभिभावकों के साथ प्रेम के सेतु का निर्माण किया।

प्रकाशवतीजी का मधुर भाषी सद्व्यवहार "रा. वाल भारती" में छा गया। उनका प्रभावशाली स्वाभिमानी विनम्र व्यक्तित्व पदे-पदे लक्षित होने लगा।

वाल-शिक्षण में सहज प्रसन्नता का समावेश हुआ। संगीत, नृत्य, अभिनय, भाषण व खेल प्रतियोगिता, सव में राजस्थान वाल भारती में सहभागिता के स्वर झंकृत होने लगे, जिनकी अनुगूंज सर्वत्र छा गई। नींव के पत्थर के रुप में प्रकाशवती जी में एक मौन निष्काम समर्पणभाव था तभी वे लम्वे समय तक एक संस्था में अनवरत कार्य करती रही। अन्य शिक्षण संस्थाओं में भी प्रधानाध्यापिका का पद व अधिक वेतन मिलने के आग्रह होने के उपरान्त भी आपने इस संस्था को नहीं छोड़ा।

उन्होंने कभी कोई शिकायत नहीं की। अपनी तरक्की-वृद्धि के लिये आग्रह नहीं किया।

वे स्वयं एक आदर्श रुप में सबके सामने थीं। समय पर आना, पूरे समय कार्य में लगे रहना, सभी स्टाफ से एक-सा व्यवहार रखना, बालक-बालिकाओं में व्यक्तिगत रुचि लेना, उनके अभिभावकवृन्द से सम्पर्क साधना और संचालन समिति को अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा से सदैव वशवर्ती रखना-ये उनकी व्यक्तित्व व कृतित्व की उपलब्धियां हैं।

वे एक प्रखर, स्पष्टवादी व स्वाभिमान रखने वाली विनम्र स्वभाव की महिला थीं। उनमें स्वाभिमान का भाव था; पर उन्होंने कभी किसी के अहम् पर चोट नहीं पहुंचाई।

बीकानेर के बाल शिक्षण अभिनव प्रयोग का इतिहास जब भी याद किया जायेगा; उस समय प्रकाशवतीजी का नाम सदैव सादर याद किया जायेगा; जिन्होंने यश से दूर रह कर, सेवाव्रती बन कर, नींव के पत्थर का मजबूती से कार्य सम्पादित किया।

संस्था की ओर से थोड़ी कमी अवश्य रही। ऐसा लगता उनकी सेवाओं का, निःस्वार्थ त्याग का, निष्काम कर्त्तव्यनिष्ठा का सही मूल्यांकन कम ही हो पाया। चाहे प्रकाशवतीजी को इसकी चाहना कम रही हो या न रही हो-प्रश्न यह नहीं, प्रश्न तो कृतज्ञता का है।

कठिन अवसर

राह चलते-चलते यदा-कदा संस्था की ओर से उनके सम्मान को चोट पहुंचती थी। ऐसे बिन्दु आ जाते थे, जो प्रकाशवतीजी को लगता था संस्था के अधिकारी अपने वचनों को भूल रहे हैं। फिर भी उनके कर्त्तव्यपालन में कहीं कमी नहीं आई। वे बीमारी में भी बराबर अपना कार्य स्वास्थ्य की परवाह न करके करती रहीं। यही कहती थीं-"मैंने आपको प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्य करने का वचन दिया था। उसे मैं अवश्य निभाऊँगी।" उन्होंने इसे बराबर निभाया।

व्यक्तित्व के निर्माण के पीछे

असल में प्रकाशवतीजी का बचपन सीमा-प्रान्त में बीता। वहाँ से उन्हें दृढ़ता, प्रखरता, स्पष्टता मिली, आर्यसमाज व थियोसाफ़िकल सोसायटी से सेवाव्रत की दीक्षा ली। पंजाब की आबो-हवा ने स्वच्छता, आत्मविश्वास,

भीतरी मस्ती और खुलापन प्रदान किया। ज्ञान की पिपासा, कविता व शायरी से प्रेम, उदारता व देने का आनन्द उनके जीवन के स्रोत रहे। वह बहुभाषाविद थी।

प्रकाशवतीजी में सफल अध्यापिका होने के जन्मजात गुण थे। एक सच्चे अध्यापक में, अपने को पूर्ण उड़ेल देने की भावना होनी चाहिये। वह निरंतर स्वाध्यायी हो कर्त्तव्यनिष्ठ हो, छात्रों के लिए आदर्श हो और सपनों वाली आँखें लिए भविष्य के प्रति आस्था रखने वाला हो। ये गुण प्रकाशवतीजी को सहज संस्कारगत प्राप्त थे।

सच्चे कार्यकर्ता में उत्साह व धीति होनी चाहिए। तभी प्रकाशवती जी में ग़ज़ब का उत्साह था और अटूट धीरज भी।

उनके स्वर्गवास से हमने राष्ट्र का निर्माण करने वाली एक व्रती कार्य क्षमता से अपने को वंचित किया है। इनके सम्पर्क में जो तीन-चार दशकों तक बालक-बालिकाएं आये हैं, जो सहयोगी आये हैं वे सदैव प्रकाशवतीजी का मधुर, प्रेरक व सेवाव्रती व्यक्तित्व से सदैव प्रेरणा, प्रोत्साहन व उद्‌बोधन प्राप्त करते रहेंगे।

सचमुच प्रकाशवतीजी एक सीमा में रहकर भी अपनी गुण-गरिमा में असीम थीं।

10 जवाहरलाल नेहरु रोड़,
कलकत्ता-13

❑

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द
एक आदर्श शिक्षिका एवं प्रशासिका

मूलचन्द पारीक

स्वर्गीय श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द से मेरा परिचय व साक्षात्कार सन् 1955 में हुआ। हम लोग राजस्थान बाल भारती के लिए योग्य एवं मिशनरी भावना से कार्य करने वाली शिक्षिका की तलाश में थे। 15 अगस्त 49 को राजस्थान बाल भारती की स्थापना में हम लोग शामिल थे। वो पहली बाल शिक्षण संस्था थी जिसमें बीकानेर नगर के गणमान्य प्रबुद्ध प्रज्ञावान विद्याविद् और सार्वजनिक कार्यकर्ता शामिल हुए थे। उनमें श्री बाबूलालजी व्यास का प्रमुख व क्रियात्मक भाग रहा है, अपितु उनकी प्रेरणा से ही इस संस्था का जन्म हुआ था। संचालक भी वही थे। उस समय सर्वश्री शंभुदयालजी सक्सेना, श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल, सत्यनारायणजी पारीक, मैं और अनेक गणमान्य व्यक्तियों की प्रबन्ध समिति बनाई थी। तब इस संस्था ने अभूतपूर्व उन्नति की थी। परन्तु आगे चलकर प्रबन्ध समिति के सदस्यों का बाबूलालजी व्यास के साथ मतभेद हो गया। इस मतभेद के फलस्वरुप 1951 में संस्था का विभाजन हो गया और संस्था का भवन बाबूलाल जी के नाम पर होने के कारण संस्था को तत्कालीन भवन खाली करना पडा। तब संस्था को नत्थूसर गेट बाहर, लालीबाई के बगेची में स्थानान्तरित करना पड़ा। तब इसके अध्यक्ष श्री गिरधरदास जी मूंधड़ा व मंत्री श्री मदन गोपाल जी दम्माणी को बनाया। यहां पर स्कूल कुछ ठीक नहीं चली और मरणासन्न अवस्था में पहुंच गयी।

तत्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी स्व. रामचन्द्रजी कल्ला के आग्रह, प्रेरणा व सहयोग से भारतीय विद्या मंदिर प्रबंध समिति ने उसका संचालन संभाला उसे पुनर्जीवित करने की चुनौती व जिम्मेवारी श्री रामेश्वरप्रसाद जी पांडिया ने स्वीकार की। स्व. आनन्दराजजी शर्मा के सहयोग से संस्था को कर्जमुक्त कर, जब उसका पुनर्गठन किया गया तो आदरणीय श्री अक्षयचन्द्रजी शर्मा की नजर श्रीमती प्रकाशवतीजी पर पड़ी और उन्होंने उन्हें संस्था को सेवा देने के लिए तैयार किया। उसी समय उनसे श्री सत्यनारायणजी पारीक व श्री चन्द्रदानजी का तथा मेरा परिचय हुआ और उनकी सेवायें भारती के लिए उपलब्ध हुई।

श्रीमती प्रकाशवतीजी ने बी.ए. उत्तीर्ण करके मांटेसरी शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त किया। विवाहोपरान्त वे जैन कन्या पाठशाला में कार्यरत थीं। दिसम्बर 1955 में शिक्षिका के रुप में उनका रा. बाल भारती शिक्षणसंस्था से जुड़ाव हुआ और नियमानुसार उन्होंने 30 जून, 87 को अवकाश ग्रहण किया। लगभग 32 वर्ष उन्होंने अपनी सेवायें संस्था को दीं।

आज की गिरधरदास मूंधड़ा बाल भारती और उस समय की राजस्थान बाल भारती की स्थिति में बहुत अंतर था। जब इस संस्था को भारतीय विद्या मंदिर ने संभाला तो उसका कर्ज चुकाते-चुकाते विद्या मंदिर संकट में आ गया। यह वो समय था, जब जन-सहयोग जुटाकर संस्था का पुनर्गठन किया जाकर उसे नवीन स्वरुप दिया जा रहा था। संस्था का पुराना भवन खाली करना व किराए पर नया मकान लेना पड़ा। वर्षो बाद विद्यालय गजनेर रोड़ स्थित मौजूदा भवन में स्थानान्तरित हुआ। उस समय न केवल प्रबंधकों को आर्थिक संकट से परेशानी थी, बल्कि अध्यापकों को समय पर वेतन न मिलने से कष्ट उठाना पड़ता था। उस कठिन दौर में प्रकाशवतीजी ने धैर्य व साहस का परिचय देकर अन्य कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया और कभी संस्था को कार्यकर्ताओं से असन्तोष व नाराजगी का सामना नहीं करना पड़ा। कभी-कभी तीन-चार महीने वेतन नही भी मिला, तो किसी ने कोई शिकवा-शिकायत नहीं की और काम को पूरी तन्मयता से जारी रखा। प्रकाशवती जी प्रशासनिक एवं शैक्षिक कार्यो में योग देती थीं। पूरा उत्तरदायित्व निभाते हुए बराबर अपनत्व की भावना से कार्य को आगे बढ़ाती रहती थी। अगर उनका उस समय निःस्वार्थ सहयोग नहीं मिला होता, तो संस्था आगे नहीं बढ़ पाती। उनके सहयोग से न केवल संस्था ने अपने पैरों पर खड़ी होकर पुनः साख अर्जित की, बल्कि उसका स्तर प्राथमिक से उच्च प्राथमिक किया जा सका। कक्षा 6, 7 व 8 खुलने से छात्र भी बढ़े व शिक्षक भी। अभिभावक भी उनके कार्य व व्यवहार से सदा सन्तुष्ट रहे। प्रकाशवतीजी वास्तव में एक आदर्श गृहिणी थीं और उनमें जो मातृहृदय था, उससे विद्यार्थी उनके प्रभाव व अनुशासन में रहे। शिक्षा-कार्य व विशेषतः छोटे बालकों की शिक्षा में उन्होंने कई परीक्षण किए, जिससे उनका अनुभव भी विशद हुआ और उससे शिक्षण-कार्य में सबको लाभ हुआ। हमें उनका सहयोग मिला, उसे हम कभी नहीं भूल सकते। कष्ट के समय जिससे

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द
एक आदर्श शिक्षिका एवं प्रशासिका

मूलचन्द पारीक

स्वर्गीय श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द से मेरा परिचय व साक्षात्कार सन् 1955 में हुआ। हम लोग राजस्थान बाल भारती के लिए योग्य एवं मिशनरी भावना से कार्य करने वाली शिक्षिका की तलाश में थे। 15 अगस्त 49 को राजस्थान बाल भारती की स्थापना में हम लोग शामिल थे। वो पहली बाल शिक्षण संस्था थी जिसमें बीकानेर नगर के गणमान्य प्रबुद्ध प्रज्ञावान विद्याविद् और सार्वजनिक कार्यकर्ता शामिल हुए थे। उनमें श्री बाबूलालजी व्यास का प्रमुख व क्रियात्मक भाग रहा है, अपितु उनकी प्रेरणा से ही इस संस्था का जन्म हुआ था। संचालक भी वही थे। उस समय सर्वश्री शंभुदयालजी सक्सेना, श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल, सत्यनारायणजी पारीक, मैं और अनेक गणमान्य व्यक्तियों की प्रबन्ध समिति बनाई थी। तब इस संस्था ने अभूतपूर्व उन्नति की थी। परन्तु आगे चलकर प्रबन्ध समिति के सदस्यों का बाबूलालजी व्यास के साथ मतभेद हो गया। इस मतभेद के फलस्वरुप 1951 में संस्था का विभाजन हो गया और संस्था का भवन बाबूलाल जी के नाम पर होने के कारण संस्था को तत्कालीन भवन खाली करना पड़ा। तब संस्था को नत्थूसर गेट बाहर, लालीबाई के बगेची में स्थानान्तरित करना पड़ा। तब इसके अध्यक्ष श्री गिरधरदास जी मूंधड़ा व मंत्री श्री मदन गोपाल जी दम्माणी को बनाया। यहां पर स्कूल कुछ ठीक नहीं चली और मरणासन्न अवस्था में पहुंच गयी।

तत्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी स्व. रामचन्द्रजी कल्ला के आग्रह, प्रेरणा व सहयोग से भारतीय विद्या मंदिर प्रबंध समिति ने उसका संचालन संभाला उसे पुनर्जीवित करने की चुनौती व जिम्मेवारी श्री रामेश्वरप्रसाद जी पांडिया ने स्वीकार की। स्व. आनन्दराजजी शर्मा के सहयोग से संस्था को कर्जमुक्त कर, जब उसका पुनर्गठन किया गया तो आदरणीय श्री अक्षयचन्द्रजी शर्मा की नजर श्रीमती प्रकाशवतीजी पर पड़ी और उन्होंने उन्हें संस्था को सेवा देने के लिए तैयार किया। उसी समय उनसे श्री सत्यनारायणजी पारीक व श्री चन्द्रदानजी का तथा मेरा परिचय हुआ और उनकी सेवायें भारती के लिए उपलब्ध हुई।

श्रीमती प्रकाशवतीजी ने बी.ए. उत्तीर्ण करके मांटेसरी शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त किया। विवाहोपरान्त वे जैन कन्या पाठशाला में कार्यरत थीं। दिसम्बर 1955 में शिक्षिका के रुप में उनका रा. बाल भारती शिक्षणसंस्था से जुड़ाव हुआ और नियमानुसार उन्होंने 30 जून, 87 को अवकाश ग्रहण किया। लगभग 32 वर्ष उन्होंने अपनी सेवायें संस्था को दीं।

आज की गिरधरदास मूंधड़ा बाल भारती और उस समय की राजस्थान बाल भारती की स्थिति में बहुत अंतर था। जब इस संस्था को भारतीय विद्या मंदिर ने संभाला तो उसका कर्ज चुकाते-चुकाते विद्या मंदिर संकट में आ गया। यह वो समय था, जब जन-सहयोग जुटाकर संस्था का पुनर्गठन किया जाकर उसे नवीन स्वरुप दिया जा रहा था। संस्था का पुराना भवन खाली करना व किराए पर नया मकान लेना पड़ा। वर्षों बाद विद्यालय गजनेर रोड़ स्थित मौजूदा भवन में स्थानान्तरित हुआ। उस समय न केवल प्रबंधकों को आर्थिक संकट से परेशानी थी, बल्कि अध्यापकों को समय पर वेतन न मिलने से कष्ट उठाना पड़ता था। उस कठिन दौर में प्रकाशवतीजी ने धैर्य व साहस का परिचय देकर अन्य कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया और कभी संस्था को कार्यकर्ताओं से असन्तोष व नाराजगी का सामना नहीं करना पड़ा। कभी-कभी तीन-चार महीने वेतन नही भी मिला, तो किसी ने कोई शिकवा-शिकायत नहीं की और काम को पूरी तन्मयता से जारी रखा। प्रकाशवती जी प्रशासनिक एवं शैक्षिक कार्यो में योग देती थीं। पूरा उत्तरदायित्व निभाते हुए बराबर अपनत्व की भावना से कार्य को आगे बढ़ाती रहती थी। अगर उनका उस समय निःस्वार्थ सहयोग नहीं मिला होता, तो संस्था आगे नहीं बढ़ पाती। उनके सहयोग से न केवल संस्था ने अपने पैरों पर खड़ी होकर पुनः साख अर्जित की, बल्कि उसका स्तर प्राथमिक से उच्च प्राथमिक किया जा सका। कक्षा 6, 7 व 8 खुलने से छात्र भी बढ़े व शिक्षक भी। अभिभावक भी उनके कार्य व व्यवहार से सदा सन्तुष्ट रहे। प्रकाशवतीजी वास्तव में एक आदर्श गृहिणी थीं और उनमें जो मातृहृदय था, उससे विद्यार्थी उनके प्रभाव व अनुशासन में रहे। शिक्षा-कार्य व विशेषतः छोटे बालकों की शिक्षा में उन्होंने कई परीक्षण किए, जिससे उनका अनुभव भी विशद हुआ और उससे शिक्षण-कार्य में सबको लाभ हुआ। हमें उनका सहयोग मिला, उसे हम कभी नहीं भूल सकते। कष्ट के समय जिससे

संबल मिलता रहा हो, उसकी स्मृति सदा स्थाई रहती है। यह हमारा सौभाग्य था कि हमें उनकी सेवाएं प्राप्त हुई। उनका संस्था के साथ आत्मीय सम्बन्ध व सम्पर्क उनके सेवामुक्त होने के बाद भी बराबर बना रहा। समय-समय पर वो संस्था में आती रहीं तथा इसकी उन्नति व विकास से उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। उनके साथ हम सबका पारिवारिक रिश्ता बन गया, इसलिए उनके पति व परिवार के अन्य लोगों का भी हमें सदा अपनत्व मिला व आगे भी मिलता रहेगा। यद्यपि उनकी आयु हम लोगों से कम थी, पर स्वास्थ्य कमजोर हो जाने से वो पहले चली गई और अपनी स्मृति हम सबके हृदयपटल पर छोड़ गई। संस्था के इतिहास में उनका सदा महत्वपूर्ण स्थान रहेगा व उनका जीवन व उनके कार्य सबके लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजली।

सचिव
गिरधरदास मूंधड़ा बाल भारती,
बीकानेर

❑

सुगृहिणी एवं समर्पित शिक्षिका
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

सत्यनारायण पारीक

भारतीय विद्या मंदिर के तीन अंग थे। रात्रि प्रौढ़ शिक्षण विद्यालय, राजस्थान बाल भारती और शोध प्रतिष्ठान। राजस्थान बाल भारती बालकों की प्राईमरी शिक्षा हेतु पुनर्जीवित की गई। भारती में श्रीमती प्रकाशवती, पत्नी श्री अलिन्दकुमार सन् 1955 में नियुक्त हुई।

अनुशासनप्रिय प्रकाशवती जी बालकों को विनम्रता, गुरुजनों के प्रति आदर और घर पर अपने अध्ययन का काम पूरा करके लाने हेतु सदैव प्रोत्साहित करती रहती। बालकों के प्रति वात्सल्य भाव उनमें कूट-कूट कर भरा था। उनके पढ़ाने की शैली बहुत अद्‌भुत थी। बात ही बात में पाठ के मूल भाव बालकों को हृदयस्थ हो जाते। बस्ते और पढ़ाई के बोझ से बच्चे सदैव अछूते रहे।

अध्यापनकला के अलावा उनकी प्रशासकीय कुशलता अनूठी थी, अध्यापक, अध्यापिकाओं आदि के सहयोग और संतुष्टि को दृष्टिगत रखते हुए वे महत्वपूर्ण निर्णय लेती थीं।

दिवंगता अद्वितीय साहस की प्रतिमूर्ति प्रकाशवतीजी ने गृहस्थ जीवन बड़ा सुख व सामंजस्यपूर्ण बिताया।

उनके स्नेहिल व्यवहार के कारण समय-समय पर हम त्रिमूर्ति (पांडिया जी, आर्य बंधु और मैं) उनसे मिलने जाया करते थे। संयोगवश निधन के कुछ ही दिन पूर्व हम तीनों को उनसे भेंट का अवसर मिला, शरीरिक रुप से अस्वस्थ होते हुए भी उन्होंने प्रसन्न मुद्रा से आतिथ्य-सत्कार किया।

प्रकाशवतीजी नहीं रही, परन्तु उनके सद्‌गुणों की छाप अमिट रहेगी।

अध्यक्ष, शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर

❑

बाल शिक्षण में पारंगत एक तेजस्वी विभूति
श्रीमती प्रकाशवती अलिंद

रामनरेश सोनी

कुछ लोग अपने जन्म के साथ ही ऐसी मौलिक विशेषताएं लेकर आते हैं कि अपनी निराली प्रतिभा के बल पर लाखों अंधेरे दिलों को प्रकाशित कर देते हैं, उनमें उत्तम मानवीय विचार एवं श्रेष्ठ संस्कार पैदा कर देते हैं। अपने आस-पास के समाज के प्रति उनकी संलग्नता देखते ही बनती है। अपनी कर्मनिष्ठा एवं त्याग के द्वारा वे लाखों लोगों के बीच लोकप्रियता अर्जित कर लेते हैं।

श्रीमती प्रकाशवती अलिंद भी एक ऐसी ही विभूति थीं, जिन्होंने पिछले पचास वर्षो में बीकानेर में रहते हुए बालक-बालिकाओं में श्रेष्ठ संस्कारों का सिंचन किया, माता-पिताओं को बालिका-शिक्षा के लिए प्रेरित किया, अपने विद्यालय को रोचक शैक्षिक प्रवृत्तियों का ऐसा अनुपम केन्द्र बनाया कि बच्चों के माता-पिता ही नहीं, शिक्षाधिकारीगण एवं स्थानीय समाज उनकी प्रतिभा का कायल हो गया।

श्रीमती प्रकाशवती अलिंद 20 जुलाई, 1927 को मुक्तसर (पंजाब) में डॉ. सालिगराम गुप्ता के घर जन्मी थीं, लेकिन उनकी परवरिश एवं शिक्षा क्वेटा (अब पाकिस्तान) में हुई। आर्यसमाजी संस्कारों में पली-बढ़ी प्रकाशवतीजी पढ़ाई में सदैव आगे रहती थीं। उनकी स्वाध्यायप्रियता, वक्तृता, लेखनी की शक्ति का सभी अध्यापकों एवं गुरुजन पर जबर्दस्त जादू था। मैट्रिक में वे बोर्ड की परीक्षा में फर्स्ट रही और उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

उस समय पाकिस्तान नहीं बना था। ब्रिटिश शासन को खदेड़ बाहर करने के लिए बापू के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन जोरों पर था। उधर बलूचिस्तान में सीमांत गाँधी ने बगावत की बागडोर थाम रखी थी। प्रकाशवती का किशोर मन राष्ट्रीय घटनाक्रम का साक्षी था। अपना मुल्क, अपना वतन, अपनी आजादी और अपनी तरक्की के माहौल में उनके भीतर भी राष्ट्रीय चेतना करवटें ले रही थीं। वे थियोसोफिकल सोसाइटी की भी सक्रिय सदस्य बन गई थीं।

मैट्रिक के बाद उन्हें एकाएक खुफिया विभाग में फौजियों की

चिट्ठियों को पढ़कर सेंसर करने का काम मिला। प्रकाशवतीजी हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू व पंजाबी की अच्छी ज्ञाता थीं। बाजवक्त फारसी और गुजराती भी पढ़ लेती थीं। सेंसर विभाग में दो वर्ष तक अंग्रेज अधिकारियों के तहत काम करने के पश्चात् आपने वह विभाग छोड़ दिया और रसद विभाग में नौकरी कर ली।

मैट्रिक में स्वर्णपदक पाने के कारण उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए वज़ीफा भी मिला और उन्होंने बी.ए.किया। सन् 1948 में एक ऐसा सुखद संयोग बना कि बलूचिस्तान में पली-बढ़ी प्रकाशवतीजी का अंतर-जातीय विवाह बीकानेर के पं. अलिंदकुमारजी आयुर्वेदाचार्य (दयालु फार्मेसी) के प्रोपराइटर के साथ मुक्तसर में सम्पन्न हुआ। उस जमाने में ऐसा विवाह होना गज़ब के साहस की चीज थी। प्रगतिशील चेतना के धनी लोगों नें तथा बीकानेर के शिक्षित समाज ने इस दम्पत्ति को सम्मान दिया एवं विख्यात पत्रकार पुरुषोत्तम केवलिया ने देश के प्रमुख समाचार पत्रों में विवरण अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा प्रकाशित करवाया था। भारत की प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका इलैस्ट्रेटेड वीकली बम्बई में भी इस दम्पत्ति के विवाह से सम्बन्धित चित्र भी प्रकाशित हुआ था।

प्रकाशवती जी ने बीकानेर में आने के वाद एक अध्यापिका के रूप में एक विद्यालय में काम शुरु किया। पढ़ने-पढ़ाने में आपकी रुचि अद्वितीय थी। घर में भी अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू, हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं अनुशीलन चलता था और पास-पड़ौसी में भी महिलाओं के बीच पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा का दौर लगभग रोज़ाना की वात थी।

एक तरफ घर-परिवार का दायित्व, दूसरी तरफ अपनी रुचि के ग्रन्थों एवं ज्ञानार्जन के लिए स्वाध्याय से जुड़े रहना, तीसरी तरफ विद्यालय में बच्चों को आनंददायी एवं रुचिकर शैली से पढ़ाने के प्रयोग। ओर एक दिन घर बैठे आमंत्रण मिला राजस्थान वाल भारती में पढ़ाने का। नगर के जाने-माने विद्वान श्री अक्षयचंद्रजी स्वयं पधारे और प्रकाशवतीजी से अनुरोध किया कि राजस्थान वाल भारती में प्रधानाध्यापिका के बतौर दायित्व संभालें।

वस, वह दिन था कि अध्यापन के क्षेत्र में प्रकाशवती जी इस संकल्प के साथ प्रविष्ट हुई कि तीन दशकों तक उसी व्यवसाय से जुड़ी रहीं। उन्हें सेवा-निवृति से पूर्व दो वर्षो का एक्सटेंशन भी मिला।

कहा जाता है कि मंदिर की प्रतिष्ठा में पुजारी की आराधना और साधना का अप्रतिम योगदान रहता है। कहना न होगा कि राजस्थान बाल भारती के उस प्रारंभिक दौर में संस्था को क्रमशः विकास के उच्चतर सोपानों तक ले जाने में प्रकाशवतीजी की साधना, संलग्नता, नेतृत्व क्षमता, मृदुभाषिता एवं विद्वता का बहुत बड़ा योगदान था।

वे समय की पाबंदी का इतना अधिक पालन करती थीं कि उनके साथी-संगी तक विस्मयचकित रहते थे। बच्चों के माता-पिता के बीच उनके चुंबकीय व्यक्तित्व का प्रभाव कुछ विशेष था। बच्चों को प्यार से पढ़ाना, उनसे बातचीत करना, उन्हें नई-नई रोचक प्रवृत्तियाँ देना, विद्यालय की व्यवस्था बनाये रखना, कर्मचारियों को साथ लेकर चलना-ये कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं कि कुछ ही वर्षो में प्रकाशवतीजी की वजह से राजस्थान बाल भारती का नाम चारों ओर एक श्रेष्ठ विद्यालय के रुप में फैल गया। बालक-बालिकाओं की संख्या में कई-कई गुणा वृद्धि हुई।

जिन बच्चों ने प्रकाशवतीजी के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की और जो आज उच्च पदों पर आसीन हैं, वे जब भी बीकानेर आते थे, तो प्रकाशवती जी को प्रणाम करने के लिए उनके घर पर अवश्य जाते थे। उनकी वाणी का जादू ऐसा था कि संकेत पाते ही बच्चों के कान सुनने को बेचैन हो जाते। वे मितभाषी थीं। उन्हें कविताओं से जितना प्यार था, उतना ही देश के इतिहास और महापुरुषों के प्रेरणादायी जीवन से। वैसे भाषाएं और गणित पढ़ाने में उनकी दक्षता थी। गंगाशहर में जब के. यू. भाम्रा ने पूर्व प्राथमिक शिक्षण हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया था, तब आपने भी उसमें भाग लिया था। वडी उम्र में भी बालिकाओं को पीछे छोड देने वाली अद्‌भुत कार्य क्षमता का परिचय देकर उस प्रशिक्षण में भी वे सर्वप्रथम रही थी।

प्रकाशवतीजी बीकानेर के विद्यालयों की उन चुनिंदा श्रेष्ठ अध्यापिकाओं में समाहित थीं, जिन्होंने पीढ़ियों का निर्माण किया है, उन्हें प्रभावित किया है। वे कलात्मक प्रतिभा की धनी थीं उनकी सौंदर्यचेतना अद्‌भुत थीं, नेतृत्वकला सम्पन्न प्रधानाध्यापिका थीं, स्वाभिमानी व निडर थीं। कर्मचारियों की हितैषी थीं, श्रेष्ठ इंसान थीं, देवी थीं।

सेवा-निवृति के उपरांत प्रकाशवतीजी ने अपने पति की रसायन शाला का दायित्त्व संभाला था। वैद्यक ग्रन्थों के अनुशीलन, औषधियों की निर्माण प्रक्रिया, दवाओं की शुद्धता एवं गुणवत्ता को बनाए रखने

में उनकी रुचि क्रमशः बढ़ती रही।

ऐसी वैविध्यपूर्ण रुचियों वाली इस विभूति का 22 मई, 1997 को एकाएक निधन हो गया। उनके देहांत से नगर की एक शानदार शख्सियत चल बसीं। इंसानियत की लौ को सतत जाग्रत रखने वाली वह प्रकाशमयी किरण चल बसी। उनके देहांत पर हजारों की संख्या में संवेदना के स्वर, पत्रों द्वारा मुखरित हुए हैं। ऐसी प्रतिभाएं वर्षो की साधना के बाद पैदा होती हैं।

उसी दिव्य विभूति को सादर नमन।

(पूर्व शिविरा सम्पादक)
सैन्ट्रल जेल के सामने,
बीकानेर

❑

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है

ओम केवलिया

सिंहावलोकन करता हूँ तो सन् 1948 के कुछ दृश्य चलचित्र की भाँति आँखों के आगे से एक-एक करके गुजर जाते हैं। उनमें कतिपय ऐसे भी हैं जो बराबर याद आते हैं।

बड़े भैया गणेश, मुक्तसर (पंजाब) जाने की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें एक विवाह में शामिल होना है, बारात बीकानेर से जा रही है। भैया के परममित्र अलिन्दकुमारजी का विवाह था। बारात जब पंजाब से लौटी तो उसका शानदार स्वागत किया गया। विवाह में सम्मिलित कुछ गणमान्य व्यक्ति इस समारोह में शामिल हुए। यह एक अन्तर्जातीय विवाह था। अलिन्दजी का विवाह प्रकाशवतीजी से हुआ, जो स्नातक थीं। एक कुशल गृहिणी और ममता की असाधारण प्रतिमूर्ति के रूप में अपना विशेष योगदान दिया। श्रीमती प्रकाशवतीजी ने शिक्षा, विशेष रूप से बाल शिक्षा, के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। अध्यापक के व्यक्तित्व के बारे में उनकी मान्यता थी कि एक अध्यापक की बातचीत, श्यामपट्ट पर चाक द्वारा लेखन तथा चाल-चलन में पूर्णता होनी चाहिए।

अलिन्दजी को मैं हमेशा भाई साहब के रूप में आदर और सम्मान देता रहा हूँ। प्रकाशवतीजी को भाभी ही कहता था। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और आत्मीयता ने मुझे हमेशा प्रेरणा दी। उनके व्यक्तित्व में आकर्षण और वाणी में माधुर्य था।

मेरे सबसे बड़े भैया विख्यात पत्रकार पुरुषोत्तम केवलिया के अलिन्दजी के परिवार से मधुर सम्बन्ध रहे। उन्होंने इस विवाह को आदर्श विवाह कहते हुए भारत की प्रसिद्ध इलस्ट्रेटेड वीकली (बम्बई) में समाचार सहित विवाह का चित्र भी प्रकाशित कराया।

आज प्रकाशवतीजी नहीं हैं इस दुनिया में, लेकिन उनकी उपस्थिति हर कदम पर उनके परिवार के सदस्यों और उनके सम्पर्क में आए व्यक्तियों को होने का अहसास दिलाती रहती है।

गमों के दौर में भी प्रकाशवतीजी के चेहरे पर कभी शिकन नहीं देखी। 'नेकी कर दरिया में डाल' में उनका अटूट विश्वास था। अपनों और परायों, सभी की हरसम्भव मदद की। उनमें से कुछेक ने उन्हें मानसिक

कष्ट भी दिए लेकिन उन्होंने कोई शिकवा-गिला नहीं किया, हमेशा एक कुशल खिलाड़ी की तरह।

एक बार वह गुनगुना रहीं थीं-

'हम से क्या भूल हुई, जो यह सज़ा हम को मिली........' उन्होंने खुशियां तो मुक्त हस्त से बांटी लेकिन दुःखों को अपने अन्दर ही समेटा, व्यक्त नहीं किया।

प्रकाशवती जी का अध्ययन और अध्यापन का एक खास अन्दाज, था। आज भी उनके विद्यार्थी, जो उनके सम्पर्क में आए, उन्हें नहीं भुला पाए। वे हमेशा उनके प्रति श्रद्धा और गुरुभक्ति दिखाते रहे हैं। अनुशासनप्रिय होने के कारण घर और बाहर इसकी छाप हमेशा बनाए रखी। किसी कीमत पर स्वाभिमान का त्याग नहीं किया। एक बार इस सम्बन्ध में मैंने उन्हें श्री कामेश्वर दयाल 'हजी' का एक शेर सुनाया उन्होंने बेहद पसन्द किया। शेर था-

अपना ज़मीर बेच कर खुशियां खरीद लें।
ऐसे तो इस जहाँ के, तलबगार हम नहीं।

समालोचनार्थ मेरे पास आई हुई पुस्तकें वह प्रायः पढ़ने के लिए मंगवा लेती थीं कई बार तो उन पर चर्चा भी हो जाती थी। मैं उनके तार्किक विवेचन का हमेशा लोहा मानता था और साधुवाद दिए बिना नहीं रह पाता था।

चाहे फार्मेसी का कार्य हो, पारिवारिक चिन्तन अथवा किसी को आर्थिक सहयोग का संदर्भ हो, उन्होंने अपने विवेक से अपनी क्षमता का योगदान किया।

आखिरी दिनों में उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा, फिर भी बला का साहस था उनमें। अपने आपको व्यस्त रखा करती और दर्द को भुलाए रखती। अपने पति अलिन्दजी के प्रति एक सच्ची सहधर्मिणी की तरह कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग एक अनुकरणीय उदाहरण है। आज दयालु फार्मेसी की ख्याति भारत, श्रीलंका एवं नेपाल तक है। इसमें प्रकाशवतीजी का महत्वपूर्ण योगदान है।

अपने पुत्र संदीप को सुयोग्य चिकित्सक के रुप में तैयार करने में प्रकाशवतीजी का महत्वपूर्ण दिशानिर्देश रहा है। संदीप को भरपूर प्यार और ममत्व मिला-उसे प्रेरणा देकर जीने का सही मार्ग प्रशस्त किया। आज, भाभी प्रकाशवती इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन हमारे पारिवारिक

संबंध उसी तरह हैं-मेरा वहां आना-जाना बराबर बना हुआ है। यहाँ कवि दुष्यन्तकुमार की पंक्तियाँ याद आती हैं-

यहां दरख्तों के साए में धूप लगती है
चलो यहां से चलें उम्र भर के लिए।

जीवन का एकमात्र ध्रुव सत्य है-मृत्यु। यह सिलसिला चलता रहता है, लेकिन जीवन उसी का सार्थक है, जो दूसरों के लिए जिए और अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ जाए।

मेरी श्रद्धांजलि!

सम्पादक, जय जंगलघर (पाक्षिक),
बीकानेर

यादों की परछाइयाँ

शिवकुमार शर्मा

देखते-देखते एक लम्बा समय गुजर गया। मेरे स्मृति पटल पर कुछ यादों की परछाईयॉ उभरती हैं और बीते समय के दृश्यों को एक-एक करके संजोने में चली जाती है। मेरे पिताश्री पं. शंकरदत्तजी, प्रिन्सिपल, मोहता महाविद्यालय, अध्यक्ष, मोहता रसायनशाला सन् 1948 में मुक्तसर (पंजाब) नगर में भाई अलिन्दजी के विवाह में सम्मिलित होने गये थे। उन्होंने वर के पिता के रुप में अपना दायित्व निभाया तथा कुछ दायित्व उन्होंने मेरे लिए भी छोड़ा था। बरात के लौटने पर उनके स्वागत-सत्कार का आयोजन मैंने भली प्रकार से किया। मुझे अभी तक याद है कि भाईजी तथा भाभीजी सर्वप्रथम हमारे ही घर आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु आये थे। तत्पश्चात् हमारे पारिवारिक सम्बन्ध और भी प्रगाढ़ होते चले गये। मेरे पिताश्री समय-समय पर भाईजी को मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन तो देते ही थे, इससे भी अधिक, उन्होंने हमारे परिवार में बड़े पुत्र व पुत्रवधू के रुप में दोनों को सम्मान दिया।

भाभीजी प्रकाशवतीजी के चले जाने से आज तक एक अजीव सूनापन दिखाई देने लगा है। मैं सोचता हूँ, यह कैसा मधुर सम्बन्ध है, जो भुलाये भी हम भुला नहीं पाते।

श्रद्धावनत!

सेवानिवृत राजकीय चिकित्सक
आरोग्य सदन, रानीवाजार,
बीकानेर।

❑

माननीया भाभी प्रकाशवती अलिन्द
एक असाधारण व्यक्तित्व

सोहनलाल वसन्त

भाभी के देवलोक गमन का समाचार सुनते ही मैं हतप्रभ रह गया। जहाँ खड़ा था, वहीं खड़ा रहा। एक कदम भी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रही थी। ऐसा लगा, मानो मैं ही क्या समय भी रुक गया हो। एक झटका-सा लगा। यह सब एकाएक कैसे हो गया? स्मृति पटल पर कुछ चित्र उभरते हैं-मुझे याद आता है-

......सन् 1948 में पूज्य भाई जी (श्री अलिन्दजी) के साथ परिणय सूत्र में बँध जाने के बाद से लगातार भाभीजी से निकट आत्मीय सम्बन्ध बने रहे। कई वर्ष तो एक ही घर-परिवार में एक साथ रहने का अवसर मिला, किन्तु परिस्थितियों के अनुसार मेरे विशेष अध्ययन के आग्रह के कारण मुझे बाहर जाना-रहना पड़ा। फिर विविध स्थानों में सर्विस के कारण अलग परिवार और रहन-सहन का सिलसिला होते हुए भी हम लोग निकट सम्बन्धों से बँधे रहे।

मेरे भाभी कहने के कारण अधिकतर परिचित वर्ग में एवं मौहल्ले में प्रायः सभी लोग उन्हें भाभी के रुप में सादर पुकारते रहे। ये लोग सब के "भाईजी-भाभीजी" बन गये। दोनों पवित्र आत्माओं का ऐसा मिलन संयोग हुआ कि आजीवन एक दूसरे के लिए पूर्णतया समर्पित रहे। कौन किससे अधिक समर्पित रहा, इसका निर्णय नहीं किया जा सकता। दोनों सरल हृदय, दयावान एवं मानव-सेवा की भावनाओं से ओतप्रोत रहे।

माननीय भाभी अत्यन्त सुन्दर, मनमोहक, आकर्षक, भव्य व्यक्तित्व की धनी होने के साथ ही सहृदय, सौजन्य, भावुकता, उदारता, विद्वता एवम् विवेकशीलता आदि अद्भुत गुणों का आधान थी। प्रभु ने उनको बड़ी सहजता से ऐसे दिव्य गुणों को प्रदान किया था।

अमिट छाप

उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि जो भी व्यक्ति एक वार उनके सम्पर्क में आ गया, उस पर उनके अपूर्व व्यक्तित्व की गहरी अमिट छाप हमेशा के लिए पड़ जाती थी। वह कभी उन्हें भुला नहीं सकता था। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

विविध आयामी व्यक्तित्व

उनका व्यक्तित्व विविध आयामों वाला था। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी कार्यक्षमता अद्भुत थी। जिन संस्थाओं से वह जुड़ी रहीं, पूरी कर्तव्य परायणता के साथ अपने पदभार का निर्वाह किया। अस्वस्थता की हालत में भी अपनी जिम्मेवारी और कर्त्तव्यपरायणता से पीछे नहीं हटीं। इस क्षेत्र के सभी लोग उनके इस गुण के कायल थे।

बच्चों के चरित्र-निर्माण की तरफ उनका विशेष ध्यान रहता था, जो कि एक आदर्श अध्यापक का विशेष चरित्र होता है।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में वह एक मूक सेवक के रुप में समर्पित रहीं। बिना किसी दिखावे और पद लिप्सा के, वे अपने सम्पर्क में आने वाले अनेक जाने-अनजाने लोगों की सहायता, बिना किसी अपेक्षा के करती रहीं।

अतिथि-सत्कार

प्रायः अस्वस्थ रहते हुए भी वे घर आए अतिथि, मित्र, रिश्तेदारों का पूर्ण स्नेह, भावना, आदर के साथ सत्कार करती थीं। घर आए व्यक्ति उन्हें कभी भुला नहीं सकते थे।

पारिवारिक क्षेत्र में

पति-पत्नी के रुप में उनका जीवन एक आदर्श दम्पति का था। दयालु फार्मेसी के हर कार्य में उनका समर्पित सहयोग था। पूज्य भाईजी के सम्पर्क में रह कर औषध-निर्माण, आयुर्वेदिक मशीनरी निर्माण, सप्लाई आदि की हर विधा का उन्हें गहरा अनुभव था। संस्था का सम्पूर्ण अकाउण्ट वे एक अच्छे इन्कमटैक्स वकील की तरह आजीवन तैयार करती रहीं।

परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्यों के सुख-दुःखों से वे हमेशा निकटता से जुड़ी रहती थीं। यथासम्भव पूरा सहयोग करती थीं।

माननीय भाभी बहुत ही भावुक तथा मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत होने के कारण किसी का भी दुःख देख नहीं सकती थी। दूसरों को दुखी देखकर उनकी आँखों से प्रबल अश्रुधारा का प्रवाह चालू हो जाता था। दुःखी, पीड़ित व्यक्ति की यथासम्भव सहायता करने में वे हमेशा तत्पर रहती थी।

अद्भुत विशेषता

ऊपर लिखे गुणों के अलावा उनमें एक विशेषता यह देखने में आई कि बहुत भावुक तथा सरल होने पर भी उनमें व्यक्ति को परखने का विशेष गुण था। प्रखर बुद्धिमान एवं विदुषी होने के कारण उनका विवेक बहुत उच्च कोटि का था। कोई भी व्यक्ति उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकता था। वे व्यावहारिक पक्ष को कभी भी ओझल नहीं होने देती थी।

दुर्भाग्य से उनका स्वास्थ्य काफी लम्बे समय से गड़बड़ चलता रहा, किन्तु फिर भी उनका मनोबल बहुत ऊँचा था एवं जिजीविषा प्रबल थी, अतः स्वास्थ्य के लिए यथोचित उपचारों के साथ अपनी कार्यक्षमता में कभी कमी नहीं आने देती थी। यह उनके उच्च मनोबल का ही प्रतीक था कि लगभग सत्तर वर्ष तक का संघर्षपूर्ण जीवन उच्च आदर्शो एवं कर्तव्यों की पूर्ति के साथ व्यतीत हुआ। ऐसा जीवन एक असाधारण व्यक्तित्व का ही परिचायक है।

उच्च आदर्श

उनके मानवीय गुणों एवं समाजसेवा का एक स्मरणीय उदाहरण देखकर मन श्रद्धावनत हो उठता है कि अपने जीवन में अत्यन्त संघर्ष, कठिन परिश्रम, ईमानदारी से कमाए धन में से एक बड़ी राशि अपने जीवन की समाप्ति से पूर्व ही वे वसीयत के रुप में लिखकर गईं कि इस राशि का सदुपयोग समाज के दुःखी एवं जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए किया जाये, चाहे वे किसी भी वर्ग, जाति, लिंग या धर्म के हों। यह सब उनके उच्च आदर्शो के स्वभाव के अनुकूल ही है। ऐसी थी वह महान् विभूति। मेरे लिये उनकी कोमल, विशुद्ध स्नेहिल भावनाएं हमेशा ही एक बहुत बड़े सम्बल में रहीं। मेरे सुख-दुःखों का वे बहुत अधिक ध्यान रखती थी, मैं चाहे कहीं भी रहा।

उनके प्रबुद्ध एवं उन्नत जीवन के प्रति यह छोटी-सी श्रद्धांजलि।

पूर्व सी.एम.ओ. (एम.डी.)
ऐस्कोर्टस् आयुर्वेदिक हॉस्पिटल,
फरीदाबाद

❑

उदात्त आदर्शो की धनी
श्रीमती प्रकाशजी (पी. अलिन्द)

वैद्य रामप्रकाश स्वामी आचार्य एम.ए.

राजस्थान प्रदेश, जहां वीरभूमि के रुप में प्रसिद्ध है, वहीं इसे सन्तों की भूमि के रुप में भी याद किया जाता है। सन्त दादूदयाल की यह कर्म भूमि रही है। निर्गुण सन्त परम्परा में श्री दादूदयालजी महाराज का विशिष्ट स्थान रहा है। इसी सन्त-नाम पर श्री दादूपंथी सम्प्रदाय की राजस्थान में जन कल्याणोपयोगी योजना की परम्परा रही है। इसी दादूपंथी सम्प्रदाय का विशिष्ट स्थान बीकानेर में है। इस स्थान पर आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा निरन्तर जन सेवा अन्नदान, गौरक्षा आदि विभिन्न प्रवृत्तियों के संचालन में, इस स्थान का महत्व रहा है। इस स्थान के अध्यक्ष वैद्य किशनदासजी महाराज थे। आपके उत्तराधिकारी श्री अलिन्दजी ने विधिवत आयुर्वेद का अध्ययन कर आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की और श्री दयालु फार्मेसी के नाम आयुर्वेद चिकित्सा और औषधि निर्माण के कार्य को आगे बढ़ाया।

श्री अलिन्दजी एक योग्य चिकित्सक एवं औषधि-निर्माण के रुप में कार्यरत हैं। आप विशिष्ट कारणवश स्थान से अलग हो गये और सुनारों के मौहल्ले में श्री दयालु फार्मेसी का कार्य स्थानान्तरित कर लिया। औषधि निर्माण के साथ निर्माण के उपयोगी मशीनों का भी निर्माण प्रारम्भ किया, आज दयालु फार्मेसी भारत-प्रसिद्ध फर्मो में मानी जाती है।

श्री अलिन्दजी ने जिन से विवाह किया, वे पंजाब से सम्बन्ध रखती थी और सम्भ्रान्त परिवार की पढ़ी-लिखी सुसंस्कृत लड़की थी। श्रीमती प्रकाशवतीजी ने अलिन्दजी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर, कार्यक्षेत्र में अपना पूर्ण योगदान किया।

दादूपंथी होने के नाते तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण अलिन्दजी से मेरा सम्पर्क रहा है। ऐसे बहुत कम अवसर रहे हैं जब मैं बीकानेर गया हूँ और आपसे मिलकर नहीं आया हूँ। जब-जब मैं उनसे मिलने गया, तब श्रीमती प्रकाशजी ने जिस आत्मीयता और स्नेह के साथ जो सम्मान दिया, उसकी अमिट छाप मेरे हृदयपटल पर अंकित है।

श्रीमती प्रकाशजी आज इस संसार में नहीं हैं, किन्तु वे यशःशरीर

से अब भी विद्यमान हैं। वे आधुनिक परिवेश में पली थीं और उच्च शिक्षा प्राप्त महिला थीं । वास्तव में वे एक आदर्श, सुसंस्कृत भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती थीं। वे एक मितभाषिणी महिला थी और उनके विचार अत्यधिक परिष्कृत थे। वे कम बोलती थी किन्तु जब कभी विषय पर चिन्तन प्रस्तुत करती थी तो ऐसा मालूम होता था कि अनुभवपूर्ण विचार प्रकट हो रहे हैं।

वे हृदय और रक्तचाप के विकारों से ग्रस्त होने पर भी स्थितप्रज्ञ के समान रहती थीं। उन्होंने अपना धैर्य कभी नहीं खोया, अपितु जब भी अलिन्दजी विचलित होते थे तो वे उनको ढ़ाढ़स बँधाती थीं। उनका प्रत्येक व्यक्ति के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार रहता था और सदा मर्यादित एवं प्रभावोत्पादक व्यवहार से वे मिलने वाले को अपने प्रति आकृष्ट करती थीं। वे कोमल हृदय की महिला थीं। उनमें सत्यं शिवं सुन्दरं का समन्वय देखने को मिलता था। वे हृदय से कोमल थीं तथा अनुशासनप्रिय थीं। उच्छृंखलता या अविनय उनको कतई स्वीकार्य नहीं था।

उनका अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व था, जिसकी छाप उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति पर अवश्य पड़ती थी और वह उनके प्रति सम्भाव का भाव रखता था।

आज उनका अभाव खटक रहा है। उनके उदात्त आदर्श एवं तद्नुकूल आचरण के लिये उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि के रुप में कोई जनहित कार्य स्थायी रुप से चलता रहे, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है।

मैं उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

पूर्व निदेशक,
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान,
जयपुर (राज.)

❑

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द :
एक सौम्य, निश्छल व्यक्तित्व

वैद्य ठाकुरप्रसाद शर्मा, आयुर्वेदाचार्य

शिक्षा, व्यक्ति को संस्कार-सम्पन्न बनाती है, मानवीय मूल्यों का बोध कराती है तथा उसे पात्रता प्रदान करती है। संस्कृत साहित्य की उक्ति प्रसिद्ध है-विद्या ददाति विनयं विनयाद् ददाति पात्रताम्। विद्या (शिक्षा) मनुष्य को विनम्र बनाती है और विनम्रता से पात्रता प्राप्त होती है। मनुष्य और पशु में यही तो अन्तर है। मनुष्य में विवेक है, सोचने-समझने की क्षमता है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का उसे ज्ञान है। उसकी बुद्धि विकासशील है। इसके विपरीत बल एवं निष्ठा में पशु मनुष्य से कहीं बढ़-चढ़ कर है। पशु की वफादारी में रंचमात्र भी संदेह नहीं किया जा सकता, जबकि मनुष्य सदैव आशंकाओं के घेरे से घिरा रहता है। फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से मनुष्य को श्रेष्ठतम कहा गया है। महाभारत के शब्दों में 'न हि मानवात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं।

मानवीय श्रेष्ठता, पात्रता, विनयशीलता और बौद्धिक चातुरी ये सब गुण शिक्षा से ही तो प्राप्त होते हैं और ऐसी शिक्षा एक सच्चे शिक्षक के माध्यम से ही मिलती है। 'गुरु बिन ज्ञान कहां तें पाऊँ' गुरु की इस गहन गरिमा का गुण-गान सर्वत्र देखने-सुनने में आता है।

माता-पिता से प्राणिमात्र का प्रादुर्भाव होता है। किन्तु उसकी शिक्षा-दीक्षा, उसका विकास शिक्षक द्वारा होता है। बचपन की शिक्षक, बालक की माता होती है। तत्पश्चात् गुरु उसके ज्ञान का सर्जक है, परिमार्जक है।

इस पृष्ठभूमि में मैं प्रकाशवतीजी के कर्तृव्य का स्मरण कर रहा हूँ। प्रकाशवतीजी सही अर्थों में सुयोग्य शिक्षक थीं। उनसे मेरा परिचय अपने अन्तरंग मित्र सहपाठी अलिन्दजी की सहधर्मिणी के रुप में था। वे राजस्थान बाल भारती में यावज्जीवन शिक्षा-दान करती रहीं। मैं राजस्थान बाल भारती में शिक्षार्थियों का मानद स्वास्थ्य-निरीक्षक था और भारतीय विद्या मंदिर, जो राजस्थान बाल भारती का संचालक भी है, की प्रवन्ध समिति का सदस्य भी था। इस नाते उनके शिक्षण एवं सौम्य स्वभाव से प्रभावित रहा। प्रबन्ध समिति में समय-समय पर शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों एवं प्रगति विवरणों का लेखा-जोखा जब होता था तो

प्रकाशवतीजी द्वारा बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा का प्रकाश सामने आता ही रहता था। वे अपना पूरा कार्यकाल समाप्त कर सेवानिवृत हुई।

उन्होंने अपने पुत्र चि. संदीप को अपने संरक्षण में रखकर संस्कार सम्पन्न किया। जब विश्राम का अवसर आया तो असाध्य रोग से ग्रसित होकर चल बसीं और छोड़ गई अपनी सौम्य सुरभि।

भाई अलिन्दजी का जीवन एकांकी हो गया। वृद्धावस्था में पत्नी ही अन्तरंग मित्र, सच्ची सेवक व कर्त्तव्यनिष्ठ सलाहकार होती है। संतति व परिवार के साथ वृद्ध को मर्यादा में रहना पड़ता है। सीमा-रेखा से घिरा जीवन स्वयं को भी अखरता है। महाकवि कालिदास ने महाराज अज के मुख से रानी इन्दुमती के स्वर्गारोहण पर जिस विलाप का सृजन करवाया है, वह कितना मार्मिक हैः

गृहिणी सचिवः सखीमिथः प्रियाशिष्या ललितेकलाविधौ
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किंन मे हृतम्॥

तुम मेरी स्त्री, सम्मति देने वाली मित्र, एकान्त की सखी, गान एवं ललित कलाओं में शिष्या थी। तुम्हीं बताओ मुझ से छीनकर निर्दयी विधाता ने मेरा क्या नहीं छीन लिया?

किन्तु राजस्थानी की कहावत है कि 'का तो दाळ पेली खूटै अर का रोटी, दोन्यूं साथै तो खूटणै सूं रैया।' तो यह अभाव तो एक न एक दिन होना ही था। मृत्यु अनिवार्य है, नैसर्गिक है। इसे विधि के विधान के रुप में स्वीकार करना ही पड़ता है।

प्रकाशवतीजी ने जीवनभर शिक्षा का दीप जलाया, प्रकाश फैलाया, इनकी स्मृति में स्थायी रुप से जनहित-कार्य होना चाहिये, यह मेरी कामना है।

पारीक चौक,
बीकानेर

प्रकाश दीदी के नाम मंझली बहन की वेदना

विधावती कंधारी

प्रिय दीदी।

आप जहां भी हैं मेरा प्रणाम स्वीकार करें।
आपकों इस लोक से गये हुए पूरा साल बीत गया, इस अंतराल में मैं आपको एक दिन के लिए भी नहीं भूल सकी, आपने तो एक बार भी पलट कर नहीं देखा कि आपके वियोग में मैंने कितने आंसू बहाए हैं। मैं जब भी बीकानेर जाती हूं आपको न देखकर बहुत उदास हो जाती हूँ। कण-कण में आपकी छवि दिखाई देती है, परन्तु आपके बिना सब सूना-सूना और घर वीरान लगता है।

माँ जी के चले जाने के बाद आपने माँ का प्यार दिया। मेरा दुःख-सुख समझा, अब किससे अपने मन की व्यथा कहूँ, कोई सुनने वाला भी नहीं।

आपकी गुड्डा आपको बहुत याद करती है, उसकी बातें सुनकर मन व्याकुल हो उठता है, कितने थोड़े समय में आपने उसको इतना समझदार बना दिया, आपके बिना वह बहुत अकेली पड़ गई है। अब आपके घर में जाकर कुछ भी अच्छा नहीं लगता। आपके बिना सुनसान और वीरान लगता है। मैं वो दिन कभी नहीं भूल सकती कि जब मैं मुक्तसर में बीमारी से ठीक नहीं हो रही थी तब आप मुझे बीकानेर लेकर आये और पी.बी.एम. होस्पिटल में भरती कराके, रात-रात भर जागकर आपने मेरी तीमारदारी की थी, स्वयं कष्ट उठा कर मेरा इलाज करवाया। बचपन से लेकर अब तक हर मुसीबत में आप काम आई, कितना कोमल हृदय था आपका कि आप किसी का दुःख देख नहीं सकती थी। परन्तु ऐसा कौनसा अपराध हो गया था मुझ से कि अंतिम समय मिल कर भी नहीं गयीं। मैं कैसे बताऊं कि आपके बिना मैं कितनी उदास हो जाती हूँ। आपके देहावसान की खबर सुनकर मन इतना व्याकुल हो गया था कि चाहा उड़कर आपके पास पहुँच पाऊं किन्तु असम्भव था। चाहती हूँ कि कुछ ऐसा करिश्मा दिखाओ कि मैं आपको भूल सकूं। तुम क्या जानो तुम्हारी याद में, हम कितने रोय-कितने रोये। अंत में, आप जहां भी हों मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आपकी मझली बहन

गीदड़ बाह (पंजाब)

❑

स्वर्गीया पाशी को स्नेहादर श्रद्धांजलि

गजानन वर्मा

सन् 1948 से 1960 तक मेरा बीकानेर में कार्यकाल रहा। एक ओर तो मैं वहां गंगाशहर रोड स्थित बाल भारती में अध्यापन कार्य करता दूसरी ओर प्रगतिशील लेखक संघ, सी पी एम, आलोक प्रकाशन एवं नई चेतना (द्वैमासिक पत्रिका) तथा (राजस्थान इप्टा) के लिये भी सक्रिय कार्य करता रहा। राजस्थान इप्टा का तो मैं संस्थापक सदस्य था और अपने काव्य, गीत, संगीत, नृत्य एवं नाट्य प्रवृतियों के कारण सदैव ही नगर के प्रबुद्ध एवं बुद्धिजीवी वर्ग से सम्मान पाता रहा। बतौर कवि-गीतकार के रुप में मैं तब तक प्रांत भर में स्थापित हो चुका था।

बाल भारती में प्रधानाध्यापिका पद पर उन दिनों जो महिला कार्यरत थीं वह प्रकाशवती अलिंद की बड़ी बहिन सत्यवती थीं जो अपने बाल बच्चों के साथ अपनी छोटी बहिन प्रकाश, बहनोई अलिंदजी के यहीं रहती थीं। उनके साथ ही शुरु में मेरा अलिंदजी व उनकी धर्म पत्नी प्रकाशवती तथा सत्यवती के बाल बच्चों से प्रथम परिचय हुआ। प्रकाशवती के पितृ पक्ष के अन्य सदस्य (भाई-बहिन) भी प्रायः जब तक बीकानेर आकर अलिंदजी व प्रकाशवती के घर ही ठहरते। अतः स्वाभाविक ही था कि परस्पर हमारा परिचय उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता गया।

अलिंद दंपत्ति दोनों ही अतिथि प्रिय, सीधे-सरल एवं व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी रहे। इसी से इतर समाज और पास पड़ौस में सदैव ही लोकप्रिय रहे। ये दोनों ही आधुनिक विचारों के थे। तथा मेरा घर-परिवार भी रतनगढ़ का प्रबुद्ध परिवार रहा है अतः हमारा पारस्परिक संबंध बड़ा कि मधुर रहा। अलिंदजी दादू-संत साहित्य के विद्वान, आयुर्वेदाचार्य रहे हैं और आज भी हैं। तो घर में प्रबुद्ध सहधर्मिणी प्रकाशवती भी पढ़ी-लिखी विदुषी महिला थीं। अतः फुरसत में हम परस्पर मिल

बैठते तो साहित्य, संगीत व काव्य कलापक्ष पर आये दिन विचार विमर्श चलता ही रहता। कहने का तात्पर्य यह कि दिन पर दिन इस सुलझे हुए परिवार से हमारा परस्पर पारिवारिक संबंध और गहराता गया।

सुहृदय अलिंद जी तो उम्र में मुझ से 2-3 वर्ष बड़े ही हैं, पर प्रकाशवती छोटी रहने के कारण सदैव हमारी स्नेहाधिकारिणी ही रही। स्नेह वश परिवार से जुड़े हम जो स्नेही-स्वजन थे, प्रकाशवती को 'पाशी' कह कर ही बुलाते थे। बीकानेर के अंतिम दो-एक वर्षो में ही शायद बाल भारती छोड़कर मैं गंगाशहर में नव संचालित बाल शिक्षण-संस्था विद्यानिकेतन में अध्यापन करने लगा। प्रकाश भी शायद उन्हीं दिनों बंधुवर सत्यनारायणजी पारीक एवं पंडित अक्षयचंद्रजी शर्मा प्रभृति साथियों द्वारा संचालित एवं संस्थापित राजस्थान बाल भारती में प्रधानाध्यापिका-पद पर कार्य करने लगी। अक्षयचंद्रजी शर्मा का इस नियुक्ति के लिए स्यात् विशिष्ट आग्रह था। प्रधानाध्यापिका हो जाने के बाद भी स्नेह-शीला पाशी के घर-परिवार का परिवेश बदला नहीं पर अपनी मूल भूत विशेषताओं के कारण और व्यापक होने लगा। निश्च्छल नारी का व्यक्तित्व का निखार और उसे स्कूली बच्चों से बेहद प्यार हो जाना स्वाभाविक ही था। बच्चों के अभिभावकों से भी अनहद प्यार सत्कार मिलता गया। जन-जन का सुयश मिला और शैक्षणिक एवं बौद्धिक विकास में वृद्धि हुई तो पाशी का प्रकाश घर-घर फैलता गया। उन्हीं दिनों संभवतः सन् 1958 में मेरी नियुक्ति नई दिल्ली स्थित जामिया मिल्लिया युनिवर्सिटी (ओखला) के रिसर्च-ट्रेनिंग एण्ड प्रोडक्शन सेंटर में नवसाक्षरों व प्रौढ-शिक्षण संबंधी सर्वेक्षण कार्य के लिए सर्वे पद पर हो गई और मैं बीकानेर छोड़कर दिल्ली चला गया। हिन्दी भाषी प्रांतों के सैंकड़ों गॉवों का भ्रमण करने के बाद सर्वे कार्य समाप्त हुआ तो जोधपुर का बुलावा आ गया। वहॉ संगीत नाटक अकादमी से संबद्ध संस्था राष्ट्रीय कला मंडल के कार्य वाहक सचिव पद पर नियुक्त होकर कुछ वर्ष कार्य करके बंबई चला गया। बंबई में रिमझिम व रितुरंग

स्वर्गीया पाशी को स्नेहादर श्रद्धांजलि

गजानन वर्मा

सन् 1948 से 1960 तक मेरा बीकानेर में कार्यकाल रहा। एक ओर तो मैं वहां गंगाशहर रोड स्थित बाल भारती में अध्यापन कार्य करता दूसरी ओर प्रगतिशील लेखक संघ, सी पी एम, आलोक प्रकाशन एवं नई चेतना (द्वैमासिक पत्रिका) तथा (राजस्थान इप्टा) के लिये भी सक्रिय कार्य करता रहा। राजस्थान इप्टा का तो मैं संस्थापक सदस्य था और अपने काव्य, गीत, संगीत, नृत्य एवं नाट्य प्रवृतियों के कारण सदैव ही नगर के प्रबुद्ध एवं बुद्धिजीवी वर्ग से सम्मान पाता रहा। बतौर कवि-गीतकार के रुप में मैं तब तक प्रांत भर में स्थापित हो चुका था।

बाल भारती में प्रधानाध्यापिका पद पर उन दिनों जो महिला कार्यरत थीं वह प्रकाशवती अलिंद की बड़ी बहिन सत्यवती थीं जो अपने बाल बच्चों के साथ अपनी छोटी बहिन प्रकाश, बहनोई अलिंदजी के यहीं रहती थीं। उनके साथ ही शुरु में मेरा अलिंदजी व उनकी धर्म पत्नी प्रकाशवती तथा सत्यवती के बाल बच्चों से प्रथम परिचय हुआ। प्रकाशवती के पितृ पक्ष के अन्य सदस्य (भाई-बहिन) भी प्रायः जब तक बीकानेर आकर अलिंदजी व प्रकाशवती के घर ही ठहरते। अतः स्वाभाविक ही था कि परस्पर हमारा परिचय उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता गया।

अलिंद दंपत्ति दोनों ही अतिथि प्रिय, सीधे-सरल एवं व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी रहे। इसी से इतर समाज और पास पड़ौस में सदैव ही लोकप्रिय रहे। ये दोनों ही आधुनिक विचारों के थे। तथा मेरा घर-परिवार भी रतनगढ का प्रबुद्ध परिवार रहा है अतः हमारा पारस्परिक संबंध बड़ा कि मधुर रहा। अलिंदजी दादू-संत साहित्य के विद्वान, आयुर्वेदाचार्य रहे हैं और आज भी हैं। तो घर में प्रबुद्ध सहधर्मिणी प्रकाशवती भी पढ़ी-लिखी विदुषी महिला थीं। अतः फुरसत में हम परस्पर मिल

वैठते तो साहित्य, संगीत व काव्य कलापक्ष पर आये दिन विचार विमर्श चलता ही रहता। कहने का तात्पर्य यह कि दिन पर दिन इस सुलझे हुए परिवार से हमारा परस्पर पारिवारिक संवंध ओर गहराता गया।

सुहृदय अलिंद जी तो उम्र में मुझ से 2-3 वर्ष वड़े ही हैं, पर प्रकाशवती छोटी रहने के कारण सदैव हमारी स्नेहाधिकारिणी ही रही। स्नेह वश परिवार से जुड़े हम जो स्नेही-स्वजन थे, प्रकाशवती को 'पाशी' कह कर ही वुलाते थे। वीकानेर के अंतिम दो-एक वर्षो में ही शायद वाल भारती छोड़कर मैं गंगाशहर में नव संचालित वाल शिक्षण-संस्था विद्यानिकेतन में अध्यापन करने लगा। प्रकाश भी शायद उन्हीं दिनों वंधुवर सत्यनारायणजी पारीक एवं पंडित अक्षयचंद्रजी शर्मा प्रभृति साथियों द्वारा संचालित एवं संस्थापित राजस्थान बाल भारती में प्रधानाध्यापिका-पद पर कार्य करने लगी। अक्षयचंद्रजी शर्मा का इस नियुक्ति के लिए स्यात् विशिष्ट आग्रह था। प्रधानाध्यापिका हो जाने के वाद भी स्नेह-शीला पाशी के घर-परिवार का परिवेश बदला नहीं पर अपनी मूल भूत विशेषताओं के कारण और व्यापक होने लगा। निश्छल नारी का व्यक्तित्व का निखार और उसे स्कूली वच्चों से वेहद प्यार हो जाना स्वाभाविक ही था। बच्चों के अभिभावकों से भी अनहद प्यार सत्कार मिलता गया। जन-जन का सुयश मिला और शैक्षणिक एवं वौद्धिक विकास में वृद्धि हुई तो पाशी का प्रकाश घर-घर फैलता गया। उन्हीं दिनों संभवतः सन् 1958 में मेरी नियुक्ति नई दिल्ली स्थित जामिया मिल्लिया युनिवर्सिटी (ओखला) के रिसर्च-ट्रेनिंग एण्ड प्रोडक्शन सेंटर में नवसाक्षरों व प्रौढ-शिक्षण संबंधी सर्वेक्षण कार्य के लिए सर्वे पद पर हो गई और मैं वीकानेर छोड़कर दिल्ली चला गया। हिन्दी भाषी प्रांतों के सैंकड़ों गॉवों का भ्रमण करने के बाद सर्वे कार्य समाप्त हुआ तो जोधपुर का बुलावा आ गया। वहाँ संगीत नाटक अकादमी से संवद्ध संस्था राष्ट्रीय कला मंडल के कार्य वाहक सचिव पद पर नियुक्त होकर कुछ वर्ष कार्य करके बंबई चला गया। बंबई में रिमझिम व रितुरंग

नाम से कला-संस्थायें स्थापित की और बारह मासा, सुहागरात जैसे अपने नृत्य नाटकों का वृहद् पैमाने पर मंचन किया पर यायावरी ने साथ नहीं छोड़ा तो बंबई छोड़ दी और कलकत्ते चला गया। डा. भूपेन हज़ारिका (दादा साहब फाल्के एवार्ड विनर) जैसे मित्र के आग्रह पर फ़िल्मों के लिए गीत लिखे गये और नृत्य सम्राट उदयशंकर अमलाशंकर के सहयोग से अपने नृत्य नाटकों का मंचन किया। अपनी एक लघु फिल्म भी बनाई- हल्दी को रंग सुरंग।

जीवन की इस भाग दौड़ में मैं सब कुछ भूल सा गया। न किसी को मैंने याद किया और न किसी ने मुझे याद किया पर गत एक दशक से मैं वापस घूम फिर कर अपने घर रतनगढ़ आ बैठा हूँ बंधुवर अलिंद जी का गत वर्ष जून (1997) के प्रथम सप्ताह में एक पत्र मिला। उन्हें पता नहीं था कि मैं रतनगढ़ में हूँ। मैं जहाँ कहीं भी हूँ वे मेरा पता ढूंढ रहे थे। मैंने उन्हें लिखा कि स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है, अतः मैं अब रतनगढ़ ही पिछले एक दशक से रहने लगा हूँ। मेरा पत्र पाकर अलिंद जी ने मुझे फ़ौरन पत्रोत्तर से यह दुःखद समाचार दिया कि पाशी अब हमारे बीच नहीं है और 22 मई, 1997 को स्वर्ग सिधार गई।

बंधुवर अलिंदजी के पत्र आते ही भावाभिव्यक्ति के निमित्त एक न एक गीत लिखा जाता रहा है जो इस स्मारिका में प्रकाशित हैं। उस दिवंगता के प्रति एक स्नेही-स्वजन की यही श्रद्धांजली है।

चित्रकला भवन,
रतनगढ़ (राज.)

❑

प्रकाशवती अलिन्द शब्दों में तो अब भी हो साकार

हरीश भादाणी

प्रकाशवती जी के न होने की सूचना एक आलपिन-सी उतरती हुई मेरे आगे का एक पर्दा दो फाड़ कर देती है और मैं देखने लगता हूँ-56-57 का मेरा संसार......

हवेली वालों से पढ़ाई, साहित्य, आन्दोलन जैसी वातों पर विग्रह रहा, इस कारण चुल्हा अलग मंडा? नाराज हवेली से जो मिलता रहा वह नाकाफी ही रहता, जुगत खोजनी पड़ी। समाजवादी साथी पाण्डियाजी ने कहा-'कल राजस्थान वाल भारती आ जाना।'

मैं राजस्थान बाल भारती में हूँ।

"पांडियाजी नहीं हैं क्या?"

"वे तो आज नहीं आएंगे...........?"

मैं कुछ उदास-सा बिन बोले लौटने को होता हूं तभी "आपको बुलाया था क्या उन्होंने?"

"मुझे तो ठीक दस बजे पहुंचने को कहा था.........."

"फिर तो उन्होंने पढ़ाने को ही बुलाया होगा........" कहते-कहते कुर्सी में से एक भव्य आर्य देह-यष्टि शिखर सी उठ खड़ी होती है, मैं हत्प्रभ हूं, देखता-सा। "आओ, वह क्लास खाली है। आज कई टीचर नहीं हैं। इसे सम्हालो, पांडिया जी से तो बात कल ही हो सकती है। आज तो स्कूल में मैं और शान्ति ही हैं। कैसे सम्हालें इतनी सारी क्लासें........। सुनो बच्चों, *आज तुम्हें ये पढ़ायेंगे........., और यह जा.........वो जा..........*"

ऐसी अनौपचारिकता से पहली बार साबका पड़ा, बड़ी हवेली बाहर किए गए समाजवादी टहलुए कवि की, जुगत जुट गई की खुशी में ओजरी को चाय से ही भरकर पहुँचा था। टन, टन, टन, टन, टन टन के बाद

लम्बी टन न् न् न्........बच्चों की टोलियां मैदान में, मैं ऑफिस में, शान्ति ने टिफिन खोला है। "शान्ति, इनसे मिलो तो, क्या नाम बताया आपने। लो मैंने नाम तो पूछा ही नहीं, आप कवि हैं, इतना जानती हूं और कवि लोग इतना जल्दी खाना नहीं खाते, आओ बैठो, ये टिफिन शेयर करें........."

इस अनौपचारिक व्यवहार से हड़वड़ाया होकर भी चपाती उठा ही लेता हूँ, पेट से अबोले तकाजे हरकत करवा ही देते हैं। यूं हुआ अनौपचारिक परिचय।

एक दिन एक बहन मेरे घर आकर थाली घनघना जाती है, "घर में एक हथौड़े वाला ओर हुआ........" मैं राजस्थान बाल भारती की हैडमिस्ट्रेस को सूचना देता हूं। हैडमाटस्टरनी की जगह निदेशक अस्पताल में मौजूद। मुझे बधाई दी और पत्नी को निर्देश देकर चली गई।

हवेली ने तीसरी पीढ़ी देखते ही फिर अपनी पिरोल खोल दी। अव स्कूल में उपस्थिति कम से कमतर और अव मैं पिरोल में से होता हुआ कॉलेज में। नारे, जुलूस, चुनाव, खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ समय दौड़ता रहा, स्कूल छूट गया, कभी-कभार का मिलना पर उनके चेहरे पर वही निदेशकीय भाव।

अव कभी क्यों, कई वार सोचता हूँ मेरी भाषा की रचत रंग में उनके वेवाक अपनेपन की एक अहम् भूमिका रही है। मुझे स्वीकारना चाहिये कि दो ढाई वर्ष की छोटी-सी साथ संगत ने चार दशक संवारे। यूं कहूं, अव भी संवारे ही हैं।

एक वेटी सांसद वनी-लम्बे दस्ती, उस भव्य देही ने ही इसके लिये छोटे से मौजे वुने थे, वधाई दी पर मुद्रा वही, जैसे किसी छोटे को परोटना हो।

उनके जीवनसाथी अलिन्दजी मेरे संन्यासी पिता के परिचितों में रहे। कई वार कितावें पढता हुआ, गीत-कविताएं रचता-वांधता सोचने लगता

हूं-इस प्रकार की निस्संग संगत, भले उसकी भौतिक उम्र बहुत छोटी हो, पर भाव स्वयं में न गिनी जा सकने वाली सांस तक जुड़ी रहती है।

इस तरह की निस्संग संगत ने ही कहा-हर अनुभव सीख लेना क्यूं जरुरी है? सो व्यावहारिक रुप से मैंने "अनपढ़" रहना ही उचित समझा। इस तरह न सही, राजपथ का एक खास हिस्सा तो देख ही लिया।

स्कूल के दिनों में चाय का कोटा भी 25-30 प्यालियां रहता रहा है। अब तो दिन में तीन-चार प्याली ही चाय पीता हूं पर रचना के क्षणों में अपने दड़बे में जब भी पीने लगता हूं, कई बार एक डांट भर आवाज सुन लिया करता हूं, विज्ञान हमें बतलाता है न, आवाज कभी नहीं मरती। केशव (स्कूल का कर्मचारी) तुम्हें कितनी बार मना किया है, भादाणी जी के लिये चाय बार-बार मत लाया करो......." इन शब्दों में उस भव्य देही के लिये कोई एक विशेष संज्ञा तक न खोज पाने में कितना अनपढ़ मैं? समय के कई-कई गुणकों पर खड़ी चार दशक से भी ऊँची हुई यह दीवार, पर समय के ढ़ाई गुणक कितने वजनी और किस आकर-रंग के रहे, यह बताने वाली भाषा अब कहाँ सीखूँ, किससे सीखूँ।

बस स्मृति भाव से मन और आँख के आकाश को सींचता रहूं, स्मृति-शेष के रुप-अरुप को संजोता हुआ-

छबीली घाटी,
बीकानेर

स्मृति-शेष

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

प्रकाशवती जी से मेरी छोटी-छोटी कई भेंटें हुई। इन भेंटों में मैंने महसूस किया कि वे अत्यन्त सहृदय, व्यावहारिक और मिलनसार हैं। आगन्तुक की वह खुले दिल से आवभगत करती थी। मुझ से तो वे प्रायः साहित्यिक चर्चाएं करती थीं। मेरी प्रकाशित कहानी व उपन्यास पर भी उन्होंने कई बार चर्चाएं की। उनमें साहित्यिक अभिरुचि थी। कहना चाहूँगा कि वे छोटी-सी मुलाकात में भी सम्मोहित कर डालती थी। उनमें एक पूर्ण व्यक्तित्व था। मुझे उनकी बातचीत का सलीका बहुत प्रसंद था।

आज वे हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी यादों के दायरे कभी-कभास हमें जीवन में घेरते रहेंगे। मेरी उन्हें श्रद्धांजलि है।

विख्यात साहित्कार,
हिन्दी व राजस्थानी, नयाशहर,
बीकानेर

❑

बाल-मन की ज्ञाता
श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

प्रो. अमीनुद्दीन

श्रीमती प्रकाशवती मेरे तीन बच्चों और बच्चियों की शिक्षिका रहीं। मेरी पहली मुलाकात उनसे उस समय हुई, जब मैंने मेरे बड़े बच्चे को राजस्थान बाल भारती में प्रवेश दिलाया। उस समय बाल भारती में हमारे घर की तरफ बस की व्यवस्था नहीं थी। जब मैंने अपने छोटे लड़के व लड़की को प्रवेश दिलाया तो मैंने पाण्डियाजी से अनुरोध किया कि ये बच्चे पाठशाला तभी आ सकते हैं, जब इनके लिये बस की व्यवस्था हो। जिस जगह मैं रहता था, वहाँ बहुत भीड़ होती थी और बस को मोड़ने के लिए भी स्थान नहीं था। किन्तु श्रीमती प्रकाशवती ने न जाने क्यों, मेरे इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया। इस घटना ने मुझे बहुत प्रभावित किया कि वे माँ-बाप की कठिनाई व बालक-बालिकाओं का कितना ध्यान रखती थीं। बस में ड्राइवर के पास आगे हमेशा स्कूल जाते व आते समय वे बैठी होती थीं। बच्चे बड़े ही स्नेह से अनुशासन बद्ध बस में बैठते व बस से उतरते थे। मजाल है कि कोई बालक किसी प्रकार से कोई धींगामस्ती करे। प्रकाशवतीजी केवल देखती रहती थीं। कितना अनुशासन था उनका और आदर था बालक-बालिकाओं के मन में। कभी भी कोई बच्चा पंक्ति को तोड़कर बस में चढ़ना चाहे या उतरना चाहे तो वे पंक्ति तोड़कर ऐसा नहीं कर सकते थे।

जब मेरे बड़े बच्चे ने पढ़ाई में कुछ अरुचि दिखाई, कक्षाओं में अनुपस्थित रहने लगा तो मैंने उनसे सम्पर्क स्थापित किया और उनसे परामर्श किया कि इस बच्चे को कैसे सुधारा जाये। उन्होंने यही परामर्श दिया कि बच्चे को स्कूल से उठा लिया जाये, क्योंकि वह यहाँ काफी भयभीत हो गया है और अपना अध्ययन जारी नहीं रख सकता है। उनका

परामर्श कितना सही था कि जब बच्चे को वहाँ से हटा लिया गया तो वह एक अच्छे विद्यार्थी के रूप में अध्ययन करने लगा। मैं प्रकाशवती जी का ऋणी हूँ कि अगर वे मुझे इस प्रकार का परामर्श नहीं देती तो मैं यह अन्दाजा नहीं लगा सकता कि मेरे बड़े बच्चे का भविष्य क्या होता?

मेरे दोनों छोटे बच्चे व बच्चियाँ उनसे बहुत प्रभावित थे। एक बार एक ऐतिहासिक घटना को लेकर मेरे व मेरी बच्ची के बीच में एक मतभेद उत्पन्न हुआ। मैंने अपनी बात को स्वीकार कराने के लिए बच्ची पर जोर डाला। किन्तु बच्ची ने मेरी बात मानने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि पापा, आप जो भी कहें, मैं बात वहीं मानूँगी जो मेरी प्रकाश मैडम ने बताई हो। इससे पता लगता है कि बच्चों के दिल में उनका कितना सम्मान था कि वे पिता की अवहेलना कर सकते हैं, किन्तु अपनी शिक्षिका की नहीं। काश, आज की नई पीढ़ी में ऐसे गुरुजन मिलें, जो अपने चरित्र और सौजन्य से विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रभावित कर सकें।

प्रकाशवतीजी के लड़के ने जब डूँगर कॉलेज में प्रवेश लिया तो उन्होंने मुझे सिर्फ यह कहलाया कि अब तक मैंने आपके बच्चों का ध्यान रखा है, किन्तु अब आपकी जिम्मेवारी है कि मेरे बच्चे का आप कॉलेज में ध्यान रखें। मैंने उनसे निवेदन किया कि मैं कला का विद्यार्थी हूँ, जबकि बच्चा विज्ञान का छात्र है। मैं उसके शैक्षणिक कार्य में क्या योगदान दे सकता हूँ। हाँ, कॉलेज के प्रांगण में वह मेरे पुत्र के समान है और उसे किसी प्रकार की कुछ भी कठिनाई नहीं आयेगी। उनके पुत्र संदीप ने मुझे गुरुतुल्य ही सम्मान दिया और अपनी शिक्षा कॉलेज में पूरी की।

समय के साथ-साथ ही मेरे सम्बन्ध उनसे ओर अच्छे.हो गये। मुझे बादमें पता लगा, जिसका मुझे अब तक पता नहीं था कि वे हमारे

वैद्यजी महाराज (अलिन्दजी) की धर्मपत्नी हैं। वैद्यजी महाराज, मेरे दोस्त के बहुत ही नजदीकी दोस्त हैं और सेवानिवृति के बाद प्रकाशवतीजी की बीमारी, उनके देहावसान इत्यादि के बारे में मुझे दुःख के साथ समाचार मेरे दोस्त के माध्यम से मिला । मुझे खेद है कि मैं सेवानिवृति के बाद उनसे नहीं मिल सका। ऐसी पवित्र आत्मायें बहुत ही कम पैदा होती हैं जो अपने विद्यार्थियों के जीवन को बनाने में बहुत सक्रिय रहती हैं और आखिर तक उनकी सफ़लताओं की कामना करती हैं। आज भी मेरे बच्चे उनको बहुत याद करते हैं। लेकिन इसके अतिरिक्त इस संसार में हम स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिए और कुछ कर भी क्या सकते हैं?

मैंने ये टूटे-फूटे विचार लिपिवद्ध कर दिये हैं और इन्हीं विचारों से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिसमें मेरा परिवार भी सम्मिलित है। ईश्वर से कामना करता हूँ कि प्रकाशवतीजी का परिवार फले-फूले।

सेवानिवृत्त इतिहास विभागाध्यक्ष,
डूँगर कॉलेज,
बीकानेर

❑

अक्षय प्रेरणा की स्रोत

डॉ. कालीचरण माथुर

श्रीमती प्रकाशवतीजी से मेरा परिचय आज से 38 वर्ष पूर्व 'राजस्थान बाल भारती' की एक प्रमुख अध्यापिका के रुप में हुआ, जब अपने बच्चों को उस संस्था में प्रवेश दिलवाने गया था। उसके बाद कई वर्षो तक उस संस्था के माध्यम से उनसे मिलना होता रहा, क्योंकि मेरे चारों बच्चे एक लम्बी अवधि तक उस संस्था के विद्यार्थी रहे।

मधुर भाषी, हँसमुख, अपने कार्य में संलग्न अध्यापिका के रुप में उन्होंने अभिभावकों को प्रभावित किया। बच्चों के द्वारा समय-समय पर यह विदित होता रहा कि अनुशासनप्रिय होते हुए भी, बच्चों के मन में उनके लिये जहॉ डर था, वहीं सम्मान भी था, और अध्यापकों में तो उनकी अपनी अलग पहचान थी।

बाद में भी प्रकाशवतीजी से मेरी भेंट समय-समय पर एक चिकित्सक के नाते, किसी न किसी के उपचार के सम्बन्ध में, होती रही। मंद मुस्कान ही उनकी पहचान थी, और सौम्यता उनकी विशेषता थी।

सादुलगंज,
बीकानेर

❑

श्रीमती प्रकाशवती के साथ अविस्मरणीय क्षण

वैद्य रामानन्द स्वामी आयुर्वेदाचार्य

सन् 1985 की वसन्त ऋतु में मेरा और दादू समाज के प्रसिद्ध सन्त श्री जोधादास जी महाराज का नेताजी काशीराम जी अग्रवाल के साथ दादू सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक श्री दादूजी महाराज का लीलाधाम, गेटोलाव, दौसा के स्मारक बनाने हेतु सहयोग के लिए बीकानेर दयालु फार्मेसी जाना हुआ। घर पहुँचने पर सर्वप्रथम प्रकाशवतीजी ने आगे आकर हमारा बहुत ही आदरपूर्वक आतिथ्य-सत्कार करके भारतीय दर्शन के "अतिथि देवोभव" का दिग्दर्शन कराया। उनके इस व्यवहार से यह पूर्वाभास हो गया कि हमें पुण्य धार्मिक कार्य में इनका समुचित योगदान मिलेगा।

वातचीत के दौरान आपने सहर्ष मुँहमाँगी 1101/-रुपये की राशि तुरन्त प्रदान की एवं सायंकाल भोजन के लिए पुरजोर आग्रह किया। इनके प्रेम के आगे स्वीकृति देनी ही पड़ी। भोजन की तैयारी होते-होते भंवरलालजी सोनी को भी बुला लिया और उन्हें आर्थिक सहयोग करने को कहा। सोनीजी दादू समाज के नहीं होते हुए भी, बिना देखे, केवल समाजसेवी महिला के आदेश का पालन करते हुए उन्होंने 501/- रुपये की राशि प्रदान की।

भोजन हो चुका, किन्तु प्रकाशवती जी को इतने से ही सन्तुष्टि नहीं हुई। उन्होंने महाराज को बीकानेर की बहुत ही सुन्दर कीमती ऊनी शाल एवं 101/-रुपये भेंट स्वरुप प्रदान किये। उनकी मुखाकृति से यह स्पष्ट लक्षित हो रहा था कि इतना करने के उपरान्त वह आत्मसंतोष का अनुभव कर रही थी। हम भारतीय संस्कृति के पोषक विचारधाराओं की उस सजीव मूर्ति को कभी भी नहीं भुला सके। इस कलिकाल में ऐसी भारतीय सभ्यता का मिलना, एक अनुपम उदाहरण ही है।

इनके देहान्त से हमें मार्मिक वेदना हुई, मेरी सादर श्रद्धांजलि-

श्री दादूलीला धाम,
गेटोलाव, दौसा (राजस्थान)

❑

मेरी भाभी-माँ और गुरु प्रकाशवती अलिन्द

मूलचन्द सोनी

22 मई 1997 का दिन मेरे लिए सब से दुःखद दिन था। उस दिन मैंने जो खोया वह इस जीवन में कभी प्राप्त नहीं हो सकेगा।

मेरा सम्बन्ध भाभी-माँ का था लेकिन उससे भी बढ़कर सम्बन्ध था गुरु का। आज मैं जो कुछ हूँ, उन्ही की दी हुई ममता-स्नेह व शिक्षा के कारण समाज में सिर ऊँचा करके चलता हूँ। जब मैं चार या पाँच साल का था तभी से उनके सान्निध्य में था, और सतावन साल की उम्र तक उनसे हर रोज कुछ न कुछ ज्ञान पाता ही रहा हूँ, किंतु आज अचानक क्रूर नियति ने मुझे उस स्नेह और ममता से सदा-सदा के लिए वंचित कर दिया। मैंने उनके निकट रह कर देखा और समझा तो यही लगा कि उनका शिक्षा के प्रति रुझान इतना अधिक था कि घर में काम करने वाले नौकरों को नौकर न समझ कर उन्हें शिक्षित किया तथा अपने मिलने वाले या अन्य, जो भी उनके सम्पर्क में पढ़ने आये, उन्हें पढ़ाने के अतिरिक्त अच्छी नौकरियाँ दिलाने तक की मदद की। उन्होंने कभी ट्यूशन नहीं की।

अपने छोटे भाई-बहिनों को उच्च शिक्षा की प्रेरणा दी और उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में स्थापित होने में मदद की।

कहते हैं कि अपने लिए तो सभी करते हैं परन्तु दूसरों के लिए करना ही करना कहलाता है। इस कहावत को भाभी ने सही रुप में कार्यरुप दिया था। स्वास्थ्य नरम रहते हुए भी, स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए सम्पूर्ण सामाजिक दायित्वों को भली प्रकार निभाया। उनके साहस, हिम्मत और कर्तव्य की दो घटनाएं लिख रहा हूँ।

एक रात को उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई थी। सभी लोग

जाग रहे थे। दवाइयाँ-इंजेक्शन आदि दिये जा रहे थे। उस रात मैं भी वहीं पर था। रात को चार बजे के लगभग उनका स्वास्थ्य सुधार पर आ गया और उन्हें नींद आ गई। नींद आने पर मैं अपने घर जाकर सो गया। उस दिन सुबह छह बजे मुझे बहुत जरुरी काम पर जाना था, लेकिन सुबह चार बजे सोने के कारण मेरी आंख बहुत देर बाद खुली। जहाँ काम पर जाना था, वहाँ न पहुंचने के कारण वे लोग घर आ गये और कहने लगे कि आज आये क्यों नहीं? मैंने कहा कि रात भाभी का स्वास्थ्य खराब हो गया था। रात भर जागता रहा। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखकर कहा-हमें ही बेवकूफ बना रहे हो। भाभीजी को हमने सुबह आठ बजे स्कूल-बस में जाते देखा है और आप कह रहे हैं कि मैं रात भर जागता रहा। मुझे बहुत हैरानी हुई कि ऐसा कैसे हो सकता है। मैंने भाई साहब के घर जाकर मालूम किया तो उन्होंने कहा कि "मैंने उन्हें स्कूल जाने से मना किया था किन्तु वह कहने लगी कि अब मैं स्वस्थ अनुभव कर रही हूँ तो बच्चों की पढ़ाई की हानि क्यों हो?" इस बात से मुझे शिक्षा मिली कि कर्तव्य को धर्म समझकर करना चाहिए।

दूसरी घटना इतनी डरावनी थी कि बड़े-बड़े निडर कहलाने वाले भी भयभीत रहने लगे थे। यह घटना लगभग 78-79 की है। किन्हीं दुष्ट व्यक्तियों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए तान्त्रिक प्रयोग करवाए थे। घर में कांच की गोलियाँ, लोहे की गोलियाँ, पत्थरों की बारिश होना, ट्यूबलाइट अपने स्थान से निकल कर बाहर आकर फूट जाना, बल्ब फूट जाना, सामान का गायब हो जाना, देखते-देखते जूते जमीन से अपने आप उछल कर पेड़ पर टंग जाना, बोतलें 50-60 फुट तक अपने आप उछल कर दूर जाकर गिर जाना आदि अनेक प्रकार की घटनाएँ सब के सामने भी होती रही, पुलिस के सामने भी चलती रही। स्थानीय अखबारों में भी ये घटनाएँ छपती रही थी।

ऐसी भयोत्पादक घटनाएँ घर में घटित होते हुए भी भाभी निडर रहीं। जबकि रिश्तेदार एक बार आकर दुबारा आने का साहस नहीं जुटा पाये। इतने विशाल मकान में रात के समय भी भाभी को कभी-कभी अकेले रहना पड़ जाता था। शाम को संदीप पढ़ने चला जाता और भाई साहब दुकान से 9 बजे आते थे। तब तक भाभी अकेली रहने का साहस करती थी। दिन में तो प्रायः सभी रहते थे। बात रात के समय की थी। यह तांत्रिक प्रयोग असफल रहा। भाभी को यह निडरता अपनी माँ से विरासत में मिली थी। इनकी माँ बहुत निडर और कर्मठ थीं। माँ का नाम सरस्वती था। संभवतः इसी कारण देवी सरस्वती की इस बेटी पर पूर्ण कृपा रही।

भाभी की भावुकता भाभी भावुक भी बहुत थीं। अपने भाई-बहनों तथा उनके बच्चों को कभी कोई कष्ट हो जाता तो उन्हें बहुत दुःख होता। उनकी तकलीफों का निराकरण करने की ये पूरी-पूरी कोशिश करती थी। यहाँ तक कि अपने घर लाकर उनकी चिकित्सा करवाती थी।

भाभी का व्यक्तित्व संतोष नाम की लड़की उनके घर पढ़ने आती थी। उसने एक दिन बताया कि मेरी माँ कहती हैं कि जिन बहनजी से तूँ पढ़ने जाती है, जब मैं जवान थी तब इस मोहल्ले में काम करने आती थी। उन दिनों मैं उन्हें घर से निकल कर स्कूल की गाड़ी में बैठ कर जाने तक मैं बराबर देखती थी। उन्हें देखने के लिए घर से जल्दी से जल्दी आती थी। किसी दिन उन्हें देख नहीं पाती तो मुझे दिनभर चैन नहीं पड़ता था। यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा।

भाभी का अध्ययन छुट्टियों के दिनों में मैं देखता था कि उच्च कोटि के लेखकों के उपन्यास, इतिहास, कविताएँ तथा सभी धर्मों के ग्रन्थों का अध्ययन करती रहती थी। गीता का ज्ञान उन्होंने अपने कर्म में उतारा था।

स्कूल से रिटायर होने के बाद भी 15 अगस्त व 26 जनवरी को इन्हें स्कूल से गाड़ी भेजकर बुलाते थे। वहाँ जाते ही बच्चे उन्हें चारों ओर से घेर लेते थे और कहते थे कि बड़ी मैडम-बड़ी मैडम, क्वीन मैडम-क्वीन मैडम आई हैं। इतना प्यार था बच्चों का उनके प्रति।

भाभी को कई बार भविष्य में घटित घटनाओं का भी आभास हो जाता था। उन्हें अपने पिताजी के स्वर्गवास का आभास पहले ही हो गया था। ऐसी और कई घटनाएँ उन्हें पूर्व में ही संकेत दे जाती थीं। अपने देहावसान के बारे में भी उन्हें पूर्व-आभास हो गया था।

भाभी में अनेक गुण थे।

भाभी के चरणों में मेरा शत्-शत् प्रणाम।

इलैक्ट्रीशियन
सोनारों का मोहल्ला,
बीकानेर

❑

मेरी मुंह बोली दीदी-प्रकाशवती अलिन्द

सरोज मिश्रा

आज भी जब उन क्षणों को याद करती हूँ तो आंखे नम हो जाती हैं। प्रेम व स्नेह का संगम, जो उनके व्यक्तित्व में देखने को मिला, वह अद्भुत, चिरस्मरणीय है।

मेरी उनसे पहली मुलाकात सन् 1959 में हुई, जब उन्होंने मुझे राजस्थान बाल भारती में अध्यापिका के पद पर नियुक्ति दी थी। उस क्षण से ही मैं उनके व्यक्तित्व की ओर आकर्षित हो गई थी। जो भी उनसे एक बार मिलता था, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। वह बहुत मेधावी कुशाग्रबुद्धि की धनी थीं। इसी व्यक्तित्व के कारण उनकी पूरे बीकानेर के शिक्षा-क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान थी।

भारती में कार्यरत हमारे सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ हो गये थे कि प्रधानाध्यापिका के पद व अध्यापिका के पद की दूरियाँ खत्म हो गई थीं। मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य कम समय ही मिल पाया, क्योंकि मेरे विवाह-सूत्र में बँधने के कारण मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी। मेरे विवाह-समारोह में उनका पूरा सहयोग रहा। मेरे विवाहोपरान्त उन्हें चिन्ता थी कि मैं अपने ससुराल में आराम से हूँ या नहीं। यह जानने के लिए वे मुझे देखने मेरे ससुराल हनुमानगढ़ आईं। वह क्षण मुझे अब भी याद है। ऐसी ममतामयी दीदी अब कहाँ मिले।

समय बीतता गया..........मेरे बड़े पुत्र मुकेश को तो वे इतना प्यार करती थीं कि उसे अपने घर प्रायः ले जाती थीं। मुकेश के विवाह तथा मेरे दूसरे पुत्र के विवाह पर दीदी की उपस्थिति एक पारिवारिक सदस्य के रुप में रही।

उनके आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मेरा पूरा परिवार शोक में डूब गया। यह एक मेरी व्यक्तिगत ऐसी क्षति है, जिसे कोई पूरा नहीं कर सकता। बस, मैं यही कह सकती हूँ।

"वेदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला दो।"

राजेन्द्र कुटीर, पुरानी गिन्नाणी,
बीकानेर

❑

आदरणीय मैडम

उर्मिला तिवारी

प्रकाशवतीजी से मेरा सम्बन्ध 1969 में राजस्थान बाल भारती में जब मैं अध्यापिका-पद पर नियुक्त हुई, तब हुआ था। उनके व्यक्तित्व से मैं बहुत प्रभावित थी। वे बहुत ही सरल और बुद्धिमती महिला थी। मुझे कभी भी किसी व्यक्तिगत समस्या का अनुभव होता तो मैं सहज रुप से उनसे सलाह और मदद प्राप्त कर लेती थी, क्योंकि वे बहुत ही व्यावहारिक और संवेदनशील थीं। एक शिक्षिका के रुप में भी प्रकाशवती जी बहुत ही सुलझी हुई थी। बच्चे उनसे बहुत ही स्नेह रखते थे। मेरी दोनों बच्चियाँ भी इसी स्कूल में अध्ययन करती रही थीं और वे अब डॉक्टर हैं। वे दोनों प्रकाशवतीजी से बहुत स्नेह व आदर भावना रखती हैं। बाल भारती परिवार ने उन्हें खोकर अपना शुभेच्छु और नींव के पत्थर के समान कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया।

अध्यापिका राजस्थान बाल-भारती,

बीकानेर

❑

मेरी मार्गदर्शिका:प्रकाशवती अलिन्द

सोमलता गुप्ता

परमपिता परमेश्वर की माया का पार पाना असम्भव है। वह क्या चाहता है, किसी को पता नहीं होता-किस का मिलन और किस का विछोह? मानव सोचता है कि काम तो मैंने ही किया है, पर करने-न करने वाली कोई और ही पराशक्ति है।

मेरे जीवन की भी ऐसी ही आश्चर्यजनक घटना है। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी महान् विभूति से सम्पर्क होगा। बात 1976 ई. की है। मुझे राजस्थान बाल भारती स्कूल में सहायक शिक्षिका का पद मिला। मेरा पहला ही दिन था। मैं कार्यलय में पहुँची। थोड़ी ही देर पश्चात् एक गौरवर्ण मुस्कुराता चेहरा मेरे सामने आया। मैं वरबस ही उन्हें देखकर खड़ी हो गई। उन्होंने बड़े ही मीठे और सम्मान भरे शब्दों में कहा-अरे........बैठो। मैं बैठ गई और फिर वे मुझ से बोली, 'चलो तुम्हारी कक्षाएँ दिखा दूँ।' बस यहीं से वह मेरी निर्देशिका या पथप्रदर्शिका बन गई। उस दिन मध्यान्तर में जब खाना खाने बैठे तो मुझे भी उधर बुला लिया। मैं एक तो खाना नहीं लाई थी, दूसरे संकोची स्वभाव, तीसरे पहला दिन, सभी अपरिचित थे। धीरे-से जाकर एक चौकी पर बैठ गई। उन्होंने बड़ी प्यारी-सी दृष्टि से मेरी ओर देखा और मिठाई का टिफिन हाथ में उठा कर मेरी ओर किया। मैंने मना किया। उन्होंने आग्रह किया तो मैं उसमें से तोड़ कर लेने लगी। वो बोली, 'तोड़ो नहीं पूरा पीस लो। आज तुम हमारे साथ मीठा खाओ और हमेशा मीठे बने रहना। ' ऐसा कह कर वे भी हँसने लगी और दूसरा स्टाफ वहाँ था, वे लोग भी हँसने लगे। उनके हँसने में एक विचित्र माधुर्य था। घर आकर सोचती रही, कितना अपनत्व दिया मुझे। और तो किसी ने अपना परिचय भी नहीं दिया।

मैंने उन्हें बड़ी बहिन के रुप में सम्मान दिया और उन्होंने मुझे छोटी बहिन समझा। यहाँ से बहिनजी का ओर मेरा साथ शुरु हुआ।

समय-समय पर जब कोई अड़चन खड़ी हो जाती थी, वो उसे समर्थ कलाकार की तरह हल कर देती थीं। मैं उनकी प्रतिभा देखकर हैरान थी। कोई विषय कैसे पढ़ाना है, सब कुछ बहिनजी बड़ी सरलता से कर लेती थीं। मैंने सोचा कि इन्हें रसोई का क्या ज्ञान होगा। लेकिन सम्पर्क में रहते जाना उनके बनाए व्यंजन इतने बढ़िया होते कि आज भी याद आने पर मुंह में पानी भर जाता है। घर गृहस्थी की समस्या होती तो उसे बड़ी आसानी से सुलझा देतीं। उनकी चतुर्मुखी प्रतिभा थी।

वहनजी स्टाफ की समस्याओं का भी समाधान सहज ही करवा देती थीं। उनमें बुद्धि का भंडार था, प्रतिभा थी।

इस असार संसार से विदा होने से एक दिन पहले की बात है। सुबह का समय था। मैंने चाय बना कर रखी कि फोन की घंटी बजी। मैंने उठ कर फोन पर बात की। बहिनजी ने लगभग 10-15 मिनट तक मुझ से बात की। इस दौरान अपनी पौत्री के स्कूल-प्रवेश हेतु भी बहुत सारी बातें की। बीच-बीच में बोलती गई, 'अरे मैंने कितना समय ले लिया। तुम्हारी चाय ठंडी हो रही होगी।' लेकिन मेरा मन तो उनकी बातों से तृप्त ही नहीं हो पा रहा था। अन्त में बोली, 'अच्छा अब फोन रख रही हूँ। तुम बबलू को कल अवश्य भेज देना।' मुझे क्या मालूम था कि यह अपनी अन्तिम यात्रा के लिये स्वयं ही कल के लिये बुला रही हैं। कल आया, बबलू बिना चाय पिये ही बोला, 'मम्मी मैं अभी आया। आप चाय बनाओ। मैं एक बार प्रकाश मैडम के घर जा रहा हूँ। अभी आ जाऊँगा।' और सचमुच वह गया और 10 मिनट बाद आ गया। बोला, मम्मी आपकी बहिन (एक महान् आत्मा) इस संसार से हमेशा के लिये विदा हो चुकी हैं। मेरे लिये यह एक मर्मान्तक, हृदय-विदारक संवाद था। लेकिन कुछ कर भी नहीं सकी। उनके सद्व्यवहार और गाइड जैसे अनेक दृश्य हृदय में चलचित्र की भांति चलते रहते हैं। मैं उन्हें भूलकर भी नहीं भूल सकूंगी।

पूर्व अध्यापिका, राजस्थान बाल भारती,
बीकानेर।

❑

एक महान् आत्मा अम्मीजी

योगेश सारस्वत

अम्मीजी के एकाएक दिवंगत होने के समाचार ने मुझे मार्मिक वेदना की गहराई में डुबो दिया। मेरे मन-मस्तिष्क में केवल कुछ शब्द ही प्रतिध्वनित होते चले गये। ममता, करुणा, क्षमा, प्यार, सहनशीलता, विश्वास आदि-आदि जितने भी ऐसे शब्द, जो अपने भावों की वजह से माने जाते हैं.........और यही आज मेरे साथ हो रहा है, और इन शब्दों की प्रतिध्वनि में जो अक्ष बार-बार चमकता है वो है "अम्मीजी" का।

अम्मीजी का आंटी से अम्मीजी बनना नाटकीय जरुर था लेकिन नाटक नहीं। आज जीवन के उत्तरकाल की ओर द्रुतगति से बढ़ती उम्र का अनुभव लिये यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ और मेरा दावा इसलिये सत्य है क्योंकि जो कुछ भी मैं कह रहा हूँ उसके पीछे न तो कोई स्वार्थ है और न ही कोई दबाव। हाँ, सच्चे मन से उस महान् आत्मा के लिये श्रद्धांजलि जरुर है, जिसने मुझे जीने की एक दिशा दी, भावुकता के आनन्द भरे अहसास के साथ उपजती पीड़ा का ज्ञान और विषम परिस्थितियों में भी जीने का साहस दिया।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "तुम्हें जो अच्छा लगे वह कार्य करो। इसकी परवाह मत करो कि कोई तुम पर हँसेगा, या दुनिया क्या कहेगी? ऐसे दुर्बल विचारों को अपने मन में मत आने दो," स्वयं अम्मीजी का भी यही अभिमत था और शायद इसी तरह से किसी के साथ, कुछ बुरान्नकरने के बावजूद कुछ थे, हैं भी, जो उनकी आलोचना करते रहे, लेकिन सिर्फ पीठ के पीछे-मुँह पर नहीं.......और यही सत्य की विजय थी, उनकी विजय थी, उनके विश्वास और सहनशीलता की विजय थी।

सहनशीलता के लिये तो सिर्फ इतना भर कह देना पर्याप्त होगा कि उनके शरीर पर इतने घाव थे (शल्य चिकित्सा के) कि मैं उन्हें राणा

सांग का स्त्री जन्म कहता था, लेकिन नहीं जानता राणा सांगा के व्यक्तिगत जीवन की बावत, फिर भी कह सकता हूँ कि इस मामले में वे उनसे कहीं ज्यादा सहनशील थीं क्योंकि इस से कहीं ज्यादा घाव थे उनके मन पर, जो उन्होंने हँस-हँस कर झेले और पता नहीं, किस विश्वास के क्षणों में मैंने उन घावों को महसूस किया। निश्चय ही यह भी उनका मेरे प्रति ममत्व ही था और था उनका शिक्षक मन, जिससे निःसन्देह मैंने बहुत कुछ और सोचने की एक दिशा पाई।

'आंटी.......आंटी तुम मुझसे वादा करो कि अगले जन्म में तुम मेरी माँ बनोगी।'

'मैं तो अब भी तुम्हारी माँ ही हूँ बेटे।'

यह संवाद था एक फिल्म का, जिसका नायक यह नहीं जानता कि जिसे वह आंटी कह रहा है वो उसकी माँ है और इस मर्मस्पर्शी दृश्य से प्रभावित जब एक बालक ने, जिसे मां के ममत्व और प्यार की कमी ही नहीं बल्कि शायद आवश्यकता से अधिक ही प्राप्त था, ने....मां-समान, मां से बड़ी उम्र की, लेकिन स्वअर्जित अपनी आंटी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर यही संवाद उनके सामने दोहराया तो.... उसके आश्चर्य, सुखद आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा, जब उसे वही सुनने को मिला जो "नायक" को अपनी आंटी, अपनी मां से मिला था और समय साक्षी है-आँटी, अम्मीजी बनकर, माँ बनकर अपने ममत्व और स्नेह को उस बालक पर लुटाती रही, जिसका साक्षी हूँ मैं, क्योंकि मैं ही वो बालक हूँ इसीलिये मैंने कहा था कि आंटी से अम्मीजी बनना नाटकीय जरुर था-नाटक नहीं।

आखिर में श्रद्धांजलि स्वरुप सिर्फ इतना ही लिखना चाह रहा हूँ- "प्रकाश" जब तक रहता है, उसके प्रति एक उदासीन भाव रहता है लेकिन उसकी अनुपस्थिति उसकी अहमियत को कुछ इस कदर बढ़ा देती है कि सारी दिनचर्या गड़बड़ा जाती है?.......और प्रतीक्षा, प्रयास स्वतः

शुरु हो जाते हैं उसे पुनः पाने को। लेकिन तब क्या होगा? कैसे चलेगा जीवन, जब पता चले कि अब तो बिना 'प्रकाश' के ही रहना पड़ेगा, जीना पड़ेगा.........? एक बार तो जीने का अर्थ ही रह जायेगा व्यर्थता बोध से भरकर, तब असहाय से सहज होने का उपक्रम करते मन को झूठी दिलासा देते कि शायद प्रकाश की वापसी होगी.....या फिर अपने अहम् की तुष्टि हेतु हम प्रकाश की व्यर्थतापर ही बोलते हुए किसी तरह प्रकाश की अनुपस्थिति से व्याप्त अंधकार के साथ सामंजस्य बिठाने का प्रयास करेंगे; लेकिन मैं जिस प्रकाश (अम्मीजी) के विराट में विलीन हो विलुप्त होने की बाबत कह रहा हूँ, वह अनेक के लिये इतिहास की बात और कुछ समय बाद शायद भूली-बिसरी याद बनकर रह जाये लेकिन मेरे अंतर में अपनी पूरी क्षमता के साथ निराशा के बड़े अंधकार में भी मुझे रास्ता दिखाती रहेगी और मैं अपने इस सौभाग्य पर ईश्वर का सदैव आभार व्यक्त करता रहूँगा। लेकिन अपने ही गुणों से युक्त (ईश्वरीय) उस महान् आत्मा को इतनी शीघ्र अपने पास बुलाने के उसके निष्ठुर निर्णय ने मुझे व्यक्तिगत रूप से इतना बड़ा आघात पहुंचाया है कि संज्ञाविहीन होकर रह गया हूँ सोच नहीं पा रहा हूँ समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्यों इतनी शीघ्र मुझे अम्मीजी के सानिध्यरूपी सौभाग्य से वंचित कर दिया.......

शायद सच ही कहते हैं लोग कि ईश्वर बड़ा स्वार्थी हैं तभी तो अच्छी और पवित्र आत्माओं को शीघ्र अपने पास वापस बुला लेता है।

विनायक विहार, व्यास कॉलोनी,
बीकानेर

❑

मेरी प्रिय प्रकाश मौसी (माँ-सी)

डॉ. मनीष तनेजा

दो वर्ष पूर्व जब मैंने अमरीका के लिए प्रस्थान किया तो उनसे मिलने गया था। उस समय उन्होंने कहा था, पता नहीं जब तू वापस लौट कर आयेगा, तब मैं रहूँगी या नहीं। अब भी यह विश्वास नहीं होता कि वे अनन्त यात्रा को चली गई हैं। उनकी याद अभी भी दिल में है और सदैव रहेगी।

उन्हें मैंने हमेशा एक अनुभवी मार्गदर्शक, एक अच्छे मित्र जैसा पाया। शारीरिक रुप से अस्वस्थ होने पर भी उन्हें सारी दुनियादारी के कर्तव्य निभाते देखता तो आश्चर्य होता था। मानसिक रुप से बहुत ही स्वस्थ तथा हिम्मत रखने वाली थीं। समाचार पत्रों आदि से किस्से-कहानी सुनाने का उनका बहुत अच्छा अंदाजेबयां था।

बचपन से ही उनके यहाँ पारिवारिक सम्बन्धों के कारण आना-जाना लगा रहता था। यदि बहुत समय पश्चात् मिलने को जाता तो उनकी नाराजगी झेलनी पड़ती थी। वे बहुत ही संवेदनशील थीं। प्रत्येक के दुःख-दर्द को समझकर सहायता करती थीं। हमारे पूरे परिवार के उत्थान में जो योगदान प्रकाश मौसी का रहा है, उसे भुलाना कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव है।

आज वे हमारे बीच नहीं है, पर उनका ज्योति-पुंज की भांति यशःशरीर हमारा मार्ग सदा प्रशस्त करता रहेगा।

कवेतीकत विश्वविद्यालय,

स्टोरोस, अमेरिका

❑

वे ममता की प्रकाशपुंज थी : माँ प्रकाशवती अलिन्द

यशपाल आचार्य

जब-जब भी वात्सल्य व ममता शब्द का जिक्र होता है, तब-तब माँ प्रकाशवती का जीवन्त, जीवट, समर्पण, निष्ठापूर्ण व तेजस्वी चेहरा बरबस ही दृष्टिपटल पर उभर आता है और लगता है पुत्र की बातकर वह आंसू छलका देगी।

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मेरी माँ है और परम सौभाग्यशाली हूँ कि मेरी माताएँ हैं। मुझे मेरी जननी के अलावा भी बहुत माताओं का स्नेह वात्सल्य मिला है, उनमें एक थी-ममता की प्रकाशपुंज माँ प्रकाशवती अलिंद। मैंने गुस्ताखी की और संदीप के हिस्से की थोड़ी-सी ममता उनसे चुरा ली और उनके जीवनकाल तक मैं हिस्सेदार रहा।

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी व गणित में समान रूप से सिद्धहस्त मातेश्वरी ने लम्बे समय तक शिक्षण का कार्य कर, शिक्षा जैसे पवित्र होम में अपने ज्ञान की आहुति दी। उनकी अपनी व्यवहारकुशलता तथा आत्मीयता ने अनेकों परिवारों को एक परिवार-सा बनाया हुआ था। संजीदगी तथा दूरदिर्शता की कोई मिसाल नहीं। वहीं सूझबूझ में भी उनका कोई सानी नहीं था। बात को पकड़ना और तह तक पहुँचना अच्छे-अच्छे वकील भी मात खा जाएं।

सभी के साथ उनका आत्मीय सम्मान के साथ सम्बन्ध था। निर्विवाद रूप से परिजनों के प्रति आसक्ति छुपा नहीं सकती थीं, क्योंकि वे सरल एवं निष्पाप थीं, अपने लाड़ले संदीप के प्रति जो सपने संजोए और उनकी पूर्ति हेतु जो त्याग किया, वह एक मिसाल है। दुःख-पीड़ा को शरीर में ही नहीं, मन में भी भोगा, किन्तु एक योद्धा की तरह

वे अडिग रहीं। विचलन तो माँ का स्वभाव होता है किन्तु वे तुरन्त स्थिति पर नियंत्रण करने की क्षमता रखती थीं।

यही नहीं, वे गृहकला में भी दक्ष थीं। बहुत कुछ सीखा था और सिखाया भी उन्होंने। वे मनोविज्ञान व समाज को प्रायोगिक रुप में ग्रहण कर प्रयोग करती थी। कौन क्या चाहता है? वे जान लेती थीं।

उनके अनेकों गुणों के बावजूद बस दुःख था तो अपनी शारीरिक पीड़ाओं का, जिनके चलते पोते-पोतियों के संसार को वे ज्यादा ममता का प्रसाद नहीं लुटा पायीं। किन्तु इसकी पूर्ति अपने कई मुंहबोले बेटों-बेटियों के व साथियों के बच्चों को वात्सल्य की घूंट पिला-पिलाकर पूरा किया।

आज उनकी अनुपस्थिति मुझे व्यक्तिशः खलती है। वे मेरी पूज्य माँ थी, मेरी आदर्श मित्र, योग्य पथप्रदर्शक तथा प्रेरणापुंज थीं। मेरा कोटिशः नमन।

ग्रुप कमाण्डर,
4 थी राज. एयर स्क्वैड्रन, एन.सी.सी.,
बीकानेर

❑

दिव्य विभूति

सम्पतलाल बोथरा

श्रीमती प्रकाशवती 'अलिंद' का 22 मई 1997 को अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। उनके देहावसान से एक शानदार शख्सियत चल बसी।

वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। शिक्षा के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान को पीढ़ियों तक याद किया जायेगा।

उनकी अद्भुत क्षमता को देखकर आश्चर्य होता था कि वे अपनी व्यस्तताओं के बावजूद अपने पति श्री अलिन्दकुमारजी 'आयुर्वेदाचार्य' के सारे कारोबार, रसायनशाला, दुकान आदि का पूरा हिसाब-किताब एक दक्ष अकाउण्टेन्ट की भांति किसी की मदद के बगैर, विधिवत खुद लिखती थीं, और प्रत्येक माह के अन्त में पूरे हिसाब का तलपट बना कर देती थीं, उनकी यह गतिविधि अपने अन्तिम समय तक अबाध जारी रही।

आयकर और विक्रीकर के सारे कार्य, यहाँ तक कि वार्षिक असेसमेन्ट भी बिना किसी वकील के करवाती थीं, और जरुरत पड़ने पर सम्बन्धित अधिकारियों के समक्ष खुद जाकर उपस्थित होती थीं।

अपने दयालु स्वभाव के कारण जरुरतमंदों की आर्थिक मदद वे आगे बढ़ कर करती थीं।

उस दिव्य विभूति को सादर नमन।

1-डी-151 जयनारायण व्यास कॉलोनी,
बीकानेर

❑

हमारी आदर्श शिक्षिका

डॉ. राकेश माथुर

डॉ. मधु माथुर

प्रकाशवतीजी मैडम एक ऐसा नाम है, जिनकी स्मृति आज 30 वर्ष के बाद भी वैसी की वैसी बनी हुई है।

उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व व कुशल अध्यापन विस्मृत करना क्या आसान है? वह तो छात्रों के मन पर अमिट छाप छोड़ गई हैं।

आज सफलता के जिस सोपान पर हम खड़े हैं, उस में उन रचनात्मक वर्षो में अध्यापिकाओं में प्रकाश मैडम का विशेष योगदान रहा है। वह प्रमुख अध्यापिका थीं।

छात्रों के प्रति प्यारभरा व्यवहार रहता था। छात्र उनके प्रति सम्मान की भावना रखते थे।

उनकी दिवंगत आत्मा को हमारा शत-शत प्रणाम!

सादुलगंज,

बीकानेर

❑

प्रकाश मौसी सास की मधुर स्मृति में

त्रिपता (पप्पी)

घर की बड़ी बहू होने के नाते यूं तो मुझे सभी से प्यार व सम्मान मिला। किन्तु प्रकाश मौसी जी ने मुझे इतना स्नेह दिया कि मेरे दिल का प्याला लबालब भर छलक गया।

प्रकाश मौसी जी में सभी को आकर्षित करने का विशेष गुण था। उनके वातचीत करने का सलीका, सौम्य मुख मण्डल, बीमारी की हालत में भी खिला चेहरा सामने वाले को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता था। वह सचमुच एक ममतामयी माँ, स्नेही बहन, पति परायण नारी थीं। एक भारतीय नारी में जो गुण होने चाहिए वे सभी गुण उनमें मौजूद थे। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि वे जिस स्थान पर बैठती थी वह मन्दिर बन जाता था। मैंने जितना समय उनके पास रह कर बिताया वह अविस्मरणीय है। पिछले साल एक अजीब सी तड़प मन में उठी। लगा कि मुझे मौसी जी याद कर रही हैं तो मैंने घर में भी कह दिया कि इन छुट्टियों में मैं प्रकाश मौसी जी के पास बीकानेर जाऊँगी। हमें छुट्टियां 25.5.97 को होनी थी किन्तु वे 22.5.97 को ही हमें बिलखता छोड़कर इस नश्वर संसार से सदा के लिये चली गयीं। जाते जाते अपने प्यार के प्रतीक कई मूल्यवान उपहार भी मुझे देने के लिए छोड़ गई, उनकी यह अमूल्य, पवित्र धरोहर सदा अपने पास उनकी याद में रखूंगी।

मैं उन्हें श्रद्धा के साथ नमन करती हूं।

स्टेट बैंक कालोनी,

हिसार

❑

मेरी मौसी-सास प्रकाशवतीजी

रक्षा मिश्रा, एम.ए.एम.फ़िल

विवाहोपरान्त जब मेरी सासूजी ने अपनी प्रिय मित्र दीदी व मार्ग दर्शिका श्रीमती प्रकाशवतीजी से परिचय कराया तो मैंने उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन कर अपनी सासूजी के बराबर ही माना और उन्होंने भी मुझे अपनी पुत्रवधु के रुप में प्यार और सम्मान दिया, जो अन्तिम क्षणों तक रहा। समय-समय पर उनके द्वारा मुझे दिया गया मार्गदर्शन और पारिवारिक दायित्वों को भली प्रकार निभाने की जो प्रेरणा उनसे मिली, वह एक अक्षुण धरोहर है जिसे मैं संजोये हुए हूँ और संजोये हुए रहूंगी।

उनका अविस्मरणीय व्यक्तित्व, स्नेहिल सान्निध्य और आत्मीय व्यवहार हम सबकी स्मृतियों में सदा स्थाई रहेगा। उनकी कर्मनिष्ठा, मृदुल व्यवहार, सादगी और कर्मठता एक अलौकिक ज्योति बनकर सदैव हम सब को प्रेरणा और दिशा निर्देश देती रहेंगी। मानस-पटल पर उनके स्नेहिल व्यवहार की मधुर स्मृतियाँ निरन्तर अंकित रहेंगी।

आज वे हम सबके बीच उपस्थित नहीं है, लेकिन उनका भव्य और तेजोमय व्यक्तित्व सदा की तरह हमारा मागदर्शन करता रहेगा।

मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

राजेन्द्र कुटीर, पुरानी गिन्नाणी,
बीकानेर

❑

ममत्व की देवी मेरी सासु माँ

श्रीमती स्वाति अलिन्द

इस तरह अचानक इतनी जल्दी अम्मीजी (मेरी सासु माँ) हमें छोड़ कर चली जायेंगी.......ऐसा मैं तो क्या कोई भी सोच नहीं सकता था, लेकिन मैं जानती हूँ मेरी जिन्दगी में मुझे इससे बड़ी क्षति तो कुछ हो ही नहीं सकती। उनके अवसान की सूचना मिली (मैं उस वक्त जयपुर थी) तो लगा "कुछ" खो गया है, लेकिन एक वर्ष के विछोह ने मुझे जतला दिया है कि "कुछ" नहीं "सब कुछ" खो गया है।

उनकी कही बातें जिन्हें मैं अब समझ रही हूँ कि वे सारी बातें मुझे अपनी सारी ज़िन्दगी में काम आनी है-काश मैं उस समय, उनके होते, उन्हीं के सामने समझ पायी होती तो मेरा मन कहता है मुझे अभी कई वर्षो तक उनसे अभी ओर जाने कितनी-कितनी बातें और आदतें सीखने को मिली होतीं......जो अब नहीं मिल सकती।

वह अत्यधिक सफाई पसन्द थीं, गन्दगी उन्हें बिल्कुल भी सहन नहीं होती थी, ओर ना ही सहन होती थी अशिष्टता और उछृंकलता।

मेरी प्रथम पुत्री गुड्डा तीन माह की थी जब उसे लेकर मैं अपने पिहर से यहाँ आई। प्रसव के तीन माह व्यतीत हो जाने के बाद भी जाने कितने किलो घी, बादाम और फल उन्होंने अपने हाथों से मुझे खिलाये ओर बस आराम करो.........जबकि अब उनके जाने के बाद एक माह के शिशु के साथ सारे घर की जिम्मेदारी संभालो, खाने के लिए सब कुछ होते हुए भी वह मिठ्ठी मनुहार, वह प्यार भरी झिड़की, डांट से खाने के लिए आग्रह.........और इसके साथ ही मेरी खाने की इच्छा को वे जैसे अपने साथ ही ले गई......कितनी हतभागिनी हूँ मैं।

सासु माँ की स्मृति में "स्मृति-ग्रन्थ" निकल रहा है, कितने-कितने लोगों के उनके प्रति, उनके बारे में लिखे लेख डाक से ओर स्वयं आकर पापाजी (मेरे ससुरजी) को देकर जाते देखा तो उसी ने यह हिम्मत, हौसला दिया कि श्रद्धांजलि स्वरुप ये दो शब्द लिखने का साहस कर पाई हूँ,

आखिर में शत्-शत् नमन के साथ मैं प्रतीज्ञा करती हूँ कि-माँ मैं पूरी जिन्दगी तुम्हारे आदर्शो की रक्षा में लगा दूगीं।

दयालु फार्मेसी
वीकानेर

❑

काव्यांजलि

श्रद्धांजलि हमारी लो

आत्मा स्वरूपा जहॉ रहो

मोक्षदायिनी राह गहो

ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ

सूर्य किरण बन दमको सदा उज्ज्वला सी

–

प्रिय दीदी पाशी के नाम पाती

रमेश गुप्ता, ए.ई.एन.

तुम्हीं बताओ सिवा स्नेह के
तुम्हें और क्या उपहार,
स्नेह बंधन के बदले में,
अर्पित है सरल हृदय का प्यार,

भेंट अनश्वर चिर स्नेह की,
तुमने दी है मुझ पर वार,
तुम्हीं बताओ फिर क्यों दूं,
मैं तुम को नश्वर उपहार

आज भावना कुसुमों का,
गूंथा है मैंने अनुपम हार
स्नेह बंधन में बंधकर मैंने,
पिरो दिया प्राणों का प्यार

अमर रहेगी मेरी दीदी,
अमर रहेगा उनका प्यार।
युगों-युगों तक याद रहेगा,
दीदी का निश्छल व्यवहार॥

चूरू (राज.)

दिनांक 22 मई, 1997 को दिवंगत स्वर्गीया श्रीमती प्रकाशवती (पाशी) अलिंद को हार्दिक श्रद्धांजलि-काव्यांजलि

गजानन वर्मा

भरत देश पंजाब प्रान्त में
पावनपुरी मुक्तसर नाम
सूर्य-किरन एक घर पर उतरी
जहाँ बसे थे शालिग राम।

दीप्त हुआ सारा घर-आँगन
झिलमिल झिलमिल हुआ उजास
नाम दिया उदित किरन का
मात-पिता ने स्वयं प्रकाश।

शिक्षा-दीक्षा में पारंगत
बचपन बीता हुई जवान
मिलनसार मृदुभाषी थी वह
हँसमुख सर्वगुणों की खान।

चार बहनों में एक बहिना
छोटा भाई एक सुकुमार
तोड़ नेह का ताना-बाना
छोड़ गई सुखमय संसार।

राष्ट्रप्रेम की प्रखर पुजारिन
सामाजिक सेवा लवलीन (व्रतलीन)

प्रगति-पथ पर चलने वाली
अध्यापक पद पर आसीन।

गृहलक्ष्मी थी घर की शोभा
प्रिय अलिंद की प्राणाधार
एक दूजे के लिए समर्पित
अमर युगल जोड़ी का प्यार।

आज हमारे बीच नहीं वह
स्वर्गलोक में गई सिधार
यादगार ही छोड़ गई बस
सुयश सदा लेगा विस्तार।

पाशी जहाँ कहीं भी हो तुम
अमरात्मा का ले अवतार
सुखद-शान्ति-साम्राज्य वहाँ हो
हम सब की है यही पुकार

चित्रकला भवन, रतनगढ़

स्वर्गीया प्रकाश अलिंद (पाशी) को
श्रद्धांजलि-गीतांजलि

गजानन वर्मा

ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ
स्वजन-स्नेही छोड़ हुई क्यों स्वर्गवासी?

मुक्तधारा से आई तू
शालिगराम घर जायी तू
ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ
धरती ऊपर शोभित थी शुचि सुफलता-सी

तू प्रिय की थी प्राण-प्रिया
राम संग जस सुघड़ सिया
अपनों को सुख सदा दिया
ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ
अब भी उर-अंकित है तव छवि मृदुला-सी।

सर्व गुणों की थी गागर
सिद्धि-शिखर सत्‌चित् सागर
मुग्ध हुआ शिव नटनागर, पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ
पंचतत्त्व में रमा गया वह अविनाशी।

अमरात्मा को मुक्ति मिले

भाव-पुष्प हैं हृदय खिले।

प्रिय-प्रशस्ति-हित होंठ हिले

ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ

ईश्वर तुमहें शान्ति दे हम हैं अभिलाषी।

श्रद्धांजलि हमारी लो,

आत्मास्वरूपा जहाँ रहो

मोक्षदायिनी राह गहो,

ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ

सूर्यकिरण बन दमको सदा उज्ज्वला सी।

ओ पाशी ऽ ऽ ऽ ऽ

चित्रकला भवन
रतनगढ़ (चुरु)

स्मृतियों के वातायन
(प्रकाशवतीजी को स्मरण करते हुए)

हरीश भादाणी

जाते जाते स्मृतियों के
कई कई वातायान खोल गई तुम।
इसमें उसमें देखा मैंने
खिल खिलते छोनों को,
उनमें ही रम रमती
हेत हेम के
कई-कई रंग घोल गई तुम।
उस-उसमें से
उड़-उड़ कर आ बैठे
मेरी पथराई मुंडेर पर
उजली-उजली पांखों वाले
निरे कबूतर
सोये सन्नाटे में
यूं रमझोल गई तुम।

नीचे के मेरे आंगन में
हिल के ही थी
केवल नील तलाई
मानों न्योरे करती,

एक-एक कर के पंखेरू उतरे,
छप-छप फर-फर भीगे

आतुरते उड़-उड़ते ओझल होते
जाने क्या-क्या छींट गये वे
विना घाट के किसी किनारे
कोरे फड-फड़ते मेरे पन्ने पर,
एक तलैया ही तो थी वह
फिर उसको यूं क्यों फरोल गई तुम?

अचरज के सागर में
डूब-डूब तिर आए मन ने देखा-खुद से पूछा
छपे हुए कागज पर
पांखे है कि पगलिये?

ना पॉखे हैं
न ही पगलिये
ये अच्छर आखर हैं
इनको देखो..........और सुनो भी
ये तुम्हें अँवेरे
तुम इन को अँवेरना।
मैं क्या समझा-कितना समझा
पर इतना भर तो मुझे याद है।
ऐसा ही कुछ बोल गई तुम
जाते-जाते स्मृतियों के
कई-कई वातायन खोल गई तुम।

प्रख्यात कवि एवं साहित्यकार
छबीली घाटी, बीकानेर।
❑

मेरी दीदी पाशी

आशा तनेजा

मेरी दीदी, प्यारी दीदी
फूलों की हो बगिया दीदी
मेरी दीदी, मेरी दीदी

कोमल हृदय वाली दीदी
मेरी प्यारी प्यारी दीदी
फौलाद से पक्के इरादों वाली
मेरी दीदी, प्यारी दीदी

दीदी, दीदी सच बतलाओ
क्या तुम भी हमें याद करती हो
या दूर सितारों में बैठी
स्नेहिल नयनों से हमें निहारती हो

मेरी दीदी, प्यारी दीदी।
फूलों की हो बगिया दीदी
मेरी दीदी, मेरी दीदी

स्टोरोस, अमरीका

❑

बाल मनोभावों का समर्पण

अनेकानेक बालक बालिकायें अपने शिक्षा सत्र की समाप्ति (राजस्थान बाल-भारती में) के समय विदाई के क्षणों में अपने निश्छल मनोद्‌गार रंगबिरंगे स्वनिर्मित 'कार्डो' पर बना बना उन्हें समर्पित करते रहे......और उनका वात्सल्य ही था कि बच्चे उन्हें ममतामयी माँ मानते थे, और अपने उद्‌गारों द्वारा उन्हें अभिनन्दन स्वरुप कार्ड लिखकर देते रहे, उन्हीं में से कुछ मनोद्‌गार श्रद्धान्जलि स्वरूप आगे दिए जा रहे हैं.........

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

माँ सी ममता
वहन सा प्यार
मिले हमें वारम्वार
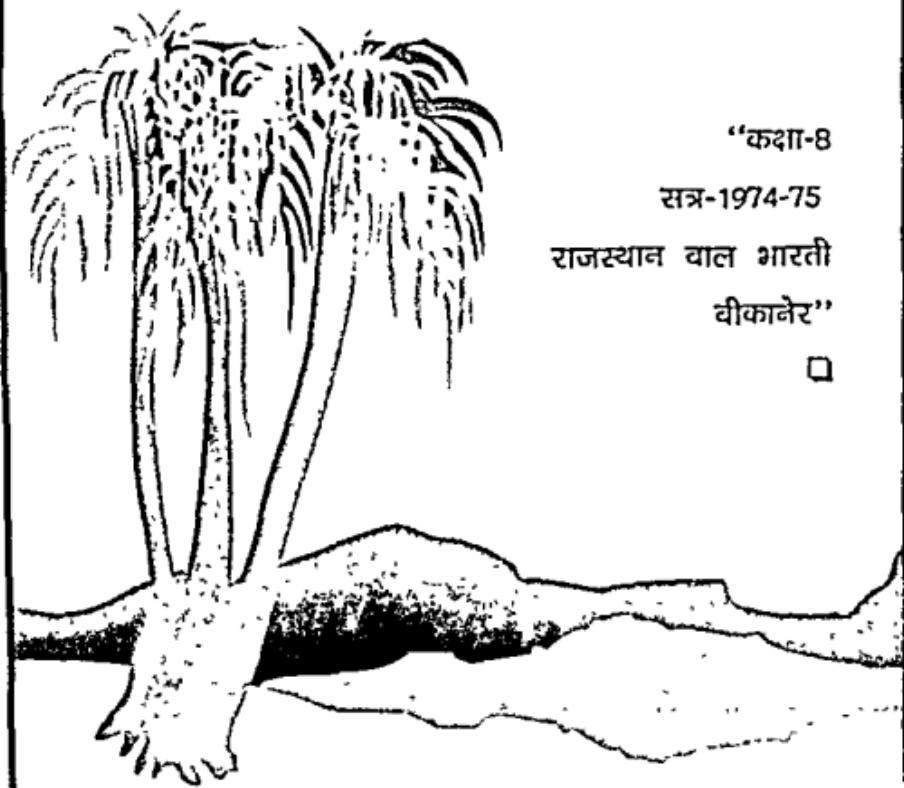
"कक्षा-8
सत्र-1974-75
राजस्थान वाल भारती
वीकानेर"

मधुर स्मृति में

"जीवन की साधना
अनुभव की आराधना
अज्ञान के अन्धकार को
प्रकाशवती-दिशाएँ प्रदान करती हुई
नई पीढ़ी के लिए
चिरंतन चिरपुरातन चिरसंजीवन
ज्योति कलश का निर्माण करती"

"कक्षा-8 सत्र-1983-84
राजस्थान बाल भारती बीकानेर"

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

सदन में जब भी मन्त्रियों की लिस्ट बनेगी तो राजीव गॉधी का नाम ऊपर होगा बीकानेर में अध्यापकों की लिस्ट बनेगी तो मैडम आपका नाम ऊपर होगा

10 अप्रैल 1987 कक्षा-8
राजस्थान बाल भारती बीकानेर

❑
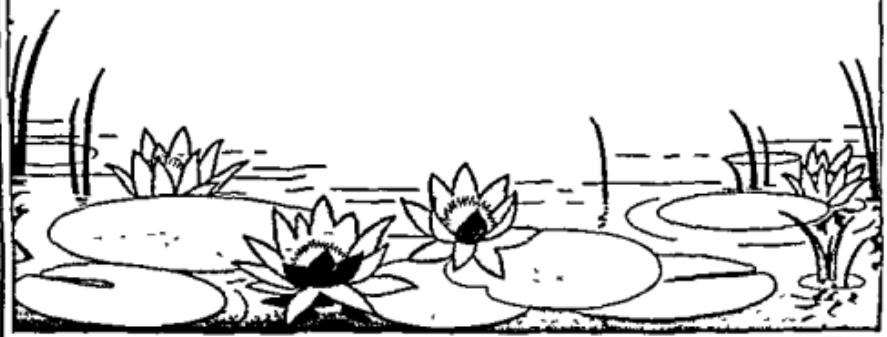
माँ सी मैडम के प्रति

गंगा के जल से भी निर्मल
यमुना की लहरों सा उज्ज्वल
हरदम हितकर साया देता
प्रकाश मैडम आपका प्यारा

30 जून 1988 कक्षा-8
राजस्थान बाल भारती बीकानेर
❑

संवेदना के स्वर

खामोशी से कितने मनों पर उन्होंने अपना साम्राज्य जमा लिया इसका पता उनके सदैव के लिये 'खामोश' हो जाने के बाद प्रकट हुए अनगिनत 'संवेदनाओं के स्वरों से ही महसूसा जा सकता है जिनका सिलसिला अभी तक जारी है..........हालांकि सभी स्वरों को इस स्मारिका में स्थान दे पाना क्या संभव हो सकता था? फिर भी प्रयास तो किया ही है.........

परम श्रद्धेय पूज्य भाई जी।

सादर प्रणाम!

अभी अभी श्री बाबूरामजी का पत्र मिला, उससे पता चला कि माननीया भाभी-प्रकाश का 22-5-97 को हृदयावसाद से असामयिक स्वर्गवास हो गया। अत्यन्त पीड़ा का अनुभव हुआ।

उन्होंने लम्बे समय तक जीवन संघर्ष किया। उन जैसा व्यक्तित्व विरला ही होता है। विधि के विधान को कोई टाल नहीं सकता। आपने-उनकी चिकित्सा सेवा में कोई कोर-कसर नहीं रक्खी-यह सर्व विदित है। जितना सम्पर्क जिस व्यक्ति के साथ होता है वह निश्चित है, किन्तु इस आयु में जीवन साथी बिछुड़ जाने का जो दुःख अभावानुभूति होती है, उसे केवल भुक्त भोगी ही समझ सकता है।

प्रभु आपको प्रचुर सहन शक्ति एवम् स्वर्गीया भाभी को सद्गति प्रदान करे, ऐसी मेरी हार्दिक कामनाएं हैं।

दिनांक 28.5.97

आपका विनीत, अकिंचन

एस.एल.वसन्त

एस्कोर्टस, आयुर्वेदिक होस्पिटल, फरीदाबाद

श्री दादू ज्ञान मन्दिर

जयपुर

श्री अलिन्द कुमार जी। सादर सत्यराम।

आपकी पत्नी प्रकाशवती जी के 22 मई 1997 को स्वर्गवास होने के समाचार जानकर हार्दिक दुःख हुआ। श्रीमती प्रकाशवतीजी दादूधाम नरेने के मेले से जयपुर आते थे तो सदैव हमारे ही आश्रम में ठहरते थे।

हमारे आश्रम की स्वच्छता और शान्ति उन्हें बहुत पसन्द थी, मेले के अतिरिक्त भी जब जब उनका जयपुर आना होता था तो हमारे ही आश्रम में ठहरते थे। उनका सौजन्य पूर्ण व्यवहार व बोल बर्ताव से हम-सदैव प्रभावित रहे हैं उनका समस्त व्यवहार उत्तम आर्दशमय रहता था,जिसके लिए वे सदैव सभी के श्रद्धास्पद रहेंगी। उन्होंने तेजस्वी जीवन जीया। इष्ट देव से प्रार्थना है कि सर्व शक्तिमान परमेश्वर स्वर्गीय आत्मा को अपनी शरणागति प्रदान करे,तथा आप सभी परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे।

श्री संदीप बाबू को भी हमारी संवेदना ज्ञात करावें।

हार्दिक संवेदनाओं के साथ-

दिनांक 29.5.97

आपका

जीवानन्द स्वामी

❑

श्री अलिन्द जी,

प्रकाशवती जी के स्वर्गवास के शोक समाचार से मैं अत्यन्त शोकमय होकर आपके प्रति व परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रगट कर रहा हूँ।

प्रकाशवती जी ने उस समय रा. बाल भारती में कार्य को आगे बढ़ाया, जबकि वेतन भी नाम मात्र का था। साधनों की कमी थी। उन्होंने सच्चे निष्काम कार्यकर्तृ बन लगन से उल्लास व पूर्ण दक्षता से बाल शिक्षा के क्षेत्र में जो सेवाएं दी हैं वे सदैव स्मरणीय हैं। मैं प्रारम्भ से ही उनकी इस भावना के प्रति आदर रखता रहा हूँ। मैं बीकानेर आने पर मिलूंगा।

अक्षय चन्द्र शर्मा,
10 जवाहरलाल नेहरू रोड, कलकत्ता-13

***

आदरणीय अलिन्द कुमार जी

आपकी धर्म पत्नी श्रीमती प्रकाशवतीजी के स्वर्गवास का ज्ञात होने पर गहरा दुःख हुआ। ईश्वर की मर्ज़ी के आगे किसी का जोर नहीं चलता। भगवान् से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा आप सबको यह अपूरणीय क्षति सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करे।

दिनांक 29.5.99

चन्द्र दान चारण
कोट गेट, बीकानेर

माननीय भाई साहब।

सादर प्रणाम।

दुःखद समाचार को पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ और सन् 1934 से आज तक का सारा दृश्य हृदय पटल पर घूम गया और इस विछोह ने हम सब को द्रवित कर दिया। कैसे आप 1948 जनवरी में फाजिलका आए और किस प्रकार मुक्तसर आप को बुलाया गया, साथ ही मंगनी कर दी गई और शादी की तिथि भी निश्चित कर दी गई।

आपको प्रियदर्शिनी, सुसंस्कृत अर्द्धांगिनी मिली। कष्ट के दिनों में उन्होंने आपको पूरा-पूरा साथ दिया। कई वर्षो से घातक बीमारियों के हमले को सहते हुए भी उन्होंने हँसमुख जीवन जीया।

कुछ घटनाएँ याद आ रही हैं। शादी पर जो सेहरा गाया गया था, उसमें यह लाइन थी-"राम सीता की जोड़ी"। यह यथार्थ रहा। वह दृश्य भी अभी तक अंकित है-जब भाभी मंडप पर बिना घूंघट के आकर बैठी तो मुक्तसर का जन समूह उमड पड़ा था। बिना घूंघट शादी का मुक्तसर में यह पहला ही अवसर था।

आगे चलकर वह दृश्य भी याद आ रहा है जब मेरे बड़े पुत्र अशोक की शादी पर सौ. शारदा के सब नेगचार भाभी ने ही किये थे।

वे हमारे लिये आदर्श भावज थी, हमारे सब बच्चे उन्हें सम्मान से मामी जी कह कर सम्बोधन करते थे। इस असह्य आधात से हमारा परिवार वेदना में डूब गया। हमारे परिवार की संवेदना आपके साथ है। प्रभु से प्रार्थना है कि आपको इस असीमित दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे और उनकी आत्मा को प्रभु अपने चरणों में निवास दे।

श्रद्धावनत

दिनांक 30.5.98

आपका भाई

वैद्य रामगोपाल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

फाजिलका (पंजाब)

आदरणीय जीजा जी!

बहन प्रकाश के स्वर्गवास का जानकर पूरा परिवार बहुत दुःखी हो गया। अचानक यह कैसे हो गया। अभी तो उनकी बहुत आवश्यकता थी, हमारे परिवार की यह पहली क्षति है। भगवान् के आगे किसी का जोर नही चलता। उनकी आत्मा को शान्ति मिले तथा आप और हम सब को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले यही भगवान् से प्रार्थना है।

दिनांक 30.5.97

आपका

ओम प्रकाश गुप्ता

मुक्तसर (पंजाब)

***

आदरणीय डा. साहब।

आपका दुखित समाचार पत्र मिला। बहुत दुःख हुआ। ईश्वर ने अचानक ही हमारे बीच से उन्हें बुला लिया व आपको अकेले छोड़ दिया। वे आपको पूरा पूरा सहयोग व सलाह दिया करती थीं। अब तो संतोष ही करना पड़ेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको धैर्य व मम्मी जी की आत्मा को शांति दे। मैं शीघ्र ही बीकानेर आऊंगा। मुझे बहुत ही दुःख हो रहा है, आपका क्या हाल हो रहा होगा मैं समझता हूँ। मम्मी जी की छवि तो हमेशा ही छाई रहेगी।

दिनांक 30.5.97

आपका

महेश चन्द्र वर्मा

हाथरस

प्रो. राम प्रकाश स्वामी भिषगाचार्य
एम.ए.दर्शन शास्त्री, पूर्व निदेशक-राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर,
संचालक-स्वामी लक्ष्मीराम चिकित्सालय, जयपुर

माननीय श्री अलिन्द जी। सादर सत्यराम।

मैं आज ही मुम्बई से दादू जयन्ती महोत्सव में भाग लेकर लौटा हूं। आने पर आपका पत्र मिला, पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ कि भाभीजी श्रीमती प्रकाशवती जी का 22.5.97 को स्वर्गवास हो गया। भाभीजी की सौम्यमूर्ति और उनका स्नेह सदैव स्मृतिपथ में आते रहते हैं उनका अभाव आप के लिए वस्तुतः अत्यधिक वेदना प्रद है, किन्तु ईश्वर के विधान को स्वीकार करना मनुष्य की विवशता है। वैसे भारतीय मान्यता है कि पत्नी का पहले जाना-सौभाग्य सूचक है। आप स्वयं विचारशील हैं तथा गम्भीर चिंतनशील हैं, वह भी आप के लिए हितावह होगा। आपको धैर्यपूर्वक इस कष्ट को सहन करना होगा। आपके पुत्र है, पुत्र वधु है, एवं पौत्र है, इसलिए एकांकी होने का तो कोई अवसर ही नहीं है। जितने दिन का संयोग था उतने दिन रहा इसलिए आप किसी प्रकार की व्यथा को मन में स्थान नहीं दें संसार की असारता को ध्यान में रखते हुए-इस शोक सागर के पार पहुंचा जा सकता है। आप इष्ट देव के प्रति समर्पित हैं। मैं इष्ट देव से उनकी शाश्वत शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

दिनांक 31.5.97 वैद्य राम प्रकाश स्वामी

❑

आदरणीय मामाजी सादर प्रणाम!

मामी जी के असामयिक स्वर्गारोहण का जानकर वहुत दुःख हुआ। हमारे पूरे परिवार की वह मान्य सदस्य थीं, उन्हें सभी वहुत आदर देते थे। उनके चले जाने से जो रिक्तता पैदा हो गई है, उसकी पूर्ति होनी सम्भव नहीं है। हमारी वड़ी पुत्री नीरजा पर उनका वहुत स्नेह था। आप अव मानसिक रूप से अकेले हो गये हैं, अव केवल धैर्य ही धारण करना होगा। मामीजी के साथ अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं, वे हमेशा याद रहेंगी। उन्हें हम श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

आपका

अशोक शर्मा (इंजीनियर)

शारदा शर्मा

खेतड़ी नगर

***

आदरणीय वैद्य जी

आपकी पत्नी का स्वर्गवास होने के समाचार से दुःख होना स्वाभाविक है। वे आपके हाथों में चली गई यह भी प्रभु की कृपा है। परन्तु इस अवस्था में उनका विछुड़ना पीड़ादायक है। इस वियोग के क्षण में हमारी सहानुभुति आपके साथ है। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति और सद्गति दे।

दिनांक 30.5.97

आपका

वैद्य संतोष कुमार शर्मा

डीडवाना

भाई अलिन्द कुमार जी। हरि स्मरण!

शोक संदेश प्राप्त करके दुःख हुआ। जीवन की राह में साथी का बिछुड़ जाना ऐसा दुःख होता है जो बाकी की जिन्दगी भर भुलाये नहीं भूलता। न जाने विधाता क्यों इतना क्रूर हो जाता है। उसके बनाये विधान के आगे मनुष्य बेबस है। आपके पत्र से हमें परिवार सहित दुःख हुआ। ईश्वर स्वर्गीय आत्मा को शान्ति दें। आपको परिवार सहित धैर्य धारण की शक्ति दे।

दिनांक 2.6.97

आपके दुःख में सहभागी
वैद्य सुरेन्द्र मोहन शर्मा
अमृतसर

***

प्रिय अलिन्द जी,

प्रकाश जी के देहावसान कि सूचना पाकर आघात लगा। बीकानेर रहते आपके और हमारे पारिवारिक मधुर सम्बन्ध रहे वो आज स्मृति पटल पर उभर कर आ गये। इतने वर्षों बाद भी वह सभी स्मृतियां यथावत याद हैं। भगवान का बनाया हुआ यह संसार-चक्र स्वीकार करना ही पड़ता है, परन्तु जिसके साथ जीवन जीया हो उनके चले जाने के बाद उनकी स्मृति को भुलाना आसान नहीं है।

आपके साथ मेरी गहरी साहनुभूति है।

दिनांक 2.6.97

आपका सुन्दर लाल तनेजा,
दिल्ली

"वैद्य अलिन्द कुमार को पत्नी शोक"

वैद्य महेन्द्र प्रकाश

दयालु फार्मेसी बीकानेर की सहअध्यक्षा, श्रीमती प्रकाशवतीजी अलिन्द का दिनांक 22 मई, 97 बुद्ध पूर्णिमा को असामयिक निधन हो गया। श्रीमती अलिन्द प्रभावशाली व्यक्तित्व, अनुशासन प्रिय, उदारमना, बहुभाषा विद विदुषी थी। चिकित्सा एवं शिक्षा जगत में आपको आदरणीय अग्रज के रूप में जाना जायेगा। आपके द्वारा पढ़ाए गये बालक एवं बालिकाएं आज उच्च पदों पर सम्पूर्ण भारत में आसीन हैं। इस महान् व्यक्तित्व की आत्मा को परम पिता परमात्मा शान्ति प्रदान करे तथा इनके परिवारजनों को इस क्षति को सहन करने का साहस प्रदान करे। आपने एक समाज सेविका की तरह सदैव शिक्षा व चिकित्सा जगत में कार्य किया है। आपकी सेवाएं सदा स्मृति में रहेंगी।

चिकित्सक संघ द्वारा दिनांक 3.6.97 को एक बैठक आयोजित कर श्रीमती प्रकाशवती जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सह-सम्पादक, आयुर्वेद चेतना मासिक,
स्वामी विरेन्द्रानन्द प्रकाशन, स्वामी कैम्पस,
हनुमान हत्था, बीकानेर

***

भाई श्री अलिन्द कुमार जी,

सप्रेम नमस्ते!

शोक समाचार प्राप्त हुआ। अत्यन्त दुःख हो रहा है। ईश्वर ने दी हुई वस्तु हम से वापस ले ली है, जो हम को केवल इतने ही समय के लिए दी थी। यह सोचकर हमें धैर्य धारण करना चाहिए।

दिनांक 5.6.97

आपका अपना
डा. एस.एन.गुप्ता,
मुरादाबाद

आयुर्वेद बृहस्पति
कविराज नानक चन्द शर्मा

प्रिय श्री अलिन्द कुमार जी

आप के पत्र द्वारा आप की धर्म पत्नी के पञ्चत्त्व का पता लगा, बहुत दुःख की बात है, पत्नी-सह धर्मिणी का साथ जो समय के अनुसार और आवश्यक है, परम पिता परमात्मा की इच्छा से आप से बिछुड गया और सर्व शक्तिमान् को यही मंजूर होगा, कोई व्यक्ति उसकी इच्छा के प्रतिकूल कर ही क्या सकता है, अब तो परमात्मा आपको और आपके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति दें, और उस स्वर्गीय आत्मा का सब परिवार खिलता फलता रहे "यही प्रार्थना है"

मेरी ओर से सारे परिवार के समक्ष हार्दिक शोक का सन्देश दें।

दिनांक 5.6.97

प्रबन्ध निर्देशक काया-माया,
आयुर्वेदिक फार्मेस्युटिकल वर्क्स प्रा.लि.
दिल्ली

***

आदरणीय भाईसाहब

आपका पत्र मिला। प्रकाश दीदी के देहान्त का समाचार पाकर मैं अत्यन्त दुःखी हो गई। यह कैसे हो गया। कई दिनों से उनकी तरफ से समाचार न पाकर मैं सोचती थी कि दीदी हमें भूल गई हैं। बीकानेर रहते दीदी का जो स्नेहिल व्यहार मेरे साथ रहा वह मैं कभी भूल नहीं पाऊंगी।

मेरी प्रार्थना है कि भगवान् मेरी प्यारी दीदी की आत्मा को सद्‌गति और शान्ति दे तथा आपको इस असहनीय दुःख को सहने की शक्ति दे।

दिनांक 5.6.97

आपकी छोटी बहन
कमल ठाकुर,
शिमला

गिरधरदास मूँधड़ा बाल भारती

शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

पत्रांक-122

दिनांक 7.7.97

श्री अलिन्द कुमार जी,
दयालु फार्मेसी,
बीकानेर।

प्रिय महोदय,

गिरधरदास मूंधड़ा शिक्षण संस्थान प्रवन्ध समिति, बीकानेर की दिनांक 31.5.97 को हुई बैठक में स्वर्गीय श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट किया गया व श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रीमती प्रकाशवतीजी इस संस्था से प्रारम्भ से विशिष्ट अध्यापिका के रूप में लम्वे समय तक जुड़ी रही और उनके वाद यह विशिष्ट स्थान कोई नहीं वना पाया तथा कठिन परिस्थितियों में उनके द्वारा प्रदत्त सूझबूझ सेवाओं, व सक्रिय सहयोग सदा स्मरणीय व प्रेरणादायक बने रहेंगे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति व धैर्य प्रदान करे।

भवदीय
मूलचन्द पारीक,
मंत्री

श्री वैद्य अलिन्द कुमार जी!

आपकी पत्नी के स्वर्गवास का वृत सुनकर वहुत दुःख हुआ। मुझे उनके सद् व्यवहार व परोपकार वृत्ति की भारतीय उच्च संस्कृति व आयुर्वेद तथा समाज की व देश की उन्नति की प्रवृति देखकर वहुत आशा व उत्साह था। आशा करता हूँ आप उनके उच्च विचारों को आगे बढाते रहेंगे। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा आप सवको दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिनांक 25.7.97

आपका
वैद्य राधाकृष्ण शर्मा,
माड़ी बाई दवाखाना,
मेड़ता सिटी

***

प्रिय अलिन्द कुमार जी, सादर नमो नमः!

यह जानकर वहुत दुःख हुआ कि आपकी पत्नी का कुछ दिन पूर्व स्वर्गवास हो गया। वास्तव में पत्नी के बिना जीवन नीरस व निराशा पूर्ण वन जाता है। मुझे आप के साथ पूर्ण सहानुभूति है। आपके सुखमय जीवन के लिए मेरा कुछ भी उपयोग संभव हो तो निःसंकोच सूचित करें। आपका पूर्व छात्रावस्था कालीन प्रेमभाव सभ्य मिलनसारिता व्यवहार पूर्ववत ही स्मरण आ गया है।

दिनांक 30.7.97

भवदीय
वैद्य वनमाली दत्त शर्मा आचार्य
मूंडवा

प्रिय अलिन्द जी नमस्कार

पाशी के जाने से पहले बड़ा दिल करता था बीकानेर आने को। घर में भी कहती रहती बीकानेर जाने को दिल करता है। हो सकता है पाशी का भी दिल करता हो मिलने को। पप्पी ने कहा कि छुट्टियों में मैं भी बीकानेर आप के साथ जाऊँगी और 10-15 दिन रह कर आयेंगे, इस बार पूरा विचार था छुट्टियों में आने का पर उसने छुट्टियों का इंतजार ही नहीं किया और 3 दिन पहले ही हमसे नाता तोड़ लिया। मन की मन में रह गई। कितनी ही बातें मन में थी सारी दबी रह गई। अब सिवाय पश्चाताप के और कुछ हाथ आने का नहीं। खैर जैसी भगवान् की इच्छा। उसके आगे कोई जोर नहीं; इन्सान हो तो लड़ कर मन का बोझ हलका करलें। भगवान से कैसे लड़ें।

आज लोहड़ी का त्यौंहार है। मन पहले ही कई दिन से परेशान था। पहले दीपावली पर मन बहुत-व्यथित हुआ अब लोहड़ी आ गई। चारों ओर चहल-पहल पर मन के किसी कोने में एक टीस सी उठती है। काश! गया इन्सान कभी-फिर वापस आकर पूछता कि तुम्हारा मेरे जाने के बाद क्या हाल है। पर ऐसा होना क्या सम्भव है? बस अब तो चाहते हैं कि भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति और सद्‌गति प्रदान करे।

चार महीने होने को आये, एक इन्सान जाता है। वह फिर अपने साथ पुराने ज़ख्मों को हरा कर जाता है। वृद्धावस्था में साथी का छूटना-असहनीय है, पर बस नहीं चलता, भगवान् की इच्छा जानकर सहन करना पड़ता है।

पाशी सदा मन मस्तिष्क पर छाई रहेगी, मैं उसे कभी भी भुला नहीं पाऊँगी।

दिनांक 13.1.98

सत्यवती नैय्यर
स्टेट बैंक कोलोनी,
हिसार

आदरणीय जीजाजी।

सादर नमस्कार!

मेरी दीदी को गये एक बरस बीत गया विश्वास नहीं होता। मुझे तो ऐसा लगता है वो अब भी हमारे बीच है। इन दिनों तो अक्सर मेरे सपनों में आती है, जब नींद से जागती हूं तो पता चलता है यह तो सपना था। इन दिनों दो तीन वार शिखा की शादी की वीडियो फिल्म देखी उसमें जब-जब दीदी को देखा यही चर्चा हुई कि देखकर लगता नहीं कि अब वो नहीं रही। जब कि मैं यहां अमरीका में वैठी हूँ मगर सपने मुझे वहीं के आते हैं। मैं नहीं भूलती, आपके भूलने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। जब-जब दीदी की याद आती है वो दिन मेरी आंखों के सामने से नहीं हटता-जब घर में केवल आप-मैं और संदीप तथा गुड्डा थे और सामने उनका पार्थिक शरीर सोच कर आंखें भर-भर आती हैं उस पल की जब याद आती है तो आंसू थमते नहीं। शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती कि कैसा महसूस करती हूँ। मन में घुटन सी होने लगती है बस और नहीं।

दिनांक 5.5.98

आपकी

आशा तनेजा, स्टोरोस,

अमरीका

***

My Deepest Condolances

S.R. Mohata

Calcutta

Dated 4.6.97

आदरणीय वैद्य जी।

सादर प्रणाम!

आयुर्वेद महा सम्मेलन पत्रिका नई दिल्ली जुलाई अंक में आपकी पत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी के स्वर्गवास का पढ़कर बहुत दुःख हुआ। बहन जी ने मेरी उस समय सहायता की थी जब मैं घोर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। पिलखुआ में मैने चालीस साल निःशुल्क चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा की किन्तु विपत्ति के दिनों में किसी ने भी मेरी सहायता नहीं की, हार कर मैंने दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली के अखबार में मेरी पत्नी के इलाज के लिए आर्थिक सहायता की अपील की थी, उस अपील की आधार पर 3-4 जगहों से 50-50 रुपयों का मनीआर्डर मिला। उस अपील को पढ़कर श्रीमती प्रकाशवती जी ने 1000 रुपयों का ड्राफ्ट 22.4.96 को मुझे भिजवा दिया, इससे उत्साहित होकर मैं आपके निवास स्थान बीकानेर पहुंच गया, यद्यपि उन्होंने मेरा यहां आना उचित नहीं समझा फिर भी मेरा अतिथि सत्कार करने के बाद 3-4 जगह मेरी सहायता करने हेतु चिट लिख दी। उन महानुभावों से मुझे 2510 रुपयों की राशि प्राप्त हो गई। उन व्यक्तियों का नाम लिखना मैं उचित समझता हूं। श्री वैद्य शिव कुमार जी शर्मा 200 रुपये, वैद्य श्री बाबूराम जी शर्मा 100 रुपये, वैद्य दयाल दास जी स्वामी 100 रुपये। शेष राशि 1710 रुपये श्री अमर चन्द जी पुत्र आसू जी सुनार से प्राप्त हुई। इस प्रकार से यहां आने पर बहन जी ने मेरे को 2510 रुपयों की सहायता दिलवा दी। बहन जी का यह उपकार मैं कभी भी इस जीवन में नहीं भूल सकूंगा। मैं उनका कृतज्ञ हूं। मैं उन्हें नमन पूर्वक श्रद्धान्जली अर्पित करता हूँ।

आपका

वैद्य उमा शंकर तिवारी

पिलखुआ (गाजियाबाद)

आदरणीय जीजा जी

रमेश भय्या के फोन से पता चला कि हमारी दीदी प्रकाशवती का स्वर्गवास हो गया है। हमें यह जानकर अति दुःख हुआ। भगवान् के आगे किसी की नहीं चलती। हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं सभी परिवारजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दे।

कैलाशवती, कुलदीप, चांद

ऋषिकेश

***

आदरणीय मामा जी

सादर प्रणाम। हमें यह जानकर हार्दिक दुःख हुआ कि आदरणीय मामी जी का दिनांक 22.5.97 को आकस्मिक निधन हो गया है। मामीजी के निधन का माँ को काफी दुःख पहुँचा है। इससे उनके स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा असर पड़ा है। वे बस उन्हें ही याद करती रहती हैं और पुरानी बातें बताती रहती हैं किन्तु जो चला जाता है उसकी यादें ही तो रह जाती हैं।

हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं आप लोगों को इस असहाय दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

आपका

महेन्द्र कुमार

स्वामी लक्ष्मीराम बाग

मोती डूंगरी रोड, जयपुर

अन्तःयात्रा

(गद्य)

बाल मनोविज्ञान द्वारा बालक में चेतना का विकास कैसे हो, इस विषय पर श्रीमती अलिन्द ने अपने अनुभवों के आधार पर जो लिखा है वह अपने आप में एक अनुकरणीय उदाहरण है। उनके द्वारा लिखित अनेक लेखों, जो पुस्तकाकार प्रकाशन योग्य हैं, में से केवल चार बानगी स्वरुप संक्षेप में प्रस्तुत हैं......

बच्चों में पढ़ाई लिखाई के प्रति आकर्षण पैदा करना

श्रीमती प्रकाशवती अलिन्द

बालक को भाषा की उपयोगिता बताकर भाषा के प्रति आकर्षण पैदा करना चाहिए। उसे ऐसी बातें बतावें जिनसे वह स्वयं के अनुभव द्वारा सीख सके। बालक चित्र-प्रेमी होते हैं। उन्हें ऐसे चित्र दिखाएं जिनसे वह परिचित हो, बालक उनके प्रति जिज्ञासा दिखायेगा पूछेगा यह क्या है? उसे बतायें कि नाम इसके नीचे लिखा है पढ़कर बताते हैं। बालक को यह एहसास होगा कि यदि वह स्वयं पढ़े-लिखे तो वह भी शिक्षक की तरह पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकता है। बच्चे में आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा होती है-वह इसमें भी आत्म निर्भर बनना चाहेगा।

बच्चे कहानी सुनना भी बहुत पसन्द करते हैं। बच्चों को पुस्तक से पढ़कर कहानी सुनायें जिससे वह जान जाये कि कहानियाँ पुस्तकों में भी होती हैं। जो पढ़ना लिखना सीखने पर जान सकते हैं।

पुस्तकों से कविता-गानें भी पढ़कर गाकर सुनायें। बच्चा जानेगा कि ये भी पुस्तकों में होते हैं। बच्चा पढ़-लिखकर धीरे-धीरे आनन्द लेनें लगेगा।

घर में रिश्तेदारों के पत्र आते हैं। बच्चों के सामने उसके प्रियजनों के समाचार पढ़ें और बतायें कि यदि तुम भी पढ़ोगे तो इसी प्रकार पत्र पढ़ सकोगे और लिख सकेगे।

इस प्रकार बच्चों के मन में पढ़ाई लिखाई के प्रति आकर्षण पैदा किया जा सकता है।

❑

बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों का शिक्षण
प्रकाशवती अलिन्द

1. चेतना का विकास :-

बच्चा वातावरण को देखता अवश्य है परन्तु चेतना पूर्वक नहीं देखता। अचेत रूप से वातावरण का निरीक्षण करता है। उदाहरण -डॉ. मोंटेसरी के बाल घर के एक बच्चे को पेड के चित्र में रंग भरने का काम दिया। बालक ने पूरे चित्र में लाल रंग भर दिया। अध्यापिका बहुत परेशान हुई। परन्तु डॉ. मोंटेसरी ने धैर्य से कहा कि इसे पहले रंगों का ज्ञान कराओ। फिर बगीचे का निरीक्षण करवाओ। ऐसा करने के बाद फिर चित्र दिया। इस बार बच्चे ने पत्तों में तो हरा रंग भर दिया परन्तु तने में वही लाल रंग भर दिया। बच्चे को दोबारा बगीचे में ले गये निरीक्षण करवाया उसे बाद में चित्र दिया तो तने में सही रंग भर दिया क्योंकि रंग उसकी चेतना में आ गये थे। जितना ज्ञान चेतना में होगा उतने का ही उपयोग कर सकेंगे। बालक के पास यदि अनुभवों का धन है परन्तु चेतना में नहीं होने से उस धन का उपयोग नहीं कर सकता। इसलिए चेतना का ज्ञान ही उपयोगी होता है। ज्ञान का उतना ही उपयोग होता है जितना कि चेतना में है। जैसे पेड़ में रंग भरने से रंग गलत हुए परन्तु बाद में रंगों की तख्तियों का अनुभव कराया, बगीचे में घुमाया उसके बाद उसने पेड का रंग ठीक भर दिया क्योंकि साधन के अनुभव से रंग चेतना में आ गये थे। टीचर ने नहीं बताया कि कौन से रंग भरो। टीचर सिर्फ वातावरण बनाता है, बच्चा स्वयं अनुभव करता है सीखता है। (Self Education) बच्चे के स्वयं के शिक्षण में और टीचर के शिक्षण में अन्तर होता है। इसमें बच्चे को सीखने में समय अवश्य लगता है परन्तु आगे का विकास चमत्कारी होता है। साधारण स्कूलों के बच्चों में

ऐसा नहीं होता। मोंटेसरी पद्धति के बालघरों में बच्चा जिस आयु में जोड़, बाकी करने लगता है साधारण स्कूल का बच्चा गिनती सीख रहा होता है। माता-पिता यह चाहते हैं कि बच्चा स्कूल जाने के दो-तीन माह बाद ही पढ़ना लिखना सीख जाये। माता-पिता में सब्र (Patience) होना चाहिए। बच्चे में एकाग्रता आने दीजिए, अनुभव आने दीजिये तब ही वह विकास दिखाएगा। रंग की तख्तियां यह साधन बच्चे में एकाग्रता पैदा करता है। रंगों के ज्ञान से रंग बताने लगता है। आकाश को देखकर यदि बिना बतलाए बच्चा एकाएक चिल्ला उठे 'नीला रंग' तो कहना चाहिए कि यह बच्चे की खोज (Discovery) है। क्योंकि यह उसकी स्वयं की खोज है। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधनों से बच्चे में अनुभव की चेतना पैदा होती है। जिससे आगे चलकर वह वातावरण में अनुभवों को खोज सकता है। गुणों को पहचान सकता है। इससे उसे आनन्द मिलता है। वातावरण में रुचि पैदा होती है। चेतना का विकास होता है।

2. मन का प्रशिक्षण होता है :-

जब हम किसी को देख रहे होते हैं तो मन देख रहा होता है। सुनते हैं तो मन सुन रहा है। ज्ञानेंद्रियां मन के सहयोग के बिना कार्य नहीं कर सकती। जब ये कार्य कर रही होती हैं तो मन कार्य कर रहा है। आंख आंख से रूप नहीं देखती मन से रूप देखती हैं। ज्ञानेंद्रिया इसीलिए देख सुन पाती हैं क्योंकि इनके साथ मन है। मन को रमाने और स्थिर करने का अर्थ है ज्ञानेंद्रियों को स्थिर करना। डॉ. मोंटेसरी ने कहा कि बच्चे का मन तो रहस्य है। जैसे राजाओं के अन्तःपुर में किसी का प्रवेश निषिद्ध होता है वैसे ही बालक के मन में प्रवेश पाना कठिन है। मन अगम्य है। डॉ. मोंटेसरी ने इसके लिए केन्द्र और परिधि का सिद्धान्त बतलाया है। वृत में केन्द्र होता है और परिधि होती है। मन केन्द्र के समान है और ज्ञानेंद्रियाँ परिधि के समान हैं। उन्होंने कहा

जो कुछ मन को पहुंचाना चाहते हो ज्ञानेंद्रियों को पहुंचाओं। मन तक स्वतः ही पहुंच जायेगा। शिक्षक का कार्य ज्ञानेंद्रियों को साधन देना है। ज्ञानेंद्रियों को खूब खिलाओ, पिलाओ यानि प्रशिक्षित करो, मन की चिंता करने की आवश्यकता नहीं। ज्ञानेंद्रियां क्रियाशील होती हैं तो मन को भी क्रियाशील होना पड़ता है। इस तरह ज्ञानेंद्रियों के प्रशिक्षित होने से मन का शिक्षण होता है। मन के निम्न कार्य होते हैं :-

1. ध्यान देना मन का पहला कार्य है। (To Pay Attention is the First work of Mind) काम आंखों का है कि देखकर रंगीन डंडों की सीढ़ी बनाये परन्तु ध्यान मन देता है।

2. ध्यान के बाद निरीक्षण करना यानि उपयुक्त डंडों को ढूंढा जाये। निरीक्षण करना यानि (To observe)

3. ढूंढने के लिए तुलना करना। (To Compare)

4. निश्चय या चुनाव करना। (To Make disision)

5. मूल्यांकन करना। जिसका चुनाव किया वह सही है या नहीं।

6. संशोधन करना (Modification) या परिवर्तन करना यानि चुनाव सही नहीं तो संशोधन करना।

इन कार्यो द्वारा मन प्रशिक्षित हो जाता है। ये मन के कार्य हैं। आंखों का काम सिर्फ देखना है। शक्ति के विकास का अर्थ है क्रिया करना। शक्ति का विकास निरन्तर, लगातार क्रिया करने से होता है। अपनी शक्ति का विकास स्वयं करना होता है। दूसरों द्वारा नहीं। शक्ति का विकास अभ्यास से, उपयोग से होता है इसलिए कार्य निरन्तर कार्य, बस कार्य करना है। मन भी इन सबका अभ्यास करता है। निरन्तर अभ्यास करने से मन की शक्ति बढ़ती है। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से मन का प्रशिक्षण है। ज्ञानेंद्रियां काम कर रही होती हैं तो मन ध्यान कर रहा होता है, निरीक्षण कर रहा होता है और मन

की योग्यता विकसित हो रही होती है।

उदाहरण :- एक सुथार एक बालघर की खिड़की में कांच लगाने आया। बच्चे ने कहा कांच छोटा है। सुथार ने घूर कर देखा कि यह क्या समझता है। खिड़की में कांच लगाकर देखा वास्तव में वह छोटा था। सुथार ने तो खिड़की में लगाकर ही निर्णय किया परन्तु बच्चे ने ऐसे ही बता दिया क्योंकि बच्चे के मन का विकास हो चुका था इस दिशा में। अन्य संस्थाओं में बच्चों की ओर इतना ध्यान नहीं दिया जाता। बालघर का बच्चा उनसे अधिक प्रशिक्षित होता है। वह अपना सामान यथास्थान रख देता है। दूसरे साथियों से सामान के लिए छीना झपटी नहीं करता। बच्चों की ओर ध्यान देना पड़ता है। यह साधन है जिसमें टुकडों को यथास्थान रखना पड़ता है। गलत रखे जायेंगे तो साधन स्वयं गलती के लिए सावधान कर देता है। बच्चे को पूरे ध्यान से इन्हें देखकर, निरीक्षण करके रखना पड़ता है। इसलिए साधन की क्रिया बच्चे को ध्यान देने के लिए विवश कर देती है। साधन से ही भूल सुधार से बच्चे में बौद्धिक सतर्कता आती है। ध्यान, निरीक्षण, निश्चय, मूल्यांकन सभी करना पड़ता है। इन साधनों से आदत डालकर मन का प्रशिक्षण किया जाता है। बचपन में ही आदत डाल देनी चाहिए। बचपन में पड़ी आदत बुद्धि की आदत बन जायेगी फिर उसका ध्यान खींचने की आवश्यकता नहीं। यदि बौद्धिक आदत डालनी है तो ज्ञानेंद्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए। बारम्बार करने से आदत बनती है। मन का प्रशिक्षण ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से, ज्ञानेंद्रियों को प्रशिक्षित करके ही होता है।

3. मानसिक आनन्द मिलता है :-

आनन्द दो प्रकार का होता है। भौतिक आनन्द और मानसिक आनन्द। यदि भौतिक आनन्द की ओर अधिक प्रकृति हो तो मनुष्य का पतन हो जाता है। आज समाज में फैले भ्रष्टाचार का कारण भौतिक आनन्द

की ओर प्रवृति ही है। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधन भौतिक आनन्द से मानसिक आनन्द की ओर ले जाते हैं। मन का आनन्द है ज्ञान। ज्ञान की दिशा में रुचि से मानसिक आनन्द के क्षेत्र में हो जाते हैं। ज्ञान के विना रुचि पैदा नहीं होती। रुचि के विना ज्ञान नहीं प्राप्त होता। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण से ज्ञान में रुचि पैदा हो जाती है। भौतिक आनन्द की वस्तु मानसिक आनन्द की वस्तु वन जाती है जैसे वच्चे को गोल, तिकोन, चौरस विस्कुट दिए जाएं तो वह खाने की बात भूल कर उसमें ज्योमैट्री की शक्लें देखने लगता है। मानसिक आनन्द से चरित्र वनता है। भौतिक आनन्द से चरित्र गिरता है। संसार आनन्द से भरपूर है परन्तु हमारी ज्ञानेंद्रियां इसे पकड़ नहीं पातीं क्योंकि स्थूल संसार में विचरन करती हैं। हम सूक्ष्म अनुभवों का आनन्द लेने से वंचित रहते हैं। सूक्ष्म अनुभवों में प्रवेश ज्ञानेंद्रियां कराती हैं। जितना उनका विकास हुआ उतना ही सूक्ष्म आनन्द के क्षेत्र का विकास होता है। नैतिक प्रशिक्षण का साधन भी ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण में है।

4. ज्ञानेंद्रिय विकारों की पहचान कराते हैं :-

वच्चे में कभी-कभी ज्ञानेंद्रिय दोष होता है। जैसे आंख, कान में जन्मजात विकार होता है। इन दोनों ज्ञानेंद्रियों को वौद्धिक ज्ञानेंद्रियां कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि इनके द्वारा प्राप्त अनुभव बुद्धि के विकास में सहायक होते हैं। नाक और जीभ जिनसे स्वाद या गंध के अनुभव होते हैं यह ज्ञानेंद्रियां बुद्धि के विकास में सहायक न होकर शरीर के विकास व स्वास्थ्य में सहायक होती हैं। गंध, भोजन प्राप्ति में सहायक होती है तो जीभ रसास्वादन करती है। बौद्धिक ज्ञानेंद्रियों में कोई दोष है तो वच्चे के बौद्धिक विकास में कमी रह जायेगी। यदि कोई प्रौढ़ और उसे कम सुनाई देता है तो वह ऊंचा बोलने के लिए कह देगा परन्तु 2 वर्ष के वालक को ज्ञान नहीं कि उसे कम सुनाई देता है। परिणाम

होगा कि वह सुनेगा कम। कम सुनने से भाषा का प्रभाव कम हो जायेगा। बुद्धि का विकास भी उसी मात्रा में कम हो जायेगा। जैसे जन्मजात बहरे होते हैं। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधन बच्चे की ज्ञानेंद्रिय विकारों की पहचान कराते हैं। कैसे? ज्ञानेंद्रिय साधनों में आवाज की डिबिया होती हैं। इन डिबियों में एक ही आवाज की दो डिबियां होती हैं। इस तरह अलग-अलग आवाज वाले जोड़े होते हैं। बच्चा उन डिबियों को बजाकर एक से ही आवाज की डिबियों के जोड़े बनाता है यानि उसे पेयरिंग एक्टिविटी करनी पड़ती है। प्रारम्भ में भूल होना स्वाभाविक है परन्तु कई माह इस साधन पर कार्य करने के बाद भी आवाज समझकर जोड़े न बनाये तो समझना चाहिए कानों में दोष है। उसमें चैतन्य पैदा नहीं करता है तो ज्ञानेंद्रियों में दोष है। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधन ज्ञानेंद्रियों के दोषों की पकड़ करा देते हैं। यह क्रिया सिद्धान्त के अन्तर्गत है कि क्रिया हाथों से होनी चाहिए। एक ही आवाज की सारी डिबियां हों तो ज्ञानेंद्रियों का विकार पकड़ में नहीं आता इसीलिए उसी की आवाज की जब दूसरी डिब्बी ढूंढ़नी पड़ती है तो ज्ञानेंद्रियों का विकार पकड़ में आ जाता है। क्योंकि सही डिबिया तभी ढूंढ पायेगा जब सही आवाज सुनेगा। आवाज सही तभी सुन सकेगा जब सुनने की ज्ञानेंद्रियां ठीक काम कर रही हैं।

मन की पकड़ भी ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधनों से होती है। हम वहीं होते हैं जहां हमारा मन होता है। यदि ज्ञानेंद्रियों के दोष का पता बाल्यावस्था में हो जाये तो सुधार सरलता से हो सकता है। क्योंकि बच्चा अभी कच्चे धागे के समान होता है, कोमल होता है, विकार जल्दी से पकड़ में आ सकता है क्योंकि बच्चा छोटा होता है तो विकार भी छोटा होता है। ज्यों-ज्यों प्रौढ़ होते हैं दोष भी प्रौढ़ होते जाते हैं। बचपन में ही सुधार सरलता से किया जा सकता है। यदि बाल्यावस्था बीत जाने पर विकार का पता चले तो निर्माण काल बीत चुका होता है क्योंकि

बच्चे का निर्माणकाल बाल्यावस्था ही है। इसी काल में बच्चे का निर्माण कर सकते हैं। ज्ञानेंद्रिय प्रशिक्षण के साधनों में सबसे व्यावहारिक लाभ यह है कि ज्ञानेंद्रियों के दोष साधनों पर कार्य करते पकड़ में आ जाते हैं। हिन्दी अंग्रेजी भाषा में लाखों शब्द हैं और हिन्दी वर्णमाला में 52 अक्षर होते हैं। दोनों भाषाओं के लाखों शब्द इन 26-52 अक्षरों के ज्ञान से पढ़ सकते हैं। भाषा असीमित है और अक्षर सीमित हैं। वातावरण भाषा के शब्दों के समान है असीमित, अनन्त। इस वातावरण को पढ़ने के लिए पांच ही शब्द हैं। शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध। ज्ञान प्राप्त करने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है। डॉ. मोंटेसरी ने कहा कि ज्ञानेंद्रिय विकास या प्रशिक्षण के साधन विश्व (युनिवर्स) नहीं है। विश्व को समझने की कुंजी है। इसलिए बच्चा इन पर क्रिया करेगा तो विश्व को समझ लेगा।

❑

बच्चों से बातचीत का विज्ञान
प्रकाशवती अलिन्द

बातचीत और प्रश्नोत्तर :-

दो से सात साल के बच्चे जितना बातचीत द्वारा सीख सकते हैं उतना पढ़ाई लिखाई द्वारा नहीं। पढ़ाई लिखाई तो केवल साधन है। बालक बातचीत द्वारा कम समय में अपने अधिक भाव दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और दूसरों के भाव जान सकते हैं। बातचीत द्वारा उनके मन का अधिक विकास होता है। इसलिए बालघर में शिक्षा का आधार बातचीत होना चाहिए।

बातचीत की दृष्टि से बच्चों के तीन ग्रुप बनते हैं: (1) 2 वर्ष से 31/2 वर्ष तक (2) 31/2 वर्ष से 5 वर्ष तक (3) 5 वर्ष से 7 वर्ष तक।

2 से 3 1/2 वर्ष के बालक के साथ दैनिक जीवन के बारे में बातचीत होनी चाहिए जैसेः- तुमने सवेरे क्या खाया? कल शाम को तुम कहां गये थे आदि? बच्चों को पिक्चर्स दिखाकर उनके बारे में भी बताया जाना चाहिए। इसका मूल उद्देश्य है कि बच्चे जीवों के बारे में, वस्तुओं के बारे में सोचे विचारे और हमें उत्तर दे। इस ग्रुप के बच्चों के साथ जो बातचीत होती है वह सरल होती है।

31/2 से 5 वर्ष के बच्चों के साथ जो बातचीत होगी वह जरा विस्तार पूर्वक होगी। बच्चे सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहनते हैं। बच्चों को उनके कपड़ों के बारे में सवाल पूछने चाहिए। जैसेः- तुम ये ड्रैस कहां से लाये? बच्चे झट उत्तर देंगे कि डैडी बाजार से लाये या मम्मी ने घर बनाई। फिर उनसे पूछ सकते हैं कि यह ड्रैस किस चीज की बनी है। बच्चे कहेंगे कि सूती कपड़े की। फिर सूती कपड़े के बारे में कई प्रश्न पूछ सकते हैं। कपड़ा कहां बनता है, किस चीज का बनता है? रूई कहां से आती

है? खेती कौन करता है? इसी तरह हम खेती और किसान के बारे में बच्चों को ज्ञान दे सकते हैं। यदि बच्चे उत्तर न दे सकें तो शिक्षक को सवयं उत्तर बताना चाहिए। जाडे के दिनों में बच्चे स्वैटर, ऊनी कपड़े आदि पहन कर आते हैं। इन कपड़ों के विषय में भी बच्चों को इसी तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं। यदि बच्चे जवाब न दें तो उन्हें बताना चाहिए कि ऊन भेड़ों से प्राप्त होती है। सर्दी के दिनों में भेड़ों के शरीर पर खूब बाल उगते हैं उन्हें ही ऊन कहते हैं। इस ऊन को काटकर, साफ करके कारखानों में भेजा जाता है जहां इनका कपड़ा बनता है। उन्हें यह भी बता सकते हैं कि आस्ट्रेलिया की ऊन संसार में सबसे बढ़िया होती है। वहां एक-एक फार्म में लाखों भेड़ें पालते हैं और बिजली की मशीनों से उनकी ऊन काटते हैं।

इस तरह सूती और ऊनी कपड़ों के बारे में बच्चों के साथ बातचीत हो सकती है। बच्चे इस विषय के बारे में कुछ और ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। जैसे रूई वनस्पति से मिलती है। इनकी खेती किसान करते हैं। इसलिए किसानों का अपने ऊपर बहुत भारी एहसान है। ऊन-भेड़ों से प्राप्त होती है। इस प्रकार संसार में हर प्राणी, चीज, पेड़-पौधों का आपस में आदान प्रदान होता रहता है।

त्यौंहारों के विषय में प्रश्न :-

बच्चों के साथ त्यौंहारों के विषय में प्रश्न हो सकते हैं। भारत त्यौंहारों का देश है। आये दिन कोई न कोई त्यौंहार आता है। ये त्यौंहार क्यों मनाये जाते हैं? कैसे मनाये जाते हैं? इस विषय पर बताना चाहिए। हर एक त्यौंहार का अपना महत्व है। जैसे दीपावली के दिन श्री रामचन्द्रजी रावण को मार कर अयोध्या लौटे थे। इसी कारण अयोध्यावासियों ने इस खुशी में घरों पर दीये जलाये और खूब खुशी मनाई। रावण एक दुष्ट और घमंडी राजा था। श्री रामचन्द्रजी एक आदर्श राजा थे। उन्होंने

बेटा, भाई, पति और राजा के रूप में आदर्श पेश किया। इसलिए रावण वध का अर्थ बुराईयों पर अच्छाई की विजय है। इसी तरह हम बच्चों को दशहरे के दिन दुर्गापूजा क्यों होती है यह बता सकते हैं। उनका ज्ञान बढ़ा सकते हैं।

महापुरुषों के जन्म दिवस पर उनके जीवन के बारे में, उनके अच्छे कार्यो के बारे में बताकर बच्चों का ज्ञान बढ़ा सकते हैं। कई बार ऐतिहासिक कहानियां झूठी भी हो सकती हैं किन्तु इन कहानियों के द्वारा हम बच्चों के सामने कथा के रूप में नैतिक भाव रख सकते हैं जिन्हें बच्चे ग्रहण कर लेंगे।

प्रकृति के बारे में भी हम बच्चों से सवाल पूछ सकते हैं। जैसेः आँधी क्यों आती है? वर्षा कैसे आती है आदि। मई जून के महीने में तेज धूप होती है। गर्मी अधिक पड़ती है। इस कारण हवा गर्म हो जाती है। गर्म हवा ऊपर उठती है। उस हवा की जगह लेने के लिए दूसरी हवा बड़ी तेजी से आती है। इस प्रकार आँधी आती है हम बच्चों को बतायेंगे। इसी प्रकार बारिश के बारे में प्रयोग करके दिखा सकते हैं। एक केतली में पानी उबाल लें। पानी वाष्प के रूप में ऊपर चढ़ेगा। वहां एक थाली रख कर उसमें एक बर्फ का टुकड़ा रख देंगे। वाष्प थाली से टकरा कर ठंड के कारण पानी में परिवर्तित हो जायेगी और बूंदों के रूप में टपकेगी। यही बारिश है। ऐसे ही हम बच्चों को बता सकते हैं कि सूर्य के ताप से समुद्र का पानी भाप के रूप में बदल जाता है और ऊपर की ओर उठता है। ऊपर ठंडक पाकर वापस पानी में बदल जाता है और बारिश के रूप में धरती पर बरसता है। इस प्रकार हम बच्चों के सामने इतिहास, भूगोल की बातें कर सकते हैं।

दैनिक जीवन के विषय में हमारे जितने भी अनुभव हैं उनकी चर्चा हमें बच्चों के साथ करनी चाहिए। अगर बच्चे प्रश्नों का जवाब न दे सकें तो हमें जवाब देना चाहिए।

वैज्ञानिक आधार बातचीत का :-

पांच से सात साल के बच्चों के साथ बातचीत वैज्ञानिक आधार पर भी कर सकते हैं। उनको वैज्ञानिक शब्द देने चाहिए। जैसेः-फूल, पेड, पौधा, फल आदि के चित्र दिखाकर बच्चों से पूछ सकते हैं कि पेड़ पर फूल का क्या कार्य है? जड़ें किस प्रकार पेड़ की सहायता करती हैं? इत्यादि जड़ें जमीन के अन्दर पानी की तलाश में जाती हैं और पानी के साथ मिट्टी में घुले हुए लवण व खाद्य लेती हैं। तना पेड़ को सीधा रखता है और उसकी रक्षा करता है। पेड को ऊपर उठाता है। पेड़ पत्तों द्वारा अपना भोजन व रोशनी लेते हैं। पत्ते, ओस और धूप लेते हैं जिनकी पेड़ को आवश्यकता है। पेड़ पत्तों द्वारा अपना भोजन व रोशनी लेते हैं। पत्ते ओस और धूप लेते हैं जिनकी पेड़ को आवश्यकता है। पत्तों के अन्दर जो हरे रंग का क्लारोफिल है वह भोजन हज्म करता है। फूलों में पौधे का बीज होता है जिसके द्वारा जाति की रक्षा होती है। जब फूल सूख जाते हैं तो उनकी जगह फल आते हैं। जानवर और इंसान फल खाकर उनके बीज फेंक देते हैं। इन बीजों के फिर से पौधे उग आते हैं और जाति बनी रहती है। पेड़, पौधे, फल, फूल बनाकर इन्सान को लालच देते हैं और जानवर, कीड़े, मकोड़े आदि उनको अपनी जाति जीवित रखने में सहायता देते हैं। इसी प्रकार अन्य प्राणी जैसे मेंढ़क, गाय, घोड़ा, ऊंट आदि के बारे में भी बातचीत के द्वारा हम बच्चों को इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों की थोड़ी सी जानकारी दे सकते हैं। इस आयु में बालक को पढ़ाई लिखाई की इतनी जरुरत नहीं होती जितनी बातचीत की होती है। पढ़ाई केवल साधन है। ज्ञान देने का सबसे उत्तम तरीका बातचीत और प्रश्नोत्तर ही हैं।

कहानियों के द्वारा ज्ञान भी बढ़ाया जा सकता है। कहानी के लिहाज से ऊपर बच्चों के तीन ग्रुप्स होने चाहिए। शिक्षक को कहानी सोच विचार कर ही देनी चाहिए। बच्चों के सामने चोर, डाकू, भूत, प्रेत

आदि की डरावनी कहानियां नहीं देनी चाहिए। इससे बच्चों के मन में डर बैठ जाता है। इसी प्रकार इस आयु के बच्चों को Fairy Tales यानि परियों की मनगढ़त कहानियां भी नहीं देनी चाहिए। ऐसी कहानियों में जानवरों जन्तुओं को व्यक्ति का रूप दिया जाता है और उनका असली रूप बच्चों के सामने नहीं आता और उन्हें उनके बारे में असली जानकारी प्राप्त नहीं होती। जानवरों का असली स्वभाव बच्चों के सामने नहीं आता। बच्चों को बताना यह चाहिए कि ब्रह्मांडी योजना के अनुसार ये जीव जन्तु किस प्रकार कार्य करते हैं और हमारी क्या सेवा करते हैं। इस तरह वे हमारे मित्र हैं न कि परियों की कहानी के पात्र के रूप में मित्र या दुश्मन हैं। प्रायः कहानियों में जानवर की चालाकी की बातें मानव द्वारा बनाई हुई होती हैं। उदाहरण के लिए पंचतंत्र की कहानियां। इनके जानवर पात्र नीति के प्रतीक हैं। जानवरों का असली रूप या स्वभाव नहीं मिलता। ऐसी कहानियां 7 वर्ष से ऊपर की आयु के बालकों को दे सकते हैं।

❑

बच्चों को कहानियाँ किस आयु में कैसी देनी चाहिए : प्रकाशवती अलिंद

5 वर्ष की आयु तक बालक छोटा होता है। बालक को कहानियां उसकी आयु का ज्ञान रखकर ही देनी चाहिए। कहानियां कई प्रकार की होती हैं जैसे भूत प्रेतों की कहानियां, जानवरों की कहानियां, परियों की कहानियां और देवी देवताओं की कहानियां आदि। भूत प्रेतों में दो प्रकार के पात्र होते हैं अच्छे और बुरे । इन पात्रों में एक बात कॉमन होती है वह यह कि दोनों शक्तिशाली होते हैं। इनमें इन्सान से भी अधिक शक्ति बताई जाती है। इनके विषय में कई चमत्कारी बातें होती हैं। कहानी का नायक देवी देवता या अच्छी परियां होती हैं। भूत प्रेतों का बालक के मन में डर बैठ जाता है यह डर ऐसे प्राणियों का होता है जिनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं होता। देवी देवता की कहानियों से बालक सुरक्षा महसूस करता है परन्तु इनसे बालक में अंधविश्वास पैदा हो जाता है। कुछ करने की बजाय भाग्य पर भरोसा करने लगता है। परन्तु विश्वास के बावजूद इन देवी देवताओं से सहायता नहीं मिलती। पुकारने पर इनमें से कोई शक्ति नहीं आती और परिणाम यह होता है कि आत्मविश्वास समाप्त होने लगता है। इन कहानियों से सिर्फ डर या अंधविश्वास पैदा होता है। कहानियों की परियां या राक्षस मानव निर्मित कल्पना से गढ़े जाते हैं। इन परियों राक्षसों की शक्ल सूरत इन्सान जैसी बताई जाती हैं परन्तु गुण इनमें विशेष वर्णित होते हैं। इस आयु में बालक का घर के बड़े लोगों या शिक्षक पर अटूट विश्वास होता है। ऐसी कहानियों से बालक में या तो अंधविश्वास पैदा हो जायेगा या वह काल्पनिक भयानक प्राणियों से डरने लग जायेगा। इसलिए बच्चों के सामने ऐसी कहानियां नहीं आनी चाहिए जो भ्रम, भय या अंधविश्वास पैदा करें। बड़ा होने पर यदि बच्चे ऐसी कहानियां पढ़ें तो बताया जा सकता है कि ये सब काल्पनिक

पात्र हैं और मानव के गुणों को ही इनमें बताया गया है। बड़े बच्चे जिनमें तर्कशक्ति (Resa Soning Power) आ गई तो उन्हें ऐसी कहानियां सुना सकते हैं या पढ़ने को दे सकते हैं। इस प्रकार की कहानी समझाकर ही बड़ी आयु में देनी चाहिए।

पुराणों की कहानियां सच्ची कहानियां नहीं हैं। महाभारत का अर्जुन नर का प्रतीक, कृष्ण आत्मा का प्रतीक, पांडव अच्छाई के प्रतीक और कौरव बुराई के प्रतीक दर्शाये गये हैं। ये सभी भिन्न-भिन्न गुणों के प्रतीक हैं। यही बात कहानियों में होती है। मूल बात यह है कि कहानी के पीछे सही मकसद क्या है यह समझना आवश्यक है। ये कहानियां साहित्य हैं और साहित्य की दृष्टि से पढ़नी चाहिए। यह सत्य है कि ये ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। यदि बच्चे ये कहानियां पढ़े या सुनें तो इससे पहले उनका मन तैयार करना चाहिए ताकि वे इनकी गूढ़ता समझ सकें। छोटे बच्चों को वास्तविक कहानियां सुनानी चाहिए। वास्तविकता का मतलब यह कि कहानी का नायक या कहानी की घटनाएं वास्तविक अनुभवों पर आधारित हों। बच्चे को ही कहानी का नायक बनाया जाये। बच्चे इस नायक के साथ स्वयं को (Identify) कर लेते हैं। कहानियों में साहस, दया, दान, भलाई की घटनाओं का समावेश होना चाहिए। कहानी से बालक यह महसूस करे कि जगत में जितने प्राणी हैं वह उसके दोस्त हैं नुकसान पहुंचाने वाले नहीं। शेर, चीते जैसे भयानक प्राणी की कहानी भी ऐसी हो जिसमें यह बताया जाय कि शेरनी अपने बच्चों को कैसे पालती या प्यार करती है। शेर कैसे सुरक्षा करता है ताकि बालक के मन में अच्छाई का चित्र ही उभरे बुराई का नहीं। ऐसी कहानियां नहीं होनी चाहिए जो बाद में जाकर यह छाप छोड़ें कि ये सब झूठ था।

काल्पनिक कहानियां 10-12 वर्ष के बालक को मिलनी चाहिए। फैन्टेसी पर आधारित कहानियां बालक की सहायता नहीं करती।

कहानियां 3 प्रकार की हो सकती हैं :

1. **वर्णात्मक कहानियां :-** ये कहानियां वीरता, सच्चाई आदि की हो सकती है।
2. **भौगोलिक कहानियां :-** यह भिन्न-भिन्न देशों के रहन-सहन, रीति-रिवाजों, खान-पान के विषय में हो सकती हैं। इन कहानियों से बच्चों को भिन्न-भिन्न देशों के रहन-सहन का ज्ञान मिलता है। बच्चों पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।
3. **वैज्ञानिक कहानियां :-** इन कहानयों को देने से पहले कुछ वैज्ञानिक शब्दों का ज्ञान देना आवश्यक है।

❑

अन्तःयात्रा

(पद्य)

श्रीमती प्रकाशवती जी ने कतिपय डायरियों में कुछ अपनी और कुछ अन्य प्रतिष्ठित कवियों और शायरों की काव्य पंक्तियाँ बड़े यत्न से संजोकर लिपिबद्ध की थी-यद्यपि यह अधिक स्पष्ट नहीं हो पाता कि उनमें उनकी अपनी कितनी पंक्तियाँ हैं और कितनी अन्य लब्ध-प्रतिष्ठ रचनाकारों की हैं, पर उन्हें हम उसी रूप में यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

कुछ अपने कुछ पराये

पी. अलिन्द

जिन्दगी के हर ज़हर को,

हंस-हंस के पिया है हमने।

जल के दिल ख़ाक हुआ,

मगर जीने का अन्दाज़ दिया है हमने॥

औरों को जलाने की तमन्ना में,

हम खुद ही मिट गये।

यह कैसी मजबूरी है कि,

अपनी ही हसरतों के जनाज़े उठ गये॥

अब जो थक चुके हैं

इस राह पर चलते-चलते।

ज़िन्दगी की शमां

बुझने को है जलते-जलते॥

हर घड़ी, हर पल, इन्तज़ार है,

मौत की उस दस्तक का।

जो दिलायेगी निजात हमें।

आख़िर हर दहशत से॥

या खुदा अब तो और,

जिया नहीं जाता,

जी रहे हैं फ़कत इसलिये

कि मरा नहीं जाता।

हमने खुद को देखा है

किश्त दर किश्त मरते

और यह सिलसिला

मुसल्सल जारी है।

छोड़ कर चले जायेगें

किसी दिन यह जहां तन्हा

चाहे कोई लाख पुकारे,

फिर कभी लौट के आयेंगे नहीं हम॥

ज़िन्दगी के हर मोड़ पर

पुकारा है किसी ने अक्सर हमको,

जब भी देखा मुड़ कर

तो वह अपना ही साया निकला।

हर दस्तक, हर आहट पर

चौंक उठते हैं कि वो आये हैं

हम भी कितने नादां हैं

भूल जाते हैं कि वो न आने की कसम खाये हैं।

मेरे ग़म ग़र आपको मिले होते

तो आप होश खो देते।

हम तो मुस्कुराते हैं

मगर आप रो दिये होते।

हमने तो ज़र्रे ज़र्रे को

मुहब्बत से भर दिया

वदले में मिली नफ़रत

तो यह उनकी इनायत है।

रोना आता है तो

रूसवाई के डर से मुस्कुरा देते हैं

देखने वाले मेरी इस बेबसी

को भी अदा कहते हैं।

जिनकी खातिर दुनिया छोड़ी

वह हमको ही छोड़ गये

कैसे कैसे लोग भी जग में

बेगाने हो जाते हैं।

तोड़ लेंगे हर इक से रिश्ता

तोड़ देने की नौबत तो आये,

हम कयामत के खुद मुंतज़र हैं,

पर किसी दिन कयामत तो आये।

एक तहजीब है दोस्ती की

एक मैयार है दुश्मनी का

दोस्तों ने मुरव्वत न सीखी

दुश्मनों को अदावत तो आये।

एक विश्वास था
जो मेरे पास था
ज़िन्दगी के आखिरी वक्त में
उस को भी तुम ने तोड़ा
चलो अच्छा ही हुआ
जो कहने के लिए कुछ नहीं छोड़ा।

***

दुनिया तेरे वजूद को करती रही तलाश
हमने तेरे ख्याल को सजदा बना लिया।
कहने को तो दिल के कई गिले हैं,
हम दर्द के मारों के हजारों ही सिले हैं।
इजहार भी मुश्किल है, चुप रह भी नहीं सकते
मजबूर हैं हम दिल से, कुछ कह भी नहीं सकते।

***

ये दरो, दीवार, ये ख़ामोश मीनारें
वीरानियों के साथी, जीने के सहारे
बन चुके हैं मेरी ज़िन्दगी के धारे।
मैं रोयी तो ज़र्रा ज़र्रा इनका रोया है,
मेरी हंसी में भी खुद को समोया है।
तन्हाइयों में ये ही तो मुझसे बतियाते थे
सुख के लम्हें, दुःख की घड़ियां मेरे साथ बिताते थे
मेरी ज़िन्दगी के राजदार हैं ये,
मेरी हर खुशी, ग़म के गुनहगार हैं ये
क्योंकि मेरे, सिर्फ मेरे लम्हें को जिया है इन्होंने
मेरे एहसासों को अपने कांधे पे ढोया है इन्होंने।

मगर न जाने अब ये सभी, क्यों?
रूठे रूठे से नज़र आते हैं।
रोती हूँ तो ख़ामोश रहे हैं ये,
भूले से मुस्करा दी तो आँखें झुका लेते हैं ये
मेरी बेवफ़ाई से शायद ख़फ़ा हैं ये,
मेहमाने चन्द रोज़ हूँ शायद वाक़िफ़ हैं ये।
वक्त की रफ़्तार थमने तो दे ऐ दिल
माज़ी और मुस्तकबिल को मिलने तो दे ऐ दिल
अपने पराये की दीवार टूट ती जायेगी।
ज़िन्दगी न सही मौत ही रंग लायेगी

***

यह तो होना ही था
आज नहीं, कल
नहीं तो परसों
टूटना ही था, तुम्हारे हमारे रिश्तों को
टूट गये।
घुन लगी, रंगीन काठ की गुड़िया सरीखा
हो गया था व्यवहार तुम्हारा
चमकीला पर खोखला भीतर से
मैंने तो बस छुआ भर था
कि टूट गया।
रिश्तों की पवित्रता व सच्चाई की मांग
तीखी होती है दोस्त
जिसे शब्द सहेज नहीं पाते
तो चिटख जाते हैं

मेरी कल्पनाओं के महल को।
ढहना था, ढह गये,
इतने बेचैन क्यों होते हो?
भूल गये
इन्हीं महलों को कभी तुमने बनाया था
और आज मैंने तोड़ दिया
अधिकार है यह मेरा
जैसा कि तुम्हारा था।
ऐ, दोस्त सार्थकता कल्पना के महलों की
दह जाने में है।
यह सत्य है मैंने जाना है।
तुम भी जान लो।

***

तुम्हें अपने दिल से कैसे भुला दूँ,
 तेरी याद ही तो मेरी ज़िन्दगी है
हर मोड़ पर याद आने वाले
 तुझे भूल जाना नहीं मेरे बस में।
बीते हुए कुछ दिन ऐसे है
 तन्हाई जिन्हें दोहराती है,
रो रो के गुजरती हैं रातें
 आँखों में सहर हो जाती है।
काश! जुबां से कह सकते
 मजबूर थे या हम भूल गये
यह राज़ कभी खुल पायेगा
 इतनी भी हमें तो आस नहीं।
दुश्मनों ने दुश्मनी की-
 दोस्तों ने दोस्ती न निभाई,
हमें दोनों ही अजीज हैं
 फिर यह आंख क्यों भर आई।

***

तमाशा देख रहे थे जो डूबने का मेरे
मेरी तलाश में निकले हैं किश्तियां ले कर

कली कली तड़प उठी है सिसकियां ले कर
ये कौन चला चमन से खामोशियां ले कर
जो रात दिन मेरे मरने की कर रहे थे दुआ
वो रो रहे हैं जनाजे पे हिचकियां ले कर
कफ़न न मेरा हटाओ ज़माना देख न ले
मैं सो गई हूँ तुम्हारी निशानियां ले कर
मैंने कब तुमसे कहा है कि तुम्हें आना होगा
प्यार बन्धन तो नहीं है कि निभाना होगा
वोह समझते हैं कि शेर कहती हूँ
अपने जख्मों से खेलती हूँ मैं।
ख़िज़ां का दौर तड़प कर गुजारने वाले
तुझे बहार में नींद आ गई तो क्या होगा?
मेरी ज़िन्दगी एक मुसलसल सफ़र है
जो मंज़िल पे पहुँचे तो मँज़िल बढ़ा दी।
संभल के हाथ बढ़ाओ ज़रा गुलों की तरफ
कि इनके साये में ख़ारों को नींद आयी है।
झुका दे सर उसी पर, आ जाये सामने जो ज़र्रा
कि जब सजदा ही करना है तो कैदे आस्तां क्यों हो।

अन्तिम दिन

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो।
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये॥

पी.अलिन्द

21.5.97

(उक्त पंक्तियों के नीचे प्रकाशवती जी के हाथों से लिखी तिथी को देखकर ऐसा लगता है जैसे उन्हें अपने जाने का पूर्वाभास हो गया था)

हम दिल की कहानी क्या कहते
कुछ कह ना सके कुछ कह भी गये
बेचैन हजारों आंसू थे
कुछ बहना सके कुछ बह भी गये·

पी. अलिन्द

हम दिल की कहानी क्या कहते
कुछ कह ना सके कुछ कह भी गये
बेचैन हजारों आंसू थे
कुछ बहना सके कुछ बह भी गये

पी. अलिन्द